

[illegible]

॥ सवईया ॥ जीरपला निज नीर करै तन धीर जमुप
रल जाजै ॥ कूरक मट निमट नही कहु आपुं को गुज
ले आप कूदी जै ॥ पंडित देखि पिछां नीचे जे गुन जानी
ये तो मन रंग रसी जै ॥ ग्यां न अंगार जरे न अरे चित या हिक
देता कीचा करी की जै ॥ १॥ उत मरी निवती तिवडी ज
नाह मुप्रीति निवहि मुली जै ॥ अंतर डार करै वती बा
छि चित्रम महार मधी जै ॥ आयसन मुष आदर दे दुक
नाक नवै ताके पाय पारी जै ॥ ग्यां न गरज सरो न सरौ
चित चाहि धरे जा कीचा करी की जै ॥ २॥ अंग अंग मिल
यले ऊवत लाय के लुं अंत न ली जै ॥ जीव निशान सु
जान मुने हउवा डे हदीयो उन को तन ली जै ॥ ज्ञान गुमा
न न मान थरो चित चाहि धरे ता कीचा करी की जै ॥ ३॥
सो लमि गार मजे पिव सौ लहुं सौ छय लहो छे हन दी जै ॥
नारी छि जमत दाही सरी तुं मणाल कनो हं म सुफुनिकी
जै ॥ रंग रंगी लीही के लि मिली अब दी लकी या कितनी
लगधी जै ॥ ज्ञान के दास परे सुकरै चित चाहि धरे जा की
चा करी की जै ॥ ४॥ आवत आवन जावन जाह कहै नही
जाह का मुक्या सुषदि सी ॥ काल तबै न किधू बिषयो लत
फारत नैन कटा रिन जै सी ॥ उठिही उठि कहै छिन मे फु
नि रूठि रहे न लहै सुधि जै सी ॥ ज्ञान रहै जे वे परवाह
तो चादि नही ता कीचा करी के सी ॥ ५॥

॥ कवित्तः ॥ जेसे निमिवासर कवलर हे पंकही मे पंकज
कहावे न उकावे ठिजि पंक है ॥ जेसे मंत्रवादी विषधर उ
गए वैगातः मंत्र ही की शक्तिः कावे विना विष उंक है
जेसे जिर्कग है चिक्क नाई न है रुषे अंगः पांजी मे कन
क जेसे द्वाई सुअ टंक है ॥ जेसे ज्ञान वत नाना नांति क
रु तिगं नु है किरीया कुं जिन माने पोते नि कलंक है ॥
॥ १ ॥ मिन ग ए अवतार वर सचाली सज मिगः ॥ कउ
वा होय पंचास को धत हां सां पय गः ॥ सगरां सकृति
न कायः असी त हां अत काशी ना ह निवै मै होय ह
से त हां बो ह लुगई ॥ सो सऊ मिलियो कहै ॥ सुवो स
कृत न मो भरो ॥ नरगार न गती जिया कहै ॥ मरे न सुध
रे जो करो ॥ ॥ २ ॥ वेदपुराण कुराण के बंध मै जीव पर
सब ही विल लावै ॥ पंडित का जी पंचम हार स वा रे र है
कोई ना जिन जावै ॥ आपस माऊ अछु फर है सव मातम
जे द मरु पन पावै ॥ एको अठि र प्रेम को पंडित आर्द
ही वे द को ने स्व गावै ॥ ॥ ३ ॥ ही सां निचोरा सी लष जी
व स ल व नै आप अल स ल जावै ॥ कान कटायां जग के
व हायां मुंडु जायां होय न गावै ॥ पांच पची स पचास
पि च्या सी को रुरा होय मुने धु पावै ॥ एको ही अठि
र पेन को पंडित आर्द ही वे द को ने स्व गावै ॥ ॥ ४ ॥ ब्रह्म
के उपर ब्रह्म चढे फि दि ब्रह्म ही आगे पया हो के थावै ॥
ब्रह्म ही वा कुर ब्रह्म व कुर ब्रह्म ही ब्रह्म ही सी स न व दे ॥
सुखे अ प रे ब्रह्म रहे क विमान द्रु ॥ ॥ ५ ॥
को ही अठि र पंडित आर्द

॥ सवईया ॥ नीरप त्यां निज नीर करै तनधी रजमुप
रल जाजे ॥ कूरक पट निपट नही कटु आपुं को गुज
ले आप कूदी जे ॥ पंडित देखि पिछां नी येजे गुन जां नी
ये तो मन रंग रमी जे ॥ ग्यां न अंग रज रै न रै चित या हिक
देता की चाकरी की जे ॥ १॥ उत मरी निप्रतीति वडी ज
नाह सुप्रीति निवहि सुली जे ॥ अंतर उर करै वती वा
खि चित्रे ममहार मधी जे ॥ आय मन मुष आदर दे दुक
नाक न वैता के पाय परी जे ॥ ग्यां न गरज सरो न सरौ
चित चादि धरे जा की चाकरी की जे ॥ २॥ अंग अंग मिल
थले अवत लाय के लुं अंत न ली जे ॥ जीव निप्रां न सु
जां न मुं नेह उवाढे हरी यो उन को तन ली जे ॥ ज्ञान गुमा
न न मां न थरो चित चादि धरे ता की चाकरी की जे ॥ ३॥
सो ल सिंगार मजे पिय सौ ल कुं सै बयल हूँ छेहन री जे ॥
नारी निज मत दारी मरी तुं मया ल करौ हं म सु फुनिकी
जे ॥ रंग रंगी ली ही के लि मिली अबढी ल की यां कित नी
लगधी जे ॥ ज्ञान के दाय परे सु करै चित चादि धरे जा की
चाकरी की जे ॥ ४॥ आवत आवन जावन जाह कहै नही
जह का सु क्या सुषदि सी ॥ कोलत वै न कि धू बिष यो लत
फारत नैन कठारिन जे सी ॥ उठि ही उठि कहै छिन मे फु
निरुठि रहे न लहे सु धि जे सी ॥ ज्ञान रही जे वे परवाह
तो चादि नही ता की चाकरी के सी ॥ ५॥

॥ कवितः ॥ जे सौ निजि वासर कवल रहै पंकी में पंकज
 कहवैन उवाकै ठिगि पंकज है ॥ जे सौ मंत्र वादी विषधर उ
 गह वै गतः मंत्र ही की शक्तिः वाकै विना विष उं कहै
 जे सौ जि कंग ह वै चि कं नाई रहै रुषे अंगः पंजी में कन
 क जे सौ द्वा ई सु अ टंक है ॥ जे सौ ज्ञान धन नाना ना ति क
 रह ति गं नु वै किरीया दुं नि न माने पाते नि कलंक है ॥
 ॥ १ ॥ मि न र लौ अवतार वर सचाली सज मि ग ॥ क उ
 वा होय पंचास को धत लो सार पथ गः ॥ सगरां सकृति
 न कायः श्री गह का सत का सी ना ह नि वै मै होय ह
 सै गह का लु गः ॥ सो स क मिलि यो कहै ॥ ह वो स
 कृ त न मो धरोः नर गार न ग ती त्रिया कहै ॥ म रौ सु ध
 रे उे क रौः ॥ २ ॥ ॥ वेद पुरा ण कुरा ण के बंध मै जीव पर
 सब ही विल लावै ॥ पंडित का जी पंच म हार स वा रे रहै
 को ई ना जिन जावै ॥ आप स मा ज्ञ अ सु क रहै स व सा त म
 जे द स द प न पावै ॥ ए को अ छि र म को पंडित आ द
 ही वै ए को ने द व गावै ॥ ए को ही सां नि चो रा सी ल व जी
 व ल व नु मै आप अ ल व ल गावै ॥ कान क रा यां ज रा के
 व ग या सुं उ उ या गे रा ध न गावै ॥ पांच पची स प वा म
 पि व्या सी को दूर ल होय मु ने द रू पावै ॥ ए को ही अ छि
 र मे म को पंडित आ द ही वै ए को ने द व गावै ॥ ॥ ॥ ब्र ल
 कै उपर ब्र ल चढे फि रि ब्र ल ही आ गे प या दो के धावै ॥
 ब्र ल ही चा कुर ब्र ल ग कुर ब्र ल ही ब्र ल कू मी य न वावै ॥ ब्र
 ल व नु आप रे ब्र ल रहै क वि आ न द्र ल के ने कु पावै ॥ ५
 को ही अ छि र मे म को पंडित आ द ही वै ए को ने द व तावै ॥ ५ ॥
 ही

॥ वेलालगन विचारवलेसुखंतवाकांलेः। जोगणिकासोचें
५३३ दिननाराजांलेः। गणकांणमापहीशूलदिन
कहेगोचरग्रहः। करिजनपत्रीजोगउपजेरावेकरहः। सोह
साचक्रतोपुगेनहीलिख्योकोसीमंमिलेः। कांणीयांग
ह्योतिथपत्रजदकहोजेतिक्कासुंमिलेः॥५॥ पठोपु
न्योकदिनकालीनहोतोहंसकलळईयागनळीरकहा
ळागीळापादयेथोः। ताखोर्तुमंजामेलपरंमधुनीतपा
पीसदीकोभरापीचरंलोद्वनलयेथोः। कहकेविगंग
तवजजेथीयोकालीनागः। काळीना
गकहांधोतिलकमुद्रादयेथोः। आयेंहरिलोकनेहका
स्योहरिपायकलुहाथीकहाहाथहुरमीकीमालालये
थोः॥७॥ जौमंनारीकीउरनिहारतौमनहोतहेताहीको
रूपाः। जौमनकारुसुंकोधकरैजबकोधमईयजान
विरूपाः। जौमनसायाहीसायारहेनित्यतौमनुबतमा
याकैरूपाः। मुंजौमनबलविचारतौमनहोतहैबलस
रूपाः॥८॥ नगनरहैपशुनित्यरूपातिसकायानगेः। अ
दिउपवनकाहारविषवरनस्मविलगेः। अदिनि
विउडेंनीरमळकळपरहैमीउकः। धरेमौनबगथा
नसदापुषरांमरहेसुकः। पावकेअंगजालेपतंगसह
मुंडितगाउरसहीः। करतुतिराजविनजावकीयनिर
धंतासकलमिछिनहीः॥९॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ कबीरजीजीराशह लिखते ॥
अबतौ जानन देखूं ममियारे ॥ ज्यो जावै लोहे ऊहं
मारे ॥ टेक ॥ ब्रजत दिन नतै बिछुरे हरि पाये ॥ नागव
उधर बैठे आये ॥ १ ॥ चरन निलागि करु ब्रजवाई ॥
प्रेम प्रीति राखूं उर आई ॥ इत मन मंदिर रहो नित चौकै ॥
कहे कबीर परो जिन थो छै ॥ २ ॥ मन के मोहन वीठला
इऊ मन लागे तो हिरे ॥ ब्रजत क दिन बिछुरे नये तेरी ओ
लु आवै मोहिरे ॥ टेक ॥ १ ॥ घटदल कवल निवासीया ॥
चऊकं फेरि मिलाय ॥ इऊकं बिचि समाधीया ॥ तहां का
लन पर ये आये ॥ २ ॥ अष्टकवल दल नीतरा ॥ तहां श्री
रंग केलिकराये ॥ सतगुरु मिले तो पाईये ॥ नही ते जन्म
अवधार्य जाये ॥ ३ ॥ कदली ऊरा मदल नीतरा ॥ जहां
दश अंगुल का नीच ॥ तहां उवाइ सखो जिले ॥ जन्म होय
नही मीचरे ॥ ४ ॥ बंकनालिके अंतरै ॥ पछिम दिसा क
बाट ॥ निजर ऊर सपी जीये ॥ नवर गुफा के घाटरे ॥
॥ ५ ॥ त्रिवेनी मंद हूवाइये ॥ सुरति मिले जौ राख्य ॥
तहां नफिरि मय जोइये ॥ सनकादिक मिलि है साथ
रे ॥ ६ ॥ गगनगर जिमय जोइये ॥ तहां दीसै तार अनंत ॥
बिजुरीच मकि धनु बर बिहै ॥ तहां नीज तहे सब संतरे ॥
॥ ७ ॥ सोउस कवल जब चैतीया ॥ तब मिलि गये श्रीव
तवारि ॥ जरा मरण नमूना जीया ॥ पुनः पिज नम नि
वारिरे ॥ ८ ॥ उरुग मित्रे पाईये ॥ जमि मरो मति को
य ॥ तहां कबीरा मिरहा ॥ सहजि समाधील ॥

चरणकवलचिंतनइय रामनामगुणगाय
ल कहकबीरसंसारही भक्तिमुक्तिफलपायरे

॥ गोबुनायकवीठलामेरोमनलागोतोहिरः बज्रतक
दिनविठरेनयेतेरीओसरआवेमोहिरः टकाशाकर्मको
टिकोउदरच्योः नेहगयैकीआसः आपहीआपनधाई
यादेवलोचनमरेप्रियासो ॥ १॥ आपापरसे मेचीनियेदी
सैश्रीबेसनानः ईहियदनहैरिनेदीयो ॥ ठाठिकपटअनि
मानो ॥ २॥ नांकतिकंचलिजोईयेः नासिरलजेनारः ॥ ३॥ रस
नारसहिविचारियेसारांगश्रीरंगधाररे ॥ ४॥ साधे
सिद्धिजैसीपाइयेः ॥ किंवाहोयनहोयः जेइठज्ञाननउप
जैः तेओदटिरहेजिनकोयो ॥ ५॥ एकजुगतिएकैमिलैकि
बाजोगकजोगः ॥ ईहइहफलपाइयेः रामनामसिधजोगरे ॥
॥ ६॥ प्रेममगतिअैसीकीजियैः मुमअमृतवरमेचंदः ॥
आपहीआपबिचारीयेतबकेनाहोयआनंदरे ॥ ७॥ तुम
जिनजोनौगीतहैः ॥ ८॥ निजबलविचारः ॥ केवल
कहिसमजईयाः ॥ आतमसाधनसाररे ॥ ९॥ ॥
अबनोहिलेचलिनैकिबीराः ॥ आपनैदेसो ॥ १०॥ ॥
निमिलिलुटीहैऊसंगआहिविदेशाः ॥ टिका ॥ ११॥ गंगतीर
मेरीपेतीवारीः ॥ जमुनातीरिहोनाः ॥ सातोविरहीमेरेऊपु
जैः पांचमोरकिसानो ॥ १२॥ कहैकबीईऊअकथकथो
कहतोकहीनजाई ॥ सहजिहैऊपजेः ॥ तरमिरहेयमाई
॥ १३॥ ॥ अबहमसहजिनिरंजनचीनाः ॥ गुरुगमिज्ञो
नविचारिपरमपदमगनमहारसनीनाः ॥ टिका ॥ १४॥ विक
सतकवलअतंतधनिगरजनः ॥ तहामननयाअनंदः ॥
जातिअरूपसकलमेदेयाः ॥ ज्योपानीमेचंदः ॥ १५॥ पर
मप्रकाशपरमपदमुंदरेः ॥ तहांकबीरकास्वामी ॥ विन
करबेनिमधरधुनिवाजतः ॥ सुनीअनूपमबानी ॥ १६॥ ॥

[illegible]

हरनहरात्रिचवनरायः॥३॥॥॥कबीरैमेनैक
नैहैजुचरायोः॥नोघरिरहेननोजनकरइःकून
वगोरीलायोः॥टेकः॥१॥जहांजहांदेखैइनुडिय
नःतहांतहांउविधायोः॥इनलरकनिहूकोप्रति
पालेःकाहेहूधरबायोः॥२॥कबीराकीनारिकहै
सुनिसासूकाहेहूव्याहकरायोः॥इतनौग्यानऊतौज
बहिरदैहमहिघरहिकतलायोः॥३॥काकीनारिपु
रुषकोकाकोःफूवोहीपरपनलायोः॥इऊसंसारइ
सोदेप्रियतुहैःकूनकहांतैंआयोः॥४॥हरिजसरचैप
चैनहीकबऊःलोकविसरायोः॥कहतकबीरसोइजन
उबरैःततमूलजिनपायोः॥५॥॥॥जेगीयानायन
मरिमरिजाईःबारजालरौबलीडोटेद्वैऔलोतीद
रराईःटेक॥१॥मगरीतजोप्रीतिपावैसुःडोडीदेऊ
लगाईःढीकोबोडिपरहडौबांधैः॥२॥जुग
जुगरहोसमाईः॥३॥बैसिपरहडीडारमुहावोःल्या
वौधतघरघरीःजेवीधीयासासरैपठवोःजोबऊरिनु
आवोफेरी॥३॥लऊरीधीयासबैऊलमोयोःतबहि
गवैसनपाईःकहैकबीरनागवपुरीकोःकिलकिल
सबैचुकाईः॥४॥॥॥मनरेजागतरहिरनाईःगाफिल
होयवस्तजिनमोवैःचौरमुसैनहीजाईःटेक॥५॥मटव
ऊजमकीनकोटरीःवस्तनावहैसोईःतालाहूंचीऊ
लफकोलागेःउघरतबारनहोईः॥२॥पंचपहरवा

सोयगमेहैः तबबस्तजांगिबालागीः जरामरन
 व्यापैऊठनाहीः गगनमंडललवलागीः ॥३॥ कर
 तविचारमनहामनउपजीः नांककुंगयानआयाः
 कहैकबीरसंसासबढूटारामरतनधनपाया ॥४॥
 ॥१०॥ ॥कबीरारंगलागारेः तातैमनकासासाना
 गारेः ॥टेक॥ १॥ कोईकहैइऊजोगीजंगमः कोईकहै
 कुठनाहीः मैतंदेव्याहिरदानीतरः सबकहीवैठु
 ममांही ॥२॥ अलषरूपगतिलषैनकोईअंजनरा
 तेलोईः एकबारजोइढकरिध्यावैः ताकुंदरसन
 होईः ॥३॥ कहतकबीरमताएकपायाः कायानग
 रमजारीः ॥तुसाहिवमैसेवगतेराः तारनतिरनमु
 नारी ॥४॥ ११॥ ॥अपनैमैरंगिआपुनपोजान्तः ॥ जिहि
 रंगिजानिताहीकरमान्तः ॥टेक॥ १॥ ॥जिहिरंगिजानिताही
 अनिअंतरिमनरंगसमानाः ॥ लोककहैकबीराबो
 राना ॥२॥ रंगनजानैमूरषलोईः जिहिरंगिरंगिर
 द्यासबकोईजिरंगकोबहुनआवैजाईः कहैक
 बीरतिहिरहोसमाईः ॥३॥ १२॥ ॥अबतैअपनैरां
 मकैरंगरंगः ॥ कामोस्तमयमांऊकरैसंगः ॥टेक॥ १॥
 संगवेमरसजलीयाकहांऊः ॥ पतिवैमुषकैसैम
 चपांऊः ॥२॥ जसअवजसकीसंकनकरौजबः
 सांईअपनैबिमुषहोउतबः ॥३॥ कहैकबीरअन
 जैरतिकरीयेः ॥ बिउकैसुषकोपिपपरहरीये ॥
 ॥४॥ १३॥ ॥नांतौजानिबोरेबैकुंठक

कोऊजानिकहतहैतजुवां॥१॥टिक॥१॥जोजनएकपरमि
तिनहीजानै॥बातनिहीबैकुंठबषानै॥२॥जबलग
हैबैकुंठकीआसा॥तबलगनहीहरिकेचरननिवासा॥
॥३॥कहेसुनेकैसेपतिअइये॥जबलगतहआप
नहीजइये॥४॥कहेकबीरइकुंकहीयेकहि॥सा
धसंगतिबैकुंठहीआहि॥५॥१॥१॥काहेकुंमाया
उषकरिजोरी॥हाथिचूनगजपांचपिठोरी॥६॥१॥
नांकोईबंधननारिसाथी॥बंधेहेतुरंगमहाधी॥७॥
मैडीमहलजसोनतळाजा॥ढाडिगयेसबत्तपति
राजा॥८॥कहेकबीररामल्योलाई॥धरीरहीमाया
कारुनहीप्राई॥९॥१॥१॥मायाकाफलबानन
पाया॥अधबरजमबिलवाहोयधमया॥१०॥१॥
लतिलकरिइकुंमायाजोरी॥चलतबेरतिनुकाजुंते
री॥११॥अनेकजतनकरिगडिगई॥अवरनसांच
अवरनषई॥१२॥कहेकबीरसबफोकटफोका॥१३॥
ठीमायाचलेलोका॥१४॥१॥१॥अवरहीमरतसोक
क्याकीजै॥तौकीजेजोआपनजीजै॥१५॥१॥
तहस्तीजाकेलषकेकांण॥तोउरुतगडीतजेपिरान
॥१६॥गरेषिधरिवारामगुनगावै॥कहेकबीरसोराम
हिनावै॥१७॥१॥१॥नाइरेअसाधरक्याकीजै॥१८॥
धौकरिकरिजनमगमायो॥रामविनांकोजै॥१९॥
॥२०॥१॥१॥बांनिबूटीवाजबिजंतरि॥दोढाईनां
कीया॥मुषकारनिउयेबहुतकमाया॥बिषअंमृत

करि पीयाः ॥ १॥ अं नमो नमो सुख संज मिश्रताः ॥ मम
 तासूं मन लायोः ॥ पुतर कलितर को सुख जोयोः ॥ ग
 फिले जनम गमायोः ॥ ३॥ राजा रां नां नूपति नू
 लेः दुष करि माया जोरीः ॥ कहै कबी विनां जग
 जीवं न नर कलष कोरी ॥ ४॥ ॥ १॥ ॥ रेया मै क
 मेरा कजा तेराः ॥ लाजन मरत कहत धर मेराः ॥ टिकः ॥
 ॥ १॥ चार पहर निशि नेराः जै सै तरवर पंख बंसे
 राः ॥ २॥ जै सै बनीये हाट पसाराः सब जग का
 सो सिर जंन हाराः ॥ ३॥ उवै ले जारे उवै ले गाडे
 इन दुषिय न दो ऊधर बाडेः ॥ ४॥ कहै कबी मुन
 ऊरे लोई हं मुं म बिन सिर हैगे सोई ॥ ५॥ ॥ १॥
 ॥ नर जां नै रे अमर मेरी कायाः ॥ धर धर वात दुपहरी
 बायाः ॥ टिकः ॥ १॥ मार गळा डिकु मार गधो वैः आ
 पन मेरे और हूं रो वैः ॥ २॥ ककु ककी ककु यक
 कर नां ॥ मु गंधन चेतै निह चै मर नां ॥ ३॥ ज्यौ
 जल बूंद ही तै संसाराः ॥ उप जत बिन सत नल
 गै वाराः ॥ ४॥ पंच पंथुरी एक सरीराः ॥ हं एक
 बल दल नवर कबीराः ॥ ५॥ ॥ २॥ ॥ अब कया से
 चै आय बनीः ॥ सिर परिसा दिवरां मधनीः ॥ टिकः ॥ १॥
 दिन दिन पाप बऊत तै की नाः नही गो बिंद की संक
 नर्मनीः ॥ लियो ने मि बऊत पलितानो ॥ लाल चला गो
 करत घनी ॥ २॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥
 टीको जगानि गदधे स्योः ॥ उडि गयो गूड रत नी

पंकल्यो हंस जमले बाल्योः मंदिर सो वे नारि धनी ॥ ३ ॥
... कहे कबीरां म किन यु मिरते
चीकत नो हिन एक ही चिनी ॥ जब जाय आय पयो सी
श्रम्यो ॥ बडि च ल्यो त जि ड म म पनी ॥ ४ ॥ ॥ १ ॥
रसना थ कित बो ल न ही आवै ॥ न ट कि म ने जौ बि
तहि ब ता वै ॥ ५ ॥ ॥ धरी ठ की मो हिक लुं ब ता ई
ल र का का हि जि वा ऊ मा ई ॥ ६ ॥ ॥ जो हूं जो हूं ई ह
अव च ल जा री ॥ का हे कं त ते अ ध बि चि वारी ॥ ७ ॥
कहे कबीर हूं त न म न उ हूं ॥ अ प नै रां म हि सि न
न वि मा हूं ॥ ८ ॥ ॥ सु व टा ड र प त र क मे रे
ना ई ॥ तो हि डा ई दै त विला ई ॥ ती न वा र हूं धे ई क
ए न मे क बु ड क ष ता ष वा ई ॥ टि क ॥ १ ॥ ॥ य मं जा री
मु ग ध न मं नै ॥ स ब ड नी या उ ह का ई ॥ रां नां रा व रं क
हूं व्या पे ॥ क रि क रि प्री ति स वा ई ॥ १ ॥ ॥ क द त क बी
रे मु न ऊ रे सु व टा ॥ उ ब रौ गे ह रि सर ना ई ॥ ला हूं मं
हि ते ले त अ वं न क ॥ का हूं दे त न दि षा ई ॥ १ ॥ ॥ ३ ॥
क्या मां गं ऊ ठ थि र न र हा ई ॥ दे ष त नै न च ल्यो ज ग जा ई
॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ इ क ल ष ह त स वा ल म ना ती ॥ ता रां व न ध रि दी
जा न बा ती ॥ १ ॥ ॥ लं का से को ट स मं द सी षा ई ॥ ता रां व न की
ष व रि न पा ई ॥ १ ॥ ॥ को आ व त सै ग ब जा त सं गा ती ॥ क
यो न यो द रि बो धे हा थि ॥ १ ॥ ॥ कहे कबीर अंत की बारी
॥ हा थ जा रि जै सै च ल्यो ऊ वा री ॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ म न रे त न
का ग द का पु त रा ॥ ला गै हूं द बि न सि जा य ठि न मे ॥ १ ॥ ॥

करे कपटराः ॥ टिकः ॥ १॥ माटी छोड़ें नीति उसा
रेः अंधक है घर मेराः जम आवे तब बांधिले चो
लेः बज्र निन करि है केराः ॥ २॥ घोटक पटक रिई ऊ
धन जो स्योः ले धरती मैगा ड्योः रो क्यो घट सासन
ही नि कसेः गोर गोर सब ठा ड्योः ॥ ३॥ कहै कबीर
नटनाटक था केः मंदला को न बजावैः ॥ गये पिष
नीयाः ॥ उजरी बाजीः को का रू के आवैः ॥ ४॥ २५॥
॥ ॥ यात न धन की कूं न बडाईः ॥ धरनि परे जै सै ॥
बाल बिलाईः ॥ टिकः ॥ १॥ चोवा चंदन मरदन अंगाः सो
तन जरे काठ के संगः ॥ हाथ नटो डर मुख हितं बोरः ॥ म
रती बिर जै सै क सीये चोर ॥ २॥ कहै कबीर माया के कं
धः ॥ अब चल रां म और सब धंधः ॥ ३॥ २६॥ ॥ ॥
ऊठे तन कूं कहा गरबैयेः ॥ मरि जैये तौ पल नरिर
ह न न पैयेः ॥ टिकः ॥ २॥ चोवा चंदन चरच हि अंगा
सो तन जरे काठ के संगः ॥ २॥ धीर बां ड धित पिंड
सवाराः ॥ ३॥ न गये बाहरिले जाराः ॥ २॥ दास क
बाई ऊ की क बिचाराः ॥ इ क दि न हे ह वाल ह
मारा ॥ ४॥ २७॥ ॥ देष ऊ ऊ तन जरे ता हैः ॥ घ
री पहर बिर मोरे जाई जरे ता हैः ॥ टिकः ॥ १॥ का हे
कूं एता की या पसाराः ॥ इ ऊ तन ज रि बरि के हे ठा
राः ॥ २॥ न वत न हा दस लागी आगीः ॥ मुग धन चे
ते न भसिष लागीः ॥ ३॥ काम क्रोध घट न स्यो बि
काराः ॥ आप ही आप जरे सें साराः ॥ ४॥ कहै कबी
र हम मृतक समानाः ॥ रां मनां म बूटे अनिमोनाः
॥ ५॥ २८॥ ॥ तन रा भन हारा को ना हीः ॥ उंम सोच
बिचार देखौ मन मोहीः ॥ १॥ टिकः ॥ जोर ऊ टं ब अपनै

[illegible]

॥ कृती माया बांधे रे जागे ॥ हरि मुं विमल विषय लागे ॥
॥ टेक ॥ १ ॥ नव जल सजल मीत अनुरंगा ॥ जल जजा
ल सब ही ऊसंगा ॥ २ ॥ माया लागि आन जिहि दी
न ॥ ते हरि स्वान मकर निज कान ॥ ३ ॥ गुरु मुखची
कारां मलिव लागे ॥ कहै कबीर ते ईतर जागे ॥ ४ ॥
॥ १ ॥ हरि न निहरि न निहरि न निजिय रा ॥ जो भोज
ऊसो आवै नियरा ॥ टेक ॥ १ ॥ इंद्री अत्या अत्य
त बाढी ॥ कऊ कबने जोगी निमार्थी ॥ २ ॥ के सो क
सिके चतुर् ज्ये ॥ लेखि ॥ आ पा जा नि अग निमै देय
॥ ३ ॥ इंद्री कऊ कब कब कब की जे ॥ मन के कहत सु
नत मुख जी ॥ ४ ॥ कहै कबीर अब एक समान ॥
इंद्री सेवा मन का जान ॥ ५ ॥ ३ ॥ ॥ सरवर मित
वा मोर जुहान ॥ हसा उऊ पष पसाता ॥ टेक ॥
नही तन एह नेद का की जे ॥ इहि अवसर उरहंगा
काली जे ॥ १ ॥ बरुत बिषय मजिन विमरावा ॥
इहि परकार अवर नही पावा ॥ २ ॥ काम मदि रा
पीवत अघाही ॥ कहै कबीर पावै पळताई ॥ ३ ॥
॥ ३ ॥ ॥ काहेरे मन दहदि मिधायै ॥ विषय
संगि सतोषन पावै ॥ टेक ॥ १ ॥ जहां जहां कलप
त हांत हां बंधना ॥ रतन कौया लकी यौ ते
धना ॥ २ ॥ जे सौ सुष पावत इन माही ॥ तो रा
ज बाडि कित बन हूं जाही ॥ ३ ॥ आनंद अहित
जे विषयारी ॥ अब का जी भै पतित निवारी ॥ ४ ॥

कहेकबीरकुसुमदिनकारिः॥तजिबिषिया
जजिचरनमुरारि॥५॥३॥ ॥जियराजा
दिगौमैजानारेः॥जोदेखासोबऊरिनपेखाः॥मा
यासुलपटांनोः॥टेक॥१॥बाकलबस्तरकि
तापहरिवाःकेतौबनबंठिबायाः॥कहासु
गधरेपाहनहुजेः॥कहाजलइरेगाथा॥२॥क
हेकबीरसुरमुनिउपदेसाः॥लोकापंचलगरी
सुनोसंतसुमिरोनगर्वताहरिविनजनमगवा
ई॥३॥३॥ ॥अबमेनाजिउस्योतोरैपाठैः
काकिदेऊतौसाहिवलाजे॥टेकः॥१॥नाम
जोनिनम्पाबऊनेषोः॥अबजिनरांमगनऊर
हिलेषोः॥२॥थावरजंगमलपचौरासीः॥क
ऊपुरकबऊबनवासीः॥३॥अतितनबाऊ
नबैसरीरः॥करैकिंपारांमकहेकबीर॥४॥
नोहितजितेरेजनकापैजांदिः॥सरीरअसाध
जनोआनांदिः॥टेक॥१॥नांमेजोगजुगनिमन
लायाः॥नांवैसगतजीनहीमाया॥२॥नांमेन्त
मिन्मितीरथकीकेः॥नांहरिदरसनयननर
चीकेः॥३॥नगनमगननहीनयासरीरः॥ह
रिगुनगावैद्याकबीरः॥४॥४॥ ॥सब
कोउकहेकबीरनलोजनः॥रांमवरननहीला
ऊटिलमनः॥टेक॥१॥सरतिनहीजिहिलागि

निहोनाः हरिकैसै मिलेन दिवस का उराः ॥२॥ सैजु
गति न जानू जो प्रचु नावैः हरिकैसै देवैः से न जनन का
वैः ॥३॥ कहै कबीर हरि सब की जानैः जन जन अपना
सेवक मानैः ॥४॥ सो मुनि जन जो मन हँसारेः मन मा
रे सो आ पातारेः टिक ॥१॥ मन मंदिर मे बोले सोई ॥ म
न जीतै बिन सिद्धि न होई ॥२॥ म त बुद्धि बुद्धि मन
एक समानः सो न मित्या जाते बूटे अनिमान ॥३॥
मन सु प्रिकाया व्यापीः मन मारि रिधि मिधि करि य
पी ॥४॥ कहै कबीर जो जानै जेवः ॥ मन मरु ऊर मन
त्रि नुवन देवः ॥५॥ सो तो मन का तन मवाराः ॥ म
न ही उठै मन ही बैठै मन चिंतवै मन नाराः टिक ॥१॥
मन ही देव देहरा मन ही मन ही है सजाराः ॥ मन ही
मन कृपा ती तो डैः सब ऊठ मन का साराः ॥२॥ त
न कूँ प्रो जिर है मन नीतरिः सुमिरन बारं बाराः ॥
कहै कबीर या मन कूँ बूँ जैः ते जन जग ते पाराः ॥
॥३॥ ॥४॥ ॥ मन थिर रहै धर कै मेराः ॥ इन मन
धर जारे बकुतेराः टिक ॥१॥ धर त जिवन बाहर की
यो बासः ॥ धर बन देखे होऊ निरासः ॥२॥ जहा जा
ऊत दां सो ग संतापः ॥ जरा मरन को अधिक बिया
पः ॥३॥ कहै कबीर चरन तो दिबंदाः ॥ धर मे धर दे पर
मानंदाः ॥४॥ ॥५॥ ॥ कै सैन गर क रूँ कुटवारी
॥ चंचल पुरुष विचरत नारीः टिक ॥१॥ वैल व्या
य गाव नई बंजाः ॥ बबरा हूँ तेनी नूं संजा

कहै कबीर सुषुप्ति दिन कारिः ॥ तजि विषिया
 नजि चरन मुरारि ॥ ५ ॥ ३७ ॥ ॥ जिय राजा
 दिगौ मै जां नारे ॥ जो देख्यो सो बऊ दिन पेध्या ॥ मा
 व्या सुल पटां नां ॥ टेक ॥ १ ॥ बाकल बस्तर कि
 ताप हरि वा ॥ केतौ बन धंडि बासा ॥ कहा सु
 गंधरे पाहन दुजे ॥ कहा जल ईरे गासा ॥ २ ॥ क
 है कबीर सुरमुनि उपदेशा ॥ लोका पंचल गाई
 मुनौ संत मुनि नौ नगर्वता हरि विन जनम गवा
 ई ॥ ३ ॥ ३८ ॥ ॥ अब मेना जि दुसो तरे पाछे ॥
 का छि देखौ तो साहिब लाजे ॥ टेक ॥ १ ॥ नाना
 जो निन म्या बऊ नेषे ॥ अब जिन रा मगन ऊउ
 हिले धे ॥ २ ॥ थावर जंगम लख चौ रासी ॥ कब
 ऊपु र कब ऊवन वासी ॥ ३ ॥ अति नम्य कुल
 न बैसरी र ॥ करै क्रिपारा म कहै कबीर ॥ ४ ॥ ४० ॥
 नो हित जितेरे जन कापे जाहि ॥ सरीर असाध
 जरो आनां हि ॥ टेक ॥ १ ॥ नां मे जोग जुग निमन
 लाया ॥ नां बैसगत जी नही माया ॥ २ ॥ नां मे न
 मि न मिती रथ की क्रि ॥ नां हरि दरसन नय नार
 ची क्रि ॥ ३ ॥ नगन मगन नही नया सरीर ॥ ह
 रि उन गावै दाय कबीर ॥ ४ ॥ ४१ ॥ ॥ सब
 उ कहै कबीर न लो जन ॥ रां म चरन नही लो
 ऊ टिल मन ॥ टेक ॥ १ ॥ सरति नही जि हिला गि

निहोनाः हरिकैसो मिलेन हि वषमका उराः ॥२॥ सीजु
गतिनं जानू जो प्रचु नावेः हरिकैसो देवेः से न जनन आ
वेः ॥३॥ कहै कबीर हरि सब की जानेः जन जन अपना
सेवक मानेः ॥४॥ सो मुनि जन जो मन हूँ मारेः मन मा
रे सो आ पातारेः ॥ टंक ॥१॥ मन मंदिर मे बोलै सो ई म
न जीतै बिन सिद्धि न होई ॥२॥ म न बुद्धि बुद्धि मन
एक समानः ॥ सो न मिला जाते दूटै अनिमान ॥३॥
मन सुख काया व्यापीः मन मारि रिधि सिद्धि करि ध
पी ॥४॥ कहै कबीर जो जानै जेवः ॥ मान सऊ र मन
त्रि नुवत देवः ॥५॥ सो तो मन का तन र म वाराः ॥ म
न ही उठै मन ही बैठै मन चिंतवै मन नाराः ॥ टंक ॥१॥
मन ही देव देहरा मन ही मन ही है स जारा ॥ मन ही
मन कृपा ती तो डैः सब ऊठ मन का सारा ॥२॥ त
न कूषो जिर है मन नीतरिः सुमिरन बार बारा ॥
कहै कबीर या मन कूँ कूँ जैः ते जन जगतै पारा ॥
॥३॥ ॥४॥ ॥ मन थिर रहै धर कै मेरा ॥ इन मन
धर जारे बकुतेरा ॥ टंक ॥१॥ धरत जिवन बाहर की
यो बासः ॥ धर वन देखे हो ऊ निरासः ॥२॥ जहां जो
ऊत हां सो ग संतापः ॥ जरा मरन को अधिक बिया
पः ॥३॥ कहै कबीर चरन तोहि बंदा ॥ धर मे धर दे पर
मानंदा ॥४॥ ॥५॥ ॥ कै से नगर कसू कुटवारी
॥ चंचल पुष्प विचये रत नारी ॥ टंक ॥१॥ बैल ब्या
य गाय नई बंजा ॥ बबरा हूँ तेनी नूं सजा ॥२॥ न कूँ

रीधरमाधीठबिहारीः। मांसपसारिः जीलूरप्रवारीः॥
 मूसाकैपरधानं बिलुवाः। मीउकसोवेसापपहरकाः॥
 ॥१॥ नित्यउठिस्याल सिंधुसुंऊऊः। कहैकबीरको
 ईविरलाहूऊः॥५॥ ॥५॥ ॥१॥ नईरचून बिलोटाषा
 ईबाधनिसंगिनईसबहनिकेः प्रसमनिनेदलहईः॥
 ॥६॥ ॥१॥ सबघरकोरि बिलोटांषायोः कोईनजाने
 नेवाः प्रसमनिनेतोआंगनिस्तूतोः राउनेदेईलेवाः॥२॥
 पारोसनिपनिनईविरांनीः माहिऊईधरयालेः पंच
 सषीमिलिमंगलगांवैः ६ऊउषवाऊंशालैः॥३॥ ई
 देदीपकधरधरजोयेः मंदिरसदासंधाराः धरधर
 रसबआपसुवारथः बाहरिकीयापसाराः॥४॥
 तउज्जारसबेकोईजानेः सबकारुमनमानेः कहै
 कबीरमिलेजेसतगुरतोइहचूनबुडाने॥५॥ ॥४॥
 ॥१॥ विषयअजऊंरतिमुषआसाः होननदेयहरिकेच
 ॥२॥ निवासाः॥६॥ ॥१॥ सुषमांगुषपहलीहीआवेः॥
 तातेइहसुषमांग्योनजावेः॥२॥ जासुषतैसिवविस्व
 रांनाः सोसुषहमऊंसाचकरजांनाः॥३॥ सुषबछात
 बसबउषनागाः गुरकेसबदमेराभनजागाः॥४॥ नि
 सिदिनविषेतनाउपगाराः विप्रइनरकिनजाताबा
 राः॥५॥ कहैकबीरचंचलमतिल्यामीः तबकेवल
 राभनांमलौलागीः॥६॥ ॥१॥ ॥१॥ देबुनरककीइऊं
 भिकाईमुनिपरजैतसबलागेधाईः॥२॥ ॥१॥ ॥१॥ मोद
 नरसबिषहैजाईः रसरतज्यैपतितहोयजाईः॥३॥ का
 लबऊरच्यैसमअंतआवेः रघनाथसरनिविनआ

वननपावैः॥मनवचक्रमजोरामहिगावैः॥ताकैमाया
 निकटिनआवैः॥कैहैकबीरइऊनरकवडाईः॥जोने
 कजतनकरितजीनजाईः॥५॥४॥ ॥बिभीया
 कीकलपनांनजाईः॥कैसैसरनिआउरांमराईः॥टेकः
 ॥१॥मनसामुधहोतनहीकबहुः॥रांमविनांरां
 नदुखअबहुः॥२॥मनमातंगजमिनमिनधावैः॥हरि
 दरसपरसविनसचुनहीपावैः॥३॥जमिन्तुलेअज
 समजाईः॥काहैकबीरइऊअवसरजाईः॥४॥४॥ ॥
 ॥मायातजुतजीनहीजाईः॥फिरिफिरिमायामोहि
 लपटाईः॥टेकः॥१॥मायाआदरमायामांनः॥मा
 यानहीतहंअलज्ञान॥२॥मायारसमायाकरजा
 नः॥मायाकारनितजैपिरांन॥३॥मायाजपतपमा
 याजोगः॥मायाबाधेसबहीलोगः॥४॥मायाजलि
 पलिमायाआकासिः॥मायाआधिरहीतार्पसि॥
 ॥५॥मायामातामायापिताः॥अंतिमायाअस्त्रीमु
 ता॥६॥मायामारिकीयेव्योहारः॥कहैकबीमैरां
 मअधार॥७॥५०॥ ॥रेनरजनमजाताहैनोरेः॥सौ
 पहिरांमहिलागिनिहोरेः॥टेकः॥१॥जोवनजरत
 देषिमैआगिः॥तासनिग्रीतिकरहिक्पालागि
 ॥२॥तुलेलोगकुटंबग्रहवासः॥कहैकबीर
 गीसबअस॥३॥५१॥ ॥अहजीनजोन
 ॥कवनकलसउगयलेमंदिरः॥सकहै
 रेः॥टेकः॥१॥इनग्रहमनउहकेसबहिजे
 कोपलो नहरोरेः॥२॥जोरानोरवहु

रिजये न सम को कुरोरे ॥२॥ सब तेनी की संत मंडली
था ॥ हरि न गत को ने बोरे ॥ गो बिंद क गुन बै बै गे हे
धै रै दु को टे रो रे ॥३॥ औ सै जा नि ज पुरु ज ग जी व न
ज म सु ति न का तो रो रे ॥ कहै क बी र रां म न जि बै दुः
ए क आ ध को ऊ मू रो रे ॥ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ॥ रं ज मि मी
न दे षि व ऊ पा नी ॥ काल जाल की ब ब रि न जा नी ॥ टे क ॥
॥ १ ॥ गा रे गर ब्यौ औ य ट था ट ॥ सो ज ल ब्ब डि बि कां नो
हा ट ॥ २ ॥ बां धो न जा ने ज ल उ द मा द ॥ कहै क बी र मो
हे स व स्वा द ॥ २ ॥ ५३ ॥ ॥ वि न सि जा य का ग द की गु डी या
॥ ज ब ल ग प व न त बै ल ग उ डी या ॥ टे क ॥ १ ॥ गु डी या को
स ब द ज ना ह द बो लै ॥ म स म ली ये क डो री ज लै ॥ २ ॥
प व न थ को गु डी या ब ह ना नी ॥ मी म धु ने धु नि रो वे जा नी
॥ कहै क बी र न जि ॥ मार ग जा नी ॥ न ही तर कै कै
मां चा ता नी ॥ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ न र हर म ह जै ह जिन जा ना
गत फल फल त त त रु प ल व न्म कूर बी ज न मा ना ॥ टे क ॥
॥ १ ॥ प्र ग ट प्र का म ग्ग न गु रु ग मि ते ॥ ब्र ह्म अ ग नि पर जा री
॥ स सि ह र स्वर ह्म र उ र तर ला गी जोग जु ग ता री ॥ २ ॥ उ ल ट
प व न च क म ट वे धा मे र ड उ सर क्षा ग ग न गर जि म न सु न
स मा ना ॥ बा जे न न ह द तु रा ॥ ३ ॥ सु म ति स री र क बी र वि
चा री ॥ त्रि कु णी सं ग म स्वी मी ॥ प द आ न द का ल तै छु टै ॥
सु प मे सु र ति स मां नी ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ म न रे म न ही उ ल टि स मा
नां ॥ गु रु पर सा द ज क लि न ई तो क ॥ न ही तर था वे गा ना ॥
॥ टे क ॥ १ ॥ ने रा तै ह्म र ह्म र तै ने रा ॥ जि न जै सा क रि जा ना

औलोतीकांचढाबलीडे: जिनिपीयातिनिमांनो: ॥२॥
 उलटिपवनचक्रषटवेध्या: सुम्पसुरतिलवलागी: ॥
 अमरनमरे मरेनहीजीवै: ताहिबोजिवैरागी: ॥३॥ अन
 नेकथाकौनमुकहीयै: हैकोईचतुरविवेकी: ॥ कहैक
 बीरगुरुदीयापलीता: औजलैदेखी: ॥४॥ पठा ॥ २५
 इहिततरांमजपुहरेजांनी: ॥ बूजैअकथकहानी: ॥ जा
 परिक्किपांनईसतगुरुकी: जागतरेनिविहानी: ॥
 ॥६॥ टिक: ॥१॥ डायनडारीमुनहाउरै: मिथरहेबनधरे
 ॥ पंचकुटंबमिलिऊजमलागे: बाजतसबदसंघे
 रे: ॥२॥ रोहोभृगुमुसौबनधरे: ॥ पारधीबांननमे
 ले: ॥ सायरजलैसकलबनदाजै: मळअहेरैभेले:
 ॥३॥ सोईपंडितसोईतज्ञाता: जोइहिपदहिवि
 चारै: ॥ कहैकबीरसोईगुरुमेरा: आपतिरैमोहि
 तारे: ॥४॥ पठा ॥ ॥ अवधुज्ञानलहरिकरिमांतीरे
 सबदअतीतअनाहुदलागा: इहिविधिनिष्ठाका
 ॥५॥ टिक: ॥१॥ बनेमुसैसमदधरकीनां: मळावमैप
 हाडी: मुद्रपीवैबांननमतवाला: फललागाबिन
 बारी: ॥२॥ जाउबनैकोलीमैबैठीजैछतामैगइहि:
 तानैबांनैपरीअनवासी: सुतकहैवनिगइहि: ॥३॥
 कहैकबीरमुनकरैसंतो: अगमज्ञानपदमैहरे:
 गुरुपरसाद ॥ ॥ सुकेतुकेतु
 आवैजाही ॥४॥ पठा ॥ ॥ एक ॥ ॥ नहैतुमडेव
 ठाहासंघवरावैगाइटेक: ॥१॥ नहैतुमडेव

ई। चैला के गुल गै पाई। रा। जल की मठ ली तरवर। रा।
पकरि बिलाई मुरगे पाई। बेल दि। रिगु निघरि। रा। कु
ता हूं ले गई बिलाई। रा। त। लि। सा। म। अ। रु। उपरि मूल।। व
ऊत नांति जल गे। ल। ल। क। ह। क। बी। र। या। प। द। हूं। बू। छे।। ता
कूंती नू। त्रि। च। वन। मू। जै।। ५।। ६।। ॥ ई। क। मो। दि। जु। गी। य।
देऊ विचारी। विन ही पुन म। त्रि। या। का। धूं। नारी।। टै। कः।। १।।
आवटे इध थसो। उतराई। केन लेऊ मुग मुजाई।। २।।
छोरै चढि नै सिच नां वें जाई। विन ही बरद गूं निचलि
आई।। ३।। बरद बिवाय गाय ले पोसा।। छत्र चले अ
छाई। को। सा।। क। ह। क। बी। र। इ। ह। प। द। सारा। जो। जानै। सो
उतरै पारा।। ५।। ६।। ॥ हरि। प्र। रे। बरे। प। का। ये। जि। नि
जोरै तिनि। मा। ये।। ज्ञान अचेत फिरे नर। लो। छ। ता। तै। जन। मि
जन मि उह काये।। टै। कः।। १।। धौल मदली या बेल रबाबी।
क उवाताल बजावै।। पह। रि। चो। ल। नां। ग। द। हा। ना। चै। जै। मा
निरति करावै।। २।। स्पंथ बैठा पांन हिक तरै। धूम गि
लोरा लावै। उदरी बपुरी मंगल गावै। कठु कआंन
द सुनावै।। ३।। क। ह। क। बी। र। मुन। करै। सै। तो। ग। उरी। पर
बत धावा। चक वे बै स अंगरा निग ल्या सम द प्रका
सां धावा।। ४।। ५।। ॥ चं। र। मा। जि। न। जे। रे। का। हूं। गी।
हजारी का मृतः नण दके जई या की सौं।। टै। कः।। १।।
जल जाई थलि ऊपनी। आई नगर मै आप। एक
अवे जा देषीया। बिटीया जायो बाप।। २।। बा। बु। ल। मे
प्रो व्याह करि बर उत म लेवाहि। जब लग बर पावेन
हीत बलग तुं ही व्याहि।। ३।। मु। बु। धी। कै। थ। रि। लु। ब। धी।

आयोः आनवरुको नाईः ब्रह्मै अगनि बुद्ध्याय क रि
 फलसो दीयो ववा ईया सावजगही म रिजा वः एक बट
 ईया जिन मरे सवरा उ न को साय चरषा को फिरेः ॥ ५ ॥
 कहै कबीर सोई पंडित ज्ञाताः जो साय द हि बिचारैः ॥ पहलै
 परचै गुरु मिलै तो पीछे सत गुरु कोरे ॥ ५ ॥ ६२ ॥
 जग रा एक निवे रौ रा मः जे भु म अप ना ज न मु को मः ॥ ६ ॥
 ॥ १ ॥ ब्रह्मा ब्रह्मा क जिन रूप उ पायाः ॥ वेद वडा कि ज रा नै
 आयाः ॥ २ ॥ इन्द्र मन वडा क जहां मन भा नैः ॥ रा म वडा क रा म
 हि जा नैः ॥ ३ ॥ कहै कबीर रूप रा उ दा सः तीर थ व डे कह रि
 दा सः ॥ ४ ॥ दूरा दा स रा म हि जा नि है रेः ॥ अवर न जा नै को
 ई दा स बिबे की सब न ले प रि ने द न बा ना हो ई ॥ टेक
 ॥ १ ॥ का जर दे ई स बै को ई व ष्य चि क मा हि वि ना न
 ॥ जि नि लो य न मु नि मो ही याः ते लो थ न पर बा नः ॥ २ ॥
 बोहत न गत न व सा ग राः ना ना बि धि ना ना वा
 जि हि दि उ दे श्री द रि ने टी या सो ने द क ऊ क ऊ ग वः
 दर स न स म र क पा की जी थैः जौ गु न हो न ही हो त सं म
 नाः ॥ सी धो नी र क बी र मि ल्यो है यो फ २ क नि मि
 ले प सा नाः ॥ ४ ॥ ६४ ॥ ॥ के सै हो य गा मि ला वो
 ह रि स ना रे तु वि षे वि का र न त जि म नाः ॥ टेक ॥
 ॥ १ ॥ रे तै जोग जु ग ति जा ना न ही तैः ॥ गुरु का सब द सा
 न्या न हीः गं दी दे ही दे वि न फू ली वैंः ॥ सं सार दे ति न
 भू ली थैः ॥ २ ॥ कहै कबीर मन बड गु नः ॥ हरि न ग
 ति वि नाः ॥ उ म कु नि कु नीः ॥ ३ ॥ ६५ ॥

॥ का मूक हृद्ये सु निरमांति रा मरमन जानै को यजीः ॥
दास बिबेको सब जलेः परिनेदन छां ना होय जीः ॥
॥ टेकः ॥ ११ ॥ एस कलत्र लाउतै धरीयाः अरु हजाम
हिथान जीः मेस बधर अंतर पेयीयाः जब देखाने
न समान जी ॥ २ ॥ रां मरमां यन रुमिक हैः अरु तु तगा
ति विस्तार जी ॥ नरम निसा जोगत करैः ताहि सूजे म
मार जी ॥ ३ ॥ शिव मन का दिक नारदाः बसलीया नि
ज वास जी ॥ कहै कबीर पद पंकजाः अबने रान निवा
स जी ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ मेउरे ही ठोरे जा उगाः तो मै बऊ
रिन नव जल आं ऊगाः ॥ टेक ॥ ११ ॥ मूत का मूत कल
धोराः तातै लाय ले कंथा उराः ॥ कंथा उरा लागाः ॥
तब जरामर नव जागाः ॥ २ ॥ जहां मूत क पास न
पूनीः तहां बसे एक मून ममूनीः मूनी सु चित ला
ऊगाः तो मै बऊरिन नव जल आं ऊगाः ॥ ३ ॥ मरु
उ एक ठा जाः तहां बसे एक राजाः ॥ उसरा जा सु मन
ला उगा तो मै बऊरिन नव जल आं ऊगाः ॥ ४ ॥ ज
हां बऊ दीरा घन मोतीः तहां तलाय ले जोतीः ॥ उस
जोति ही जोति मिल ऊगाः तो मै बऊरिन नव जल
आं ऊगाः ॥ ५ ॥ जहां उगे मूरन चंदाः तहां देखा ए
क आनंदः ॥ उस आनंद से चित लां ऊगाः तो मै ब
ऊरिन नव जल आं ऊगाः ॥ ६ ॥ मूल बंधन एक
पावाः तहां सिध गने सर रावाः ॥ उस मूल हिम
ल मिल ऊगाः तो मै बऊरिन नव जल आं ऊ

गाः॥७॥कवीराताहिबतोरातहंगोनिहरीरा
नराःमेहेतहरीचितलांकगाःनोभिलकरिन
वजललांकगाः॥८॥५७॥ ॥संतोभगानु
गगनविनसिंगयाःसबदजुकलसगादीपरा
सामोहिनिसिदिनव्यापेकोईकहेसगगाकी॥
॥८॥१॥नोहिबसंडपिउंमुनिनाहीमंनतत
नीनाहीःइडापिंगलासुप्रमननाहीःएगुनतह
समाईः॥२॥नहीग्रहद्वारकलुनंतीतहीयाः॥
स्वनहारपुनिनाहीःजावनहारअनीतसदाना
गिएगुनः...तहासमाई॥३॥नूदेतमोभो
मुनिहटेःजवनतदोयविनासाःतनकोगाडो
रज्जवकोसेवनःकोकाकेविसनारा॥४॥भान
हेकवीरइकुनवननविनमेःजोभगानुगगा॥
नोःसीदेमुनेपंडक्याहीःजोनाहीपदहिम
नोनागपः...॥तमनकुंयोजकरिनाहीतन
देनदकनोमुनः॥५॥सगतसनंदनजो
दनांनोःनगदिद्वीननउनकुनजांनो॥६॥प्रिय
द्विंदनारददुनिजांनोःमनकीगतिउनहंन
वीजांनोः॥७॥प्रदलादबभीनमेगातननीता
लिनदपुनकुंदेया॥८॥ताममकाकोईनेवः
लिनदकोमुदेव॥९॥ ॥यरीगे

कलसरीराः तामनमैरमिरहाकबीराः ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
नाईरिबिरलेदोस्तकबीरकेः ॥ ६ ॥ ततवारवारका
सुंकहीयेः ॥ नाजएघउएसवारएसमरयज्जराषे
त्यूरहीयेः ॥ टेकः ॥ १ ॥ आलमडुनीसबैफिरिषोजीः
हरिविनसकलअयांनोः ॥ छहदरसनछिनवैपाषंडा
आकलकिनऊनजांनोः ॥ २ ॥ जपतपसंजमष्टजा
अरचाः जोतिगजगवोरांनोः कागदलिषिलिषिज
गतचुलांनोः मनहीमननिसमांनोः ॥ ३ ॥ कहैकबी
रजोगीअरजंगमरेसबजूवीआसाः गुरुपरमादस्यो
चात्रिगज्जः निहचैचरननिवासाः ॥ ४ ॥ ॥ ॥
॥ मनरेक्याकहीयेक्यानांहीः जौयाभृगअधिककरि
कूदैअंतिपडैजैमांहीः ॥ टेकः ॥ १ ॥ वेदकतेबऊरांनपुंरांनो
निगमहिअगमविचाराः पाहअथाहयाहनहीआवैः
तेऊपचिपचिहारा ॥ २ ॥ कहैकबीरमनमनहीअमा
नांः सबपरकारअकेलाः एकैमैहजादिषलावैः ता
सगुरुमैचैला ॥ ३ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥
उमिः ॥ रांमसमाधिअजऊनहीकूटिः ॥ टेकः ॥ १ ॥ ॥ १ ॥
लेकालकऊंकितेकनामः गयेइजसेअगिनैलाषः ॥
॥ २ ॥ ब्रह्मोपोजियस्योगदिकालः कहैकबीरउहेरांम
निरालः ॥ ३ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥
बमांनिसमांनोः ताहिछाडिजेआंनजतहेः तेसब
मनुलांनोः ॥ टेकः ॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥
पदनिजमोहीः ॥ रहककरुनांकारुनकेसोः नाव

रनं कृतो हीः ॥ १ ॥ कं हो धौं सब द कहं ते आवैः अर कि
रि कहां समाई ॥ सब द अतीत का मर मन जानैः अमि न
ली उनी यां ई ॥ १ ॥ पंडे मु क ति कह ले की जैः जो प द
मु क ति न हो ई ॥ पंडे मु क ति कहै मु नि जां नोः सब द अती
ता सो ई ॥ १ ॥ प्र ग टे गु प त गु प त पु नि पर ग टः सो क त रहै लु
काई ॥ क बी र पर मा नें द म ना योः अ क थ क थ्यो न ही जो
ई ॥ १ ॥ १ ॥ ॥ का क हि पं डित क र सि वि चारः रां म
नां म वि न उ वार पा राः ॥ टे कः ॥ १ ॥ ज स क ही ये त स हो त
न ही रां मः ॥ एक हि य न म नु के वि श्रां मः ॥ २ ॥ मू ढ न जां
न हि ता क र अं तुः क है क बी र अं से रां म अं ने तुः ॥ १ ॥ १ ॥
सो क ठु वि चार क पं डित लो ई ॥ जा के रूप न रे ष व र
न न ही को ई ॥ टे कः ॥ १ ॥ उप जै प्यं उ प्रां न कहां ते आ
वैः ॥ मू वा जी व जा य कहां समा वैः ॥ २ ॥ ई द्री क हां
क र अं स मां नांः सो क त ग ये जु क ह ते रां मां ॥ ३ ॥
पंच त त्व ज हां सब द न स्वा दः ॥ अ ल ष नि रं ज न त हां
वि द्या न वा दः ॥ ४ ॥ क है क बी र म न म न ही स मां नांः ॥
त व आ ग म नि ग म जू व क रि जां नांः ॥ ५ ॥ १ ॥
जो पै बी ज रूप न ग वां नांः ॥ तौ पं डित क या क थ सि
ज्ञा नांः ॥ टे कः ॥ १ ॥ न ही त न न ही म न न ही अ हं का र
न ही स त र ज त म ती न व का रः ॥ २ ॥ वि ष ङ्ग मृत फ ल
अ ने कः ॥ वे द बो धो क है ता रूप ऐ कः ॥ ३ ॥ क है क
बी र ई ह मां नां मां नांः ॥ क हि थो बू टै क व न उ र जां नः

॥१॥७५॥ ॥ रे नर रां मनां महित नां ही ॥ बांधे धर मरा
 य के जां ही ॥ टेक ॥ १ ॥ का हि सना न प्रा त अरु मां ॥
 ॥ क्या न या दा डर पां नी मां ॥ २ ॥ का या र त जे रू पर चां
 ही ॥ ति न कूं हरि मु प ने जी नां ही ॥ ३ ॥ आ स न त प ती र ध
 व त ह जा ॥ उ हे अ ज्ञान कर म फ ल न जा ॥ ४ ॥ क हे क व
 र ड स्तर हे मा या ॥ के से ति रे वि नां रां म रा या ॥ ५ ॥ ७५ ॥
 ॥ ॥ जो म न के हे रां म स ने ही ॥ तो वि न ज लि में ज न
 निर् म ल दे ही ॥ टेक ॥ ७ ॥ उ पर के म ल ज ल सुं धो वै ॥ अं
 त र के म ल का हे न मो वै ॥ ८ ॥ सु मि र त रां म सु प च ग
 ति ल दे ॥ वि न हि त वि प्र ब ऊ त ड ष स हे ॥ ९ ॥ क हे
 क बी र चं च ल म ति त जि रे ॥ र स नां स म ना म नि ज
 न जि रे ॥ १० ॥ ७६ ॥ जि न न ही जां न्यो के व ल रां मं ॥
 क हि क हि प चि प चि नू ये नि कां मं ॥ टेक ॥ ११ ॥ जे से
 ष र चं द न कर ना रा ॥ सं मृ ति वे द प डे ब्यो हा रा ॥ १२ ॥
 आ पु न प डि प ठि लो क चि ता वै ॥ ध र दा के जा य क
 र ड बुं जा वै ॥ १३ ॥ सा षा षा डि पे ड जे र च दी ॥ क हे क
 बी र से क व ऊ न प च दी ॥ १४ ॥ ७७ ॥ ॥ जे से पं डे
 क लि के आ ये ॥ रां म क ह त ज न वि षु व न धा ये ॥ टेक
 ॥ १५ ॥ स्वा द लु ब ध अं ध ध र म न पा वै ॥ हरि वा मु र ह
 वि नो ज न क र वा वै ॥ १६ ॥ प ठ हि गु न हि आ ग म क
 हि दे ही ॥ अ व र को ना र आ प न सि र ले ही ॥ १७ ॥ व र
 न अं ग र का ब ल क र ही ॥ क र दी वा ले कू वै प र ही ॥

॥१॥ कहे कबीर बांन न हे स्यां नां ॥ पढि गुनि हरि
कामर मन जां नं ॥ ॥५॥ ७॥ ॥ पंडित बाद बंदे
ते गुरु मे ॥ राम क ह्यं उनी योगति पावै ॥ तौ बां उक
ह्यं मुष मीठ ॥ टेक ॥ १॥ पावक क ह्यं पाव जौ दा
जै ॥ जल कहे त्रिषा बुजाई ॥ जौ जन कहे नूष जे
ना जै ॥ तौ राम कहे उनी या गति पाई ॥ २॥ विन वि
स्वास वेशास विन राम क ह्यं क्यो होई ॥ माया क
ह्यं जौ माया मिले तौ निई नै फिरे न कोई ॥ ३॥ न
र कै संग मूवा हरि बोले ॥ हरि पर तापन जां नै ॥ जे
क बहू उडि जाय जंगल मे ॥ तौ बहुरि न सुरतै आं
नै ॥ ४॥ सां ची प्रीति बिषै माया मुः हरि न गत न
सूहासी ॥ कहे कबीर प्रेम न ही उपज्यो ॥ बांध्यो
जम पुँजा श्री ॥ ५॥ ७२॥ ॥ कहे कौं की जे पा
उठोति बिचारा ॥ ठोति ही तै उपनां सब संसा
रा ॥ टेक ॥ १॥ हमरै कै मै लोहू पां उठुं हारै कै मै
दूध ॥ उम कै मै नये बां न न पंउ ॥ हम कै मै महमू
द ॥ २॥ ठोति ठोति करता तुम ही जाये ॥ गर्न वा
स काहे हूँ आये ॥ जनमत ठोति मरत ही ठोति
कहे कबीर हरि निर्मल जोति ॥ ३॥ ७०॥ ॥
॥ जे पे कत्ती वार न विचारे ॥ तौ जनम ते ती निउं
डि किन सारै ॥ टेक ॥ १॥ जौ तुँ प्रो लख तो मै मूँ हूँ
हं मारै लोहू तु मारै दूध ॥ जौ तू बां न न बन नी काजी

दोउ नरोते: तब उहनंदकलंधौ: ॥ टेका ॥ ॥ ॥ जांमैमैरेन
सकटिआवे: नांव निरंजन जा कौ: ॥ अविनासी उप
जैनही विनसै: संतसुजसकहेता कौ: ॥ २ ॥ लखचौरा
सीजीवजंतमैअमत-अमतनंदधा कौ: ॥ दासकबीर
कौअसौगुरु: नगतिबिनांदरिका कौ: ॥ ३ ॥ ॥ ॥
निगुनिंरांननिगुनिं निगुनरांमजपुदरेनाईअवग
तिकीगतिलषीनजाईनिगुनिं ॥ टेका ॥ ॥ ॥ चारवेद
जाकैसमतिपुराणां: नवव्याकरणांमरमनजांनो
कहैकजीनजाकैजैहैनांही: निजजनबेबेहरिकी
ठांही: ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ कहाकरुंपिववेगरनांहि
आपविचारिआपुनपैमांहि: ॥ टेका ॥ ॥ ॥ कहिसत
जलतरंगदैअसा: ॥ कौनैविधिनिश्वरत नहीतैसा:
लुंननरिजैसैहोयनन्यारा: ॥ चऊदिसिप्रकासिर
ह्यारांमहंमारा: ॥ २ ॥ ॥ उदैअस्तमहिघटिघटिती
र: ॥ हरिगुगतिजांनिरांमहिरमैकबीर: ॥ ३ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ लोकाजांनिननूलोनाशीषालिकबल
कबलकमैषालिक: सबघटिरह्योसमाशी ॥ टेका ॥
॥ ॥ ॥ अलाएकहिन्दुरनियाया: तांकीकैसीन्य
दा: ॥ ताहिन्दुरतैसबजगकीया: हंएनलकुए
मंदा: ॥ २ ॥ ॥ ताअलाकीगतिनहीजांनी: ॥ गुदगुड
दीयामीठा: ॥ कहैकबीरमैमीठापाया: साहिवसब
टदीठा: ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ रांममोहितारिकहां
लैजैहो: ॥ सोबैकुंठकहोअैकैसा: ॥ करियसावमुहि

[illegible]

वाजाः॥१॥॥ मनकरिमकाकबिलाकरिदेही॥
बोलनहारजगतगुरएही॥२॥॥ उहांनहीदोजगनि
स्तिमुकाभाः॥३॥॥ रहिमानाइहांहीरांमां॥
॥४॥॥ विसमलतांममनरमकंदरी॥५॥॥ पंचुंनविजुं
होयसुबुरी॥६॥॥ कहेकबीरमैनयादिवांनः॥ मन
वाभुमिभुमिसहजिसमानां॥७॥॥ ॥८॥॥
मुलनांकरल्योन्नावधुदाई॥ इदिविधिजीवका
नरमंजाई॥९॥॥ सरजीवांनानैदेहिविनासे
माटीविसमलकीताः॥ जातिमरुपीहधिआयाः
कहेहलालक्याकीताः॥१०॥॥ बेदकतेबकाजाबकु
जुगः॥ जुगजोनविचारेः॥ सबघटि एक एक करि
जानैः॥ नीइजाकरिमारेः॥११॥॥ ऊकरीमारैदकदक
करिबोलैः॥ सबेजीवसांइप्यारेः॥ उबरोगेकिमजो
लैः॥१२॥॥ दिलनहीपाकपाकनहीचीनाः॥ उमका
मरमनजानां॥ कहेकबीरनिस्तिछिटकाई॥ दोजग
हीमनमानां॥१३॥॥ ॥१४॥॥ याकरीमबलिहि
मनितेरी॥ वाक एकसुरतिबकतेरी॥ देकः॥१५॥॥ अर
धगगनमैनीरजमायाः॥ बरुतनांति करिनीरनिपा
याः॥१६॥॥ अवलिआलमपीरमुलानां॥ ते
रीमिफति॥ करिअयेदिवांनः॥१७॥॥ कहेकबीर
इऊहेतबिचाराः॥ आरबयारबयारहंमाराः॥१८॥॥
॥१९॥॥ देहुरिकवनकवनगुनतोराः॥ मुनिसुनिम

गननं यामममोराः ॥ टिकं ॥ ११ ॥ ये सही गिनत उवार
 नही पारुः ॥ अस बिचारदास न हिरदै धारुः ॥ २ ॥
 कहै कबीर गुनज्ञान कुजांनोः ॥ अन जे पद मेरा मन
 मांनो ॥ ३ ॥ २० ॥ ॥ काहे कुंरी नलनी तुं कुमि
 लां नीः ॥ ते रे ही नालि सरोवर पां नीः ॥ टिक ॥ ११ ॥ जल
 मे उत पति जल मे बासः ॥ जल मे नलनी तोर निवा
 सः ॥ २ ॥ नां तलित पति न उप नि आ गिः ॥ तोर हेत क
 रुं का स नि ला गि ॥ ३ ॥ कहै कबीर जे उदक समां
 नः ॥ ते नही मुये हमारे जानः ॥ ४ ॥ २२ ॥ ॥
 अब उर उर उर ही मांनोः ॥ जब ते मोर तोर पहिवां
 नांः टिक ॥ १ ॥ जब लग मोर मोर मे की जांः ॥ नवल
 वजा स नई मति ही नांः ॥ २ ॥ कहै कबीर मोरा मे मो
 रीः ॥ अब हेरां म अबर नही कोईः ॥ ३ ॥ १०० ॥ ॥
 ॥ मे नां ही नां ही कुकु मे नाः ॥ जे कुकु आदि अबै ह
 रितेराः ॥ टिक ॥ १ ॥ ममताः ॥ एक विषे मूलः ॥ चेत
 न देषिक वन न म नूलाः ॥ २ ॥ मुधा एकर अनिक
 टक दोरीः ॥ पीवै नां हि अलप मति घोरीः ॥ ३ ॥
 स्वातिक सीतल मन करि धीराः ॥ रै म मे र मिर
 ह्या कबीराः ॥ ४ ॥ १०१ ॥ अब ते ह सिधनु मे क कुनां
 हीः ॥ पंडित पटि अनि मांन न जां हीः ॥ १ ॥ टिकः ॥ मे
 मे जब लग मे की जांः ॥ तब लग मे करतान ही न
 ॥ २ ॥ कहै कबीर मुन कुन र नां हीः ॥

कैमांही॥३॥१०२॥ बोलनां क्या कहियैरेनाई॥ बोलत
बोलततनसां॥ टिक॥१॥ बोलतबोलतबड़े बिकारा
बिनबोल्यां कहुं होय विचारा॥२॥ संतमिलै कहुं क
हीयै कहियै॥ मिलै अशंतसुं निगहिरहीयै॥ ज्ञानी
सुं बोल्यां हितकारी॥ मूरखसुं बोल्यां जषमारी॥३॥ क
हेकबीरआधाघटडोलै॥ नस्यो होय तो मुषानबोलै॥
॥४॥१०३॥ ॥ काहेकुं नरद्वारकाजयकुं॥ अर
धेनां वपरमपदपयकुं॥ टिक॥१॥ नैनतराजुवेदन
पंशेरी॥ रांमकोनां मतुलौ केरकेरी॥२॥ रांमनां म
हीरां व्याहार॥ कहेकबीरनजि सो आधार॥३॥॥
॥१०४॥ ॥ वागरदेसलवनकाधरदै॥ नहांजिनज
काकनकाउरदै॥ टिक॥१॥ सबजगदेहूंकोईन
धीरा॥ परतधुरिमिरकहतअबीरा॥२॥ नतहांम
रवरनतहांपांनी॥ नतहांसतगुरुसाधूकांनी॥
॥३॥ नतहांविरषनतहांबाया॥ मायारंगविलास
उपाया॥४॥ नतहांकोकिलनतहांसुवा॥ उचे
चढिचढिहंसासुवा॥५॥ देसमालवौगहनगंजी
रा॥ उगाउगराटीपगपगनीर॥६॥ कहेकबीरथरही
मनमानां॥ गुंजैकागुउगुंजैहीजांनं॥७॥१०५॥ ॥
अवधूजांनिराषिमनठाहर॥ जोकहुषोजौ सोउम
हीपैहै॥ काहेकौजरमौबाहर॥ टिक॥१॥ मैमैमेटिसा
चकरिमुद्रा॥ आसनमिलिद्रिढकीजै॥ अनहदम
बदंगरीबीकीजै॥ तहांजोगीमनधीजै॥२॥ सत्यकरि

षमर विमा करि जो लीः झां न बि नूतिल गाई उ ल टि
पवन जरा धरि जो गीः सी गी सुम्य बजाई धी टं नीतर जि
रवर वन मंडा धरं नीतरि सात समंदाः घट ही नीतर ता
रामंडलः घट नीतर रवि चंदाः ॥ ७ ॥ नाटक चेटक नै रं
कुल वाइन मे जोग न होई कहै कबीर रमता मुं देही बा दि
न को ई ॥ १० ॥ अं व धू जोगी जग ते न्यारा ॥ मुद्रा निरति सु
तिक रि सी गी नादन धं डे धरा ॥ टेक ॥ ११ ॥ वसो नगर मे ड
नीन दे मेः चेतन चौ डै बैठाः च दि आका म आसन नही
बा डैः पीवै महार म सी गी ॥ १२ ॥ परगटकं था माहे जोगी ॥
दयनि मे दिल जो वैः सहसा इक स हूँ भोगाः निहवै ना
कै जो वै ॥ १३ ॥ ब्रह्म अगनि मै काया जारेः त्रिकुटी संग
मजा गी ॥ कहै कबीर मो ई जोग सर सहज मुन्य लो लाः
गो ॥ १४ ॥ १० ॥ ॥ अवधू गगन मंडल धर की जो ॥ अ
मृत ऊरे सदा मुष उ पजेः बंकना लिर म पी जे ॥ टेक ॥
॥ ११ ॥ पुलसा धि सरग गन समानाः सुषमना पोत ला
गी ॥ काम को धरो उ नया बली ताः तहां जोग नी जा गी
॥ १२ ॥ मन वा जाय दर वै बैठाः मगन नयार मिला गाः क
है कबीर जिय संझा नां हीः सब द अना हृद बा गा ॥ १३ ॥
॥ १० ॥ ॥ को ई पीवै रे सरा मनां मकाः जो पीवै मो
जोगी रे ॥ संतौ से बा करौ रा मे को ॥ और न ड जानी गी रे
॥ टेक ॥ ११ ॥ चंद सर दोय ना वी की काः सुषमन विग
वा ला गी रे ॥ अमृत रूपी सां चौ पुरयो मेरी त्रि स्तां ना
गि रे ॥ १२ ॥ और स बैर स फी का नया बल अगनि पर
जा री रे ॥ ईसर गौरी पीवन लागेः रां मत नी मति वाल रे
॥ १३ ॥ इसर स पीवै गुगा ग हिलाः ताकी को ई न

[illegible]

कंबरोजाप्रतिमनिवाजाः॥इनकेहरबदिमादे
वदिजसुजाग्यारसिगंगदिवाजाः॥२॥उंरकमसी
तिदेऊरैहीडःउऊवांरांमषुदाई।जहांमसीतिदे
ऊरांनोहीःमहांकाकीठऊराई॥३॥हीउउरक
डुवेरहहृटीःरूटीऊरुकनराई।अरधउरध
दसुंदिमिजितितितिःहरिरह्यारांमराई॥४॥
कहेकबीरादासफकीराः।अपनांनिचलन
ई॥हीउउरककर्करनाएकोतागतिलषीन
जाई॥५॥१११॥ ॥रागजोडी॥उलहनि
गावऊमंगलचारःहमधरिआयेहैरांमनरतारः॥
॥टेक॥१॥तनरतकरिमैमनरतकरिहैः।पंतत्व
बरयातीः।रांमदेवमेरेपांऊनेआयेहैःमैजोवन
मैमातीः॥२॥अरीरसरोवरवेदीरचिह्नःब्रह्मा
वेदउचाराः।रांमदेवसंगिनावरिलेहैःधनिधनि
जागहैमारा॥३॥मुरतेतीमुंकोतिकआयेःमुनिय
रसहसईव्यासीःकहेकबीरहमब्याहिचलेहैः।
पुरुषएकअबिनासीः॥४॥ ॥हेनानीडुंलषी
एचिह्नणीःसूतबरोबरल्योईहणीः॥टेक॥१॥या
सूतकामरमनयायाःमोटाकातिरजनमगमाया
अपणेरांमजीमुंषउंउकीनीःगुडसाटैतैगाजर
लीनीः॥२॥कहेकबीरतुंलावालितरीः।नाते।
रांमजीकेचितमुउतरीः॥३॥

॥ अथ सैयवद्वारेयववैवसुज्ञानमसहजसमाधि
सुखैरदिवौकौटिकलमविक्रमः॥ देवकाः॥ पुन
क्रियालक्रियाजवकोतीः दिवदैकवलवकाः॥
समाहितमदकुदिसिद्ध्याः परमलोतित्रकाः॥ ३॥
सुखकउज्जधनंकरलीवैः का लअहरीलागाः॥ उद
कासरतिपिकीयमयातोः शोर्वैतैजवजागमाः॥ ४॥
अथमतिमकलअतुरनदेव्याः कदतांकरातजा
हिसैवकरैमनहीमनरह्यैः सुखैजनिमिगही॥
पुनरवितं स्वतरवरकलीयाः विनिकरतुरव
जायाः॥ तारीवितं नीवग्रदमरोयाः सहजनुपको
पायाः॥ ५॥ देवतकाननयोतनवकंवतः दिनकां
तीतनसांकां॥ उज्ज विरुगमयोजनपायाः जैत
लजलदिसांकां॥ ६॥ सुखदेववक्रुतिनहो
वृत्तं कवेउदिकनती॥ ७॥ अगमनमएकहो
कदतां॥ आदेववक्रुतिनकां॥ ८॥ आगामैजव
आमतिरयाः आमनवेआगाम्याः आमैकद
तकुनतकुनिआमनः आमनपैआगाम्याः॥ ९॥
अथतैमरवैजगीः आमनपैआमनसातां॥ कहेक
दीजवआशविनयाः विदिगवाकवतजातां॥
॥ आववैऊंनोदिवैकनं॥ अकैतौवेनदी
जिदेमकां॥ अमकवैकैकैकसकावदेदि
विदवैतैत्याः॥ १०॥

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ कवितः ॥ वातनतै गोरक्षकबीरगानत
त्वया यौ वातनतै संत असमदहतपुजा तु है ॥ वातनतै भूत
प्रेत डावन बुलाई बोले वातनतै कारीनाग विष उतरात
है ॥ वातनतै दार होत त्रार से न हजात करु वातनतै रक
पत स्यादतै मिलात है ॥ अम कदै दह वात वात विना
लौन वात वात कर जानी दै तो वात कराना न है ॥ १ ॥ साधो
है शिले कचूक वित गीत नाद बजोत सकी सीध समर हत
गरूर मै ॥ साधो सो दागरी सराफी यूब जा जी सीधो लायत
को फेर फार हो जात क्रूर मै ॥ साधो सब जे त्र सं त्र त्र करू
सीधली दो चि लपुराण सब सीधली दो ऊर मै ॥ साधो स
ब वात यात नियट सया नौ त दो बोल बोन सीधो सब सीधो
गवा धूर मै ॥ २ ॥ कपरा को रों स जानै देवर की दो ससत नै
न्यावरु निवर जानै जरी त जानबो ॥ लखण तो ब ती सजा
नै राग तो ब ती सजा नै चूय चतराई जानै मेहल न को मानबो
काद जानै स्वाद जानै सगपन रुसा ध जानै रतन यरिषा जान
नै अरधन को आनबो ॥ कहे तुर सी दास ए तो जान
को नै कांम विनार यु नाथ जानै हूँ दास सब जानबो ॥ ३ ॥

॥ कवित्वं यैः ॥ विषयमेव जै विजै प्रबलबलमंगल
 कारीः । नंदमुनंदमुनेद्वन्द्वजगामेहरीः । वी
 प्रचंडपुनीतवनीतकुमुदकमाळकरनालेः । श्री
 लसुमीलसुमेननावनगर्तनप्रतिपालेः । लि
 षमीपतिपीननप्रवीननजनानंदनगर्तनेह
 दः । मोचितमतिः ॥ नित्यनित्यनित्यजहारहेत
 हानारायनपदपारमदः ॥ १॥ न्यायशास्त्रकलाहे
 जगदस्विरवासीमाम्बुसास्त्रमांदिश्रमयाद्वल्ले
 देः । विषयमास्त्रमांदिश्रमयाद्वल्ले । विषयमास्त्रमांदि
 लिमास्त्रमांदिजोगवादल्ले । विषयमास्त्रमांदि
 दिउनिश्रुतिउरमवादिदंगमास्त्रमांदिजल
 वादल्ले । सुंदरकलपदमास्त्रमांदिनकोवादि
 जोकेप्रमुनवर्गानमोतोवादिमेनवलोदे । ॥ २ ॥

॥ अथ श्रीजोतिषरूपनिरंजनदेवपरब्रह्मणेनमः ॥
 अथ सिद्धांतसारग्रंथं लिख्यते ॥ इह ॥ सतचैतन्या
 नंदमयमहाप्रकाशकश्चादि ॥ ग्यानरूपश्रुगुन
 रहितश्चैसोजानोतादि ॥ १ ॥ इष्टां जानिसरूपद्वेषि
 यताह्नुनिजरूप ॥ प्रियताकूमायासमुजिसोफिर
 नइश्रुतय ॥ २ ॥ महाप्रबलसामर्थ्यतैमायाकस्यो
 प्रकाश ॥ बह्वस्योप्रकृतस्फुजायतैउपज्योत्रिगु
 नबिलास ॥ ३ ॥ तवतैफैल्योनरमयदविधिविधि
 नानारीत ॥ विनाश्रुगुहतादिफुनिसक्योनको
 ऊज्जीत ॥ ४ ॥ नरमकस्योदेवसुतैइश्वरनिनप्रका
 श ॥ निगुनसगुनएमानफिरनरमचल्योबोहार ॥
 ५ ॥ नरमकस्योकरतीसगुननरमश्रुकरताकीन
 निरविसेससविसेसधैकीनेनरमनवीन ॥ ६ ॥ नि
 गुनसगुनपरिनरमनैकस्योबोहतविस्तार ॥ ता
 कौकबह्वहोतनदिकाह्वतैनिरवार ॥ ७ ॥ नरम
 करीनिजरूपलेतादिश्रविद्याजान ॥ आवरनरु
 विबेयएसक्तिदइधैमान ॥ ८ ॥ नरमकस्योश्रुका
 सफुनिनरमकस्योदेबाय ॥ तेजनीरश्रुभूमरु
 कीनीनरमवनाय ॥ ९ ॥ नानाकीनेजीवभ्रमताह
 मेधैरीत ॥ बह्वश्रंसश्रविबिंनहैश्रुयतिबिंबश्र
 तीत ॥ १० ॥ पंचतत्त्वएनरमकितपंचीकितफिरकीन

॥ इहिविधिरचिन्मः बिस्वसबसतितां क्वरदीना ॥ १२ ॥
 ॥ स्वेदजअं हजउदिबिजरुकरेजरायुजजांनि ॥ नर
 मरवीदेजीवकी इहिविधिब्यारुषांनि ॥ १३ ॥ नरमकि
 येणकरमसबकरिकीनोनिरधार ॥ करमलगयेमां
 नसनओरनतेनिरवार ॥ १४ ॥ करमजीवएनरमने
 दोउकरेअनादि ॥ कोनअंचनोकीजीयेजिनकैदे
 भ्रमआदि ॥ १५ ॥ विविधिकरमकीनेनरमसंचित
 अरुक्रियमांन ॥ ओरप्रारबंधतीसरेभ्रमकेषेल
 निदान ॥ १६ ॥ नरमकस्योदैकरमबसपरतेजिय
 कोअंनि ॥ करतभोगफिरतेरहतिथोदीत्योयद
 मांनि ॥ १७ ॥ अंतहकनकरिभ्रमनेकीयेनेदएया
 रसंकलयविकल्पमनकरेनिश्चेबुद्धिनिरधा
 र ॥ १८ ॥ निश्चेजाकुबुधिकरेसोसुधिरायेचित ॥
 करतामांनेआपकौअहंकारकीवृता ॥ १९ ॥ इहिवि
 धिकरिणनरमनेइडीकरेबनाय ॥ अवनसुन
 तदेष्टतडिगनपरसतपरससुनाय ॥ २० ॥ रसना
 रसरुनरमतेभ्रमतेआघ्राघ्रांन ॥ करमेडीकारज
 सहितभ्रमहीकरेप्रमाण ॥ २१ ॥ नरमकीयेजेकरम
 दैतिनतेजगमेजाया ॥ मातपितासंजोगतेंपुत्रनयो
 दैआया ॥ २२ ॥ नरमपितामातानरमनरमेपुत्रस्वरु
 प ॥ नरमानंदबंधायमननरमकहायोत्तय ॥ २३ ॥

नरमगोत्रनरमेवरनरमधारयोनांवा॥नरमअनंदित
 धिदृजयो नरमअनंदितगांवा॥२३॥नरमनखतजन
 म्योन्नलेनलेनवौगृहजोगा॥बौहतहोइगीआयब
 लबोहोतकरैगोन्नोगा॥२४॥योतादेखैसुखनयो
 चाचाप्रबतबाता॥इयात्यावतषेलनेबहिनगोद
 लेजात॥२५॥नाभीदेखसिदातमनमोसीबलबल
 जात॥कुफीजुलावतपालनैजूलतदेदिनरात
 ॥२६॥दिनदिनअबवढतेचल्योत्योंत्योंनमरू
 साद्य॥पढिबेलायकदेखकैदयोवियकैदाय
 ॥२७॥ब्रह्मचारीकैगुरुनिकटबैव्योदेवितला
 य॥जोजोसंथादेतगुरुसोसोपढितवनाय॥२८
 ॥पढतपढतपंडितनयोमनमैधस्योगुमान॥
 कोमोसोअबबोलतदेयहकरिरह्योप्रमान॥
 २९॥पितापुत्रजान्योपड्योतबलेअयोगद
 गुरदबनादेविषकोअरुकीनोबहुनेहा॥३०
 ॥पितसंगाइपुत्रकीकरिकैकस्योविवाद
 न्यातगोतसबहीमिलेमनमैधरेउबाहा॥३१॥
 ब्रह्मभोजननकैदयोदबनाहुफिरदीनाबो
 दतदयोबंदीजननिसबविधितैजसलीना॥
 ॥३२॥नरमखेलनरमैपड्योनरमकीयोब्रह्मच
 री॥अस्थनयोअबनरमैदेखोनरमआश्चर्य॥३३

ततजिपापकंदेधोभरमसंताया॥३४॥क्रियाव
जोबनबव्योबिद्या॥३५॥कोअभिमाना॥दानि
रसुंदरमहासबकोउकरैप्रमाना॥३५॥कां
निसुनजसआपनोगरबधरितमनमांदि॥करत
भासुनकरमयेअपबसलैकबुनांदि॥३६॥पु
कलत्रधनधामअरुसेवकसुजनसनेहाइन
लैसुखविस्वसमैतिकरिजांजान्योगेह॥३७॥
कदिनासोवतहुतौपह्योसुपनमैजायादिषेतौ
कपुरुषदैतिनयहलीयोबुलाया॥३८॥रियेम
कहिलेचल्योआगेआपनदेया॥चलेजातवनस
नमैपुरसआदिपदोश॥३९॥चलेजातइनयहक
हीआगेनगरअन्या॥सबपुरवासीयुकह्योइह
नहीकोउभया॥४०॥पवयोमोहसवनमिलप्र
ममिलैसोल्याउ॥महानगरअरुदेसकौताकौक
रियेराज॥४१॥तातेमनआनंदधरितौकौदैदेराज
देसनगरपुरग्रामहुंनिहयगयसकलसमाज॥
४२॥असैसुनिकैमनविषेधह्योदरखउबहाल
४३॥वह॥४३॥जत
हि॥दोउक
४४॥तहाप

कबेरीजुरीइकषेवटतामादि ॥
बेचंदाउनावपरिचलनयारकोजांदि ॥४॥ बीघधा
रमेंजबगयेतबवदबूडीनाव ॥ महात्वरजलजोर
मेंतैसीदीफिरबाव ॥ ॥ ॥ ब्रह्मत्याकोजलविषे
लकगलांयाहाथा ॥ तादिगदबदतैवल्यो जल
प्रवादकेसाया ॥ ४॥ ॥ बहतबहतलकराकह
टाप्रलांयाजाय ॥ तापरदेधोमगरइकनिश्चैजां
न्यायाया ॥ ४६॥ मानसदेधोमगरनैयकरनआ
योधाइ ॥ गह्योजांनिअतित्रासतंतबजाग्योअ
कुलाइ ॥ ॥ ॥ जागैरुबिनएकईमिटोतम
नैतंत्रास ॥ सुपनजांनजांन्योयदैप्रबलनरमकोषा
सा ॥ ॥ ॥ अैसेबीतेबाहतदिनरागवैषकेमादिअ
बकीजेसाधनकवृजीबोनिश्चैनांदि ॥ ४७॥ जा
मोप्रबीतिनकदीमनरुकर्योविचार ॥ बांनप्र
स्थअवकिजीयैयहकीनोतिरधार ॥ ४८॥ देखिम
रुरतपुत्रकौंयाय्योअपनीठोर ॥ कुलमारगको
वाडिकैजितमनधारैशोर ॥ ४९॥ सुजनसनेदीसो
कह्योयासौंकरियोधीत ॥ तादीविधनिखादीया
जोमोसोहीरीता ॥ ५०॥ यहकदिकेधरसोवल्यो
लइभारजासंग ॥ जाइकुटीकरियासकीरंदेनि
कटतटगंग ॥ ५१॥ स्नानकरतनितनैमप्रतिनि

बादेतवनाया॥मनलगाइपूजैरिखनकथासुनन
झुंजाया॥५६॥कथासुनतरोवतरदेरीऊरीऊमन
मांहायदेसोचमनमैकरैकहाकरूकहानादि
॥५७॥सोचकरैसंतापसुखतअतिसंकुचाता॥
कासोसुखजायकैअपनैमनकीवाता॥५८॥को
मोसोकहिदेदइमरैहीतकीजियेया॥जातेयाजिये
देहकीपरममत्ताइहोया॥५९॥सोचतहीकेते
कदिनांअसैगयेविहाया॥कथासुनैदरसनकरै
नितप्रतिआवेजाया॥६०॥कथासुनतइकदिन
सुन्योसाधनकरियेजाया॥ग्यानपायतिअबो
ऊरआवागवननहोया॥६१॥तबज्ञपुब्योविने
करिसाधनदेइवताया॥कहियेनीकैविधसहित
जेहैमुक्तिउपाया॥६२॥सुखतलुमकोमांनिगुस्त
दियेहोयक्रियाला॥लुमविनअोरउपाइनहिकाव
नकोभ्रमजाला॥६३॥विनैवचनसुनिमुनिकह्यो
वितकोकरिविश्रामा॥साधनसबनीकैकरूतिन
तैकैहैकामा॥६४॥प्रथमजमरुफिरिनैमुकरिआ
सनजोसुखसाध॥प्रांनायांमहिकरिकरौप्रांन
अपनैबाध॥६५॥बौहौस्योप्रत्याहारकरिसवदि
सतैमनल्याइ॥मनधिरसोइधारनाअोरनकितरुजा

६॥ ध्यास्यो मनजो एकदिसधस्योरहोतिदिवोर॥
 सोइनिश्चैध्यानदेमनकीचालनशोर॥६॥ ध्याताध्या
 नरुधेयजबनएकरसजान॥ जहांनासनासेनही
 तादिसमाधवषांनि॥६॥ यादिजानिअष्टांगतय
 दैकदावेजोग॥ याकेसाधेदेतनदिफिरिपंच
 कोभोग॥६॥ एतनीकेसाधिकरिमोसौकदिये
 आइ॥ विधिपूर्वतोकोबडारिकदिहोग्यानसुना
 इ॥७॥ असेयसुनिमुनिवचनतबकरिबल्योपना
 म॥ साधनविधिसुनिमनधरीसाधौआवाजाम॥७॥
 १॥ आइकहोनिजनारिसोक्रियाकरीमुनिमोहि॥
 स्वागतिनिब्याअतिथहितयदसबकरनोतोहि॥७॥
 २॥ यदकहिरहोएकांतकेआसनधस्योविबाइ॥
 विधसोजमअरुनेमकोलापोकरनवनाइ॥७॥
 बुरेनचाहतशोरकोतादिअहिंसाजान॥ असतव
 चनबोलतनहीसतिकरिहोप्रमान॥७॥ विनदीने
 कबलेतनहीमनआसेयविचार रहोतारिज्यास
 गतजिबह्वर्जवितधारि॥७॥ ममतात्यागीसक
 लविधिअपरिग्रहसोआदि इदिविधिपंचप्रका
 रजमकरेकहोअंग॥७॥ चितइदीकोसुध
 करैसुखितयंदप्रमान॥ त्रिआत्यागसंतोषयद
 तपउपवासविधान॥७॥ करतअध्यातमया

वनिति स्वाधा यद्यहं ज्ञानां सिवचितं निबिन्नविन्न
 करत आहिय ह्येधनिधांति ॥ ७४ ॥ अत्रैसां च प्रकार
 सोसाधौ नैमुवनां ॥ मुनिसमरतुकरिमन विषैवे
 वै आसं जाइ ॥ ७५ ॥ आसतं वै विस्वचित्तकै हरक
 कुंभकरेच ॥ प्रांतायामप्रकारे ते करत पवनके
 पेच ॥ ७६ ॥ विषै विश्वते रोककै इन्द्रिजको संचार ॥ म
 नलगायला षो करन विधिसौ प्रत्याहार ॥ ७७ ॥ मुनि
 मुरति धरिमन विषै मन मूरति मेधारि ॥ इह विधिरा
 धीधारना दइ च यलता डारि ॥ ७८ ॥ न इ प्रोढ जव धा
 रना तबनां दिन जगनां ॥ मुनि मूरति यदमन मयौ
 अत्रैसां ग्यो ध्यान ॥ ७९ ॥ मूरति मन अरु जाननौ ती
 नौ गणविलाइ ॥ इह विधिरह्यो समाधि मे मुनि प्रता
 यतै जाइ ॥ ८० ॥ वीलेया हि समाधि मे केतिके दिन
 अरुरात ॥ ध्यान यांन अरु नीद विनु अत्रैसां काल विह
 त ॥ ८१ ॥ अत्रैसां सुनिवाकी दशा मुनि आये या पा
 स ॥ आय जगाये जतन करित बनावै आनास
 ॥ ८२ ॥ सिधल अगत नदी नै मुनिकों बंदन कीन
 ॥ तब मुनि धन यासू कह्यो लहिसमाधि में लीन ॥
 ८३ ॥ तब मुनि यासौ यौ कह्यो अब त्व करि संन्या
 स ॥ यदहनि अत्रै करि जांनि मूरकै दै ग्यान प्रकास ॥
 ८४ ॥

हावाकनयदेसकरिलैबैवैअपपास॥४॥त
बगुरुवासौयोंकह्योप्रथमआयकौजांनि॥तनइ
पीगननाहितंजादिरह्योहैमांनि॥५॥मेजास
तंकहत हैसोमतिजानेदेह॥इतीरैतनहीय
हनिश्चैकरिलैह॥६॥मनतेरौतननहीबुधि
तेरीतजांनि॥चितरुतेरौतनहीतन्यारोहैमांनि
॥७॥इनसबतैतआयकन्यारौकरिकैजांनि॥
चितजडकोसंजोगजोताहिआपंकरमांनि॥८॥
ऐसोरुतआपकौजिनसमुझैकनिवातागये
अविद्याअंसकैतंस्वरूपवहरात॥९॥मेकी
नौमैयोकरौमैकरिरुअवताहिदिषिअविद्या
अंसतैअहंकारयहयाहि॥१०॥अहंकारइ
हिरातिकोयहतैरौतनांनि॥करताचेतनआ
पकौयहैसमझअयमांनि॥११॥कह्योसमुझिस
बविश्वकौमिथ्याकरिमनमांनि॥एकआत्मा
अतिरकतऔरइसरोनांनि॥१२॥नांनाविधमा
सतजगतहेतुअविद्याताहि॥इश्वरजीवअभेद
तेनासअविद्याआहि॥१३॥देखअविद्यासतनही
नहीअसतकजांनि॥नांहिकहीवहसतअस
तअनिरबचनलीमांनि॥१४॥जांनिअविद्यारु
पबुमपरपकासतैनास॥याहिदिशावतताहि

सतजानोब्रह्मप्रकाशा॥१७०॥ अत्रविद्याकीसक्ति
द्वेषकारतैजानि॥ आवरनअरुविद्येयहैनामदोइ
एमाना॥१७१॥ जातैकबुनासैनदीकहैआवरनि
ताहि॥ अंतनासभासैकबूतबबिद्येयसूआदि
॥१७२॥ रीतअविद्याकीकहीलबनरूपसमेत
उपजाईउपजीनदीनईविश्वकोहेता॥१७३॥
ग्याननयेतैहोतहैयाकोनासप्रमानायाहिअवि
द्याकोंसमुजिनिश्चैहैअग्यान॥१७४॥ ग्याननये
अग्यानकहिरहैकहांकिहिवैरा॥ निजस्वरूप
समुज्योतबैताहिहसरोऔर॥१७५॥ तेरोहीसब
रूपहैयदनिश्चैकरिजाना॥ नानाविधिनासत
तजअपन्यारेमतिमानि॥१७६॥ इस्वरमायातै
नयोसोमायाकरिइरि॥ ईश्वरमितिसोइतयोऊ
तोजयईलैमूरा॥१७७॥ असैदीयदजानतजिव
अविद्याकीना॥ जीवब्रह्मतैनिननदीनयेअवि
द्याहीन॥१७८॥ मिटैअविद्यादेयब्रमायाको
नहिनाना॥ एकयनैमैतबकहौघाहैकौनप्रमा
ना॥१७९॥ असैहीनिजरूपकोप्रलैसमुजिअ
प्रमाहि॥ जेजेदेयततैमवैतोतेन्यारेना

तातेसगरेरूपएवाकौजानिस्वरूप॥१११॥वैदेवापव
कवैदेवदेएकदेजानि॥संघाकौसोएकनदिइजे
नुयदनादि॥११२॥नांनाविधसोहैकहासबकहि
सोकादि॥इस्यकहादरसनकहाकहिदिष्टाको
हि॥११३॥कहाभासभासैकहाकहांभासअवका
॥जहांस्वरूपनिजग्यांतकौहरनजोतिप्रकाश॥११४॥
असैकहिकैयो कह्योश्रवननयोसबतोहि॥कवि
नीकैतमननकरिदसाआयनीमोहि॥११५॥तुमध
नापकीनौमननिनयोतिहिकाल॥विनांअनुग्रह
नकेकोकाटैनुमजाल॥११६॥कहौबातहुआयनी
फनियेअनुचितलाय॥क्रियातुमारीतैदसामोकौं
नइजुआय॥११७॥नरमघृतनरमेपीतामातानर
रस्वरूप॥नरमनारज्याहितसहितदेख्यो नरमअन
र॥११८॥नरमगोत्रनरमेवरननरमकहावैजाति॥
नरमनांवलैलैकदतजैसैजादिसुहाति॥११९॥ब
तुचारीकै नरमतेअमकीनौगुरुमानि॥यदनयढाव
नहाररूपदौऊनमजानि॥१२०॥नरमयडोहरन
नरमनरमधख्योअनिमानि॥नरमऔरतैआपकुजा
तअधिकप्रमानि॥१२१॥नरमेहमैआइकुनिकि
नरमविवाद॥नरमकहाइनायकानरमकहा
ननाह॥१२२॥नरमथापकुलदेवको नरमगिह

स्थधारा॥ प्रजाप्रतिमानरमणनरमैषजनंदारा॥ १२३॥
 नरमदोनिप्रतिग्रहनरमनरमैतीरथजाति॥ नरम
 स्नानउपवासरुनरमनेमनितयात॥ १२४॥ नरम
 सुकितडुकितनरमनरमंजानिविस्वास॥ नरमते
 चादतफलनरमनरमतेमानतत्रांस॥ १२५॥ नरम
 जाग्रतनरमैसुयननरमंफोपतत्राहिहितैत्र
 मयदएकदीत्रिवधेकदायोकाहि॥ १२६॥ नर
 मत्रायैकमानिकैनरमधरीयदचाहि॥ नरमध
 तिष्टाजागतैमसुनिनरमधसोउबाह॥ १२७॥ नरम
 असत्रिष्टो नरमनरमधुत्रपरवारा॥ सजनसनेही
 रुनरमनरमपरसपरय्यार॥ १२८॥ नरमलानेहान
 नरमनरमसोकउबाह॥ नरमउपायनरमैजतन
 नरमकरनतिरवाह॥ १२९॥ नरमवादिउदिमनर
 मनरमहारअरुजीता॥ नरमचलनबेवननरमन
 रमैरीतकुरीता॥ १३०॥ नरमदेसनरमैनगरनरम
 आहिसबगावा॥ नरमबसेअरुअतबसेनरमैवा
 वकुवांवा॥ १३१॥ नरमममतमनेमधैरनरमनिवा
 सीलोगा॥ नरमअनंदितकैरदेनरममानिकै नोग
 ॥ १३२॥ ३३ ॥
 एकएककौ नरमतेदेवोकरतअदेव॥ १३३॥

मसुदेसविदेसहृत्तरमैदेसाचार॥ परेतरमबसक
रतणनांताविधव्योहार॥ १२३४॥ तरमकुटंबपरि
वारसबतरमग्रिहस्थावासा॥ तरमउद्दासीतरम
एवानप्रस्थसन्ध्यास॥ १२३५॥ पंचअग्नितायनतर
मन्त्रमधीयमरितिमांदि॥ त्रमवरषामैवैतनौस
द्वनमेहवितबांदा॥ १२३६॥ तरमसीतरितिमेनि
साभ्रमपैवनजलत्वीच॥ ध्रमपांनभ्रमतेकरैआ
गिबारिकैनीचा॥ १२३७॥ तरमकरितपरिद्विना
भ्रमवैवनइकवैरा॥ त्रमतेवाढेनैमुगदिलेहेन
भ्रमकेत्येरा॥ १२३८॥ तरमबाऊऊरधकरैतरम
लेनव्रतमौना॥ तरमद्रिष्टऊरधधरीभ्रमतेबच्चो
सुकोना॥ १२३९॥ तरमत्यागअनकोकरततरम
करतपेयांन॥ त्रमदीयहनिश्चैकहोइततेमुक्ति
प्रमांन॥ १२४०॥ जमजोयांचप्रकारकोसोउतरम
प्रतीत॥ नैमुकरनफिरपंचविधयहेनरमकी
रीत॥ १२४१॥ आसनप्रांतायांमरूपमुनितरमप्र
कारा॥ तरमेदिसदिसरोधिभ्रमतरमेपत्याहार
॥ १२४२॥ तरमधारणाध्यांनभ्रमतरमेआहिसम
धि॥ जेतेसाधनतेसबैहैकेवलभ्रमव्याधि॥ १२४३॥
श॥ साधनअकरनकरनकुनिपसबतरमकल
लचितथिरायनअचलकरतरमेकालअमोल॥

॥१४४॥साधनकरिफलवांछनौअनिकीनैप्रतिवा
या॥भ्रमतेकुतिप्राश्चितकरैकर्मवियाकदिषाय
॥१४५॥करतकरममनमेधरैस्वर्गादिककौभोग
विकलनपजानतनदीअसैभ्रमकैरोग॥१४६॥
सकलपदारथअनितएकबूकदेहैनित॥नित्या
नितविचारजोताकौभ्रमनिमत्त॥१४७॥सुख
मानतभ्रमतेभ्रमहीतैडुखदोया॥परमानंदसुख
एकहैभ्रमकीतेपदोया॥१४८॥भ्रमकीनोयह
विस्वहतामेभ्रमविलासा॥पूबनभ्रमकहनौभ्र
मभ्रमेधरतआस॥१४९॥भ्रमेगुरुसिषडभ्र
मभ्रमेवाकिविचारा॥पूर्वपबमसिषातहभ्रम
आदिनिर्धरा॥१५०॥अवनभ्रममनुनौभ्रमनि
दध्यासनभ्रमरूपासद्वारथहभ्रमेलेखनाभ्रम
अन्य॥१५१॥भ्रमजीवइस्वरभ्रमभ्रमकरन
हैएका॥भ्रममइयसवंगनौजेहहतअनेका॥१५
२॥नहिउपाधिइस्वरविषैअरुनाहिनविषय॥
नेदबुधिएकत्वमेभ्रमकरैआवेप॥१५३॥जो
उपाधिइस्वरविषैतौकोसकैनिवारि॥नहिउ
पाधिनिरुपाधिमैभ्रमेलेखविचारि॥१५४॥इ
स्वरतौएकैकहैअरुमानतजीवअनेका॥मुक्ति
होइगीतबकहैजबकहैएका॥१५५॥

धिदोउमिटेमुक्ति कहेतवदो॥१५॥ एकजीवसेसा
 थदीइस्वरनासोयो॥१५॥ एतेजीवनकीमुक्ति
 इदिविधि कैसैदो॥ कासो करीवै एकताइस्वर
 नां हिनदो॥१५॥ नदीउपाधिइस्वरविषेनां हि
 नतादिविषेय॥ निरविसैसइस्वरसदानिरविका
 रनिरलेय॥१५॥ निरिसुधअरुगुनरहेतकेव
 लबोधप्रकास॥ ताकौकैसैदोइगोजीवजीवसं
 गनास॥१५॥ यदैनितिइस्वरयद्वैयद्वैवल्लनिर
 धार॥ व्यापयद्वैव्यापकयद्वैयद्वैअनंतअपार॥
 १६॥ कहितयाहिसुउपाधिजेतेदीआहिअण
 ना॥ परेअविद्याजालमैतिनयहकसोप्रमाना॥
 १६॥ अपअपनेआरोपतेइस्वरकसोसोदो
 ष॥ तिनकोअपनीभूल तेदोनानाहिसंतोष
 १६॥ सगुनदोषइस्वरविषे जेमानंतअणान
 तेसदोषयाविश्वकोसांचेकरतप्रमान॥१६॥
 ॥ जीवभरमइस्वरभरमभरमडुक्रमैदोष॥ भरम
 मिलावनदोइकोभरमगवैसंतोष॥१६॥ सुन
 नभरमकहनौभरमभरमअरथअरुवात॥ मान
 नअनमाननसबैभरमसायणजात॥१६॥ स
 कलविश्वनासतऊतौ॥ नानाविधबडरीत॥
 सोसबअवएकैतयो॥ कितवदगइपतीता॥१६॥

देहभ्रमइडीतरममनबुधितरमस्वरूपा॥अद्वैतारय
रुचिततरमभ्रमन्यारौमैरूपा॥२६॥गतभित्तार
अतंदमयग्यानरूपस्वयकासा॥नितगयवरा॥२७॥
हैसंबकरिजोनैतासा॥२८॥पुरुवादीयगंधान
हैसिषकहीयैकोमांना॥अद्वैतधोयैविनायग॥
तंदनिरवांना॥२९॥हृदयधोयैसिद्धांतगंधासंधा
गंधा॥अद्वैतधोयैविनायगमनंदनिरवांना॥३०॥
कोमांततयतमांतनैवर्त्तिकादिप्रमांतप्रदंयत
शेषैविनायगमातंदनिरवांना॥३१॥कदापततय
तुमांततकदापततयमांत॥अद्वैतधोयैविना
तरमातंदनिरवांना॥३२॥अद्वैतधोयैविनायग
मौनकोधांत॥अद्वैतधोयैविनायगमांतनिर
वांना॥३३॥कदापततयतप्रिकायंयनअद्वैत
गंत॥अद्वैतधोयैविनायगमनंदनिरवांना॥३४॥
अद्वैतधोयैविनायगमनंदनिरवांना॥३५॥
अद्वैतधोयैविनायगमनंदनिरवांना॥३६॥
अद्वैतधोयैविनायगमनंदनिरवांना॥३७॥
अद्वैतधोयैविनायगमनंदनिरवांना॥३८॥
अद्वैतधोयैविनायगमनंदनिरवांना॥३९॥
अद्वैतधोयैविनायगमनंदनिरवांना॥४०॥

बांन॥१३४॥ कासौकोअपरोबदेकाकोअननवणा
 ना॥अदंब्रह्मधोवैविनांयरमानंदनिरबांन॥१३५॥
 अदंसद्वउद्यारमेधोवै कीसीरीत॥देतोनाहीइस
 रौयेकबूहेतप्रतीत॥१३६॥ कह्यो जदंतलोकहि
 सक्कोरह्योसद्वसंचार॥अनबोलैकैयदकह्योनां
 दिनवारापार॥१३७॥ मनमैमुनिसुषपायकैकह्यो
 तोहिसांवास॥ज्योकोतोतोकोभयोप्ररनग्यांन
 प्रकास॥१३८॥ मुक्तदसातेरीसुनैतयोपरमसुष
 मोदि॥निश्चैमैजान्योअबैमिद्यो नरमनैतोदि॥१३९
 ॥ नयोपरसपरयासमैपरमपवित्रविचार॥सिद्ध
 तसारयाग्रंथकोधर्योनांवनिर्धार॥१४०॥ सुनै
 सिद्धांतसारकोंजोनीकैमनत्ताय॥मुक्तिदौनको
 ताहिफिरिकरनौनादिउपाय॥१४१॥ कीनोज
 सवंतसिंघयदह्यात्मग्यानविचार॥कह्योकहां
 लौकहिसक्कोजकोनांदिनपार॥१४२॥ इति
 श्रीरत्नसंज्ञाश्रीजसवंतसिंघजीकृतसिद्धांत
 सारग्रंथसंपूर्णः॥ ॥श्रीरत्नः॥ ॥श्रीकल्याणः॥
 लिखतबोजाकृतदत्तश्रीआंबेसमध्येवैत्रमासेसं१३५॥

प्रमातेनमः॥ असिधांतबो॥ धलिष्यतां दोह
प्रकारकरिब्रह्मकोबंदो गुरुके पाइ॥ कीजे

क्रियादयालके जाते ससे जाइ॥ १॥ मिथ्यावाचा॥ मे
यह प्रस्ताव बोहत वोर सुन्यो देयै मेरो संदेह नाही
मिथो॥ ताते मे तुम सो प्रबो दो जु बुधिसो जान्यो जा
इहे कि ब्रह्म सुबुधि जानी जाइये॥ और साखरु मे सु
न्या दे जु ब्रह्म बुधि गायना ही॥ अरु यही सुन्यो दे जु
बुधि जड है॥ सुयह अरु क्रिया करि मोको समु
जय कहीये॥ गुरुवाचा॥ यह जु ते मो सो प्रबी सुयह
वडी वात है अति सूबम है तनी के मन लगाइ सुनि
ये॥ और जहां आसंका होइ तहां फेर प्रबीये॥ अब
सुनि तं जु बुधि क जड कहै ते तो पाये ग्यान सो अ
रु बुधिसो नेद कियो जाइगो॥ मिथ्यावाचा॥ कबु मे
रे मन असे आवै दे जु ग्यान जु है सुतो ब्रह्म स्वरूप है
ता मे तो अविद्या को असना ही और बुधि मे तो अविद्या
कही है और मन हू मे आवै ता ते बुधि जड कहै ज
यहे॥ गुरुवाचा॥ तस मुज्यो ते सेना ही बुधि दे सो बा
ध है तब देखि क बोध मे अरु ग्यान मे कहाने दहे को
कि ग्यान काराण है अरु बोध कार जहो॥ को ज्यो ब
धो जल अरु धन तो जल बध

जो चत्वारो है तो ऊज जल पनौ न गयो ॥ तैसे रूपान्तर
 बोध जान ॥ और अविद्या जु है सुइ न ते निन है अविद्या
 विषे मै है देधि जु कहै है कि बादर चंदमा कै आइ आये
 ॥ सुक बूचंदमा कै आन दी आये ॥ दिह के आन अ
 वै है ॥ तैसे ही जान जु अविद्या कबू बोधि मै नां दी मि
 ली ॥ अविद्या विषे मै है ॥ और देधि कि ग्यानी की बु
 धि की कौन अवस्था होइ है ॥ ग्यानी जु है सो विस्व मि
 थ्या समुजै है ॥ बोध मिथ्या क्यों कै समुजै ॥ और विस्
 मिथ्या समुजै तब विषे तो जे ते दे ते ते सब विस्व मै है
 और अविद्या रूप विस्व मै है ॥ ता ते विस्व मिटी ॥ विषे मि
 टी ॥ और विषे मिटी अविद्या मिटी तब डिश्य कबू न
 हो तब ग्यान कौ ॥ बोध कौ न कौ होइ ॥ तो तं युजा
 नि कि डिश्य न रहे ॥ बोध ग्यान स्वरूप कै रह्यो ॥ और
 तं जो यों जानै कि शास्त्र मै कह्यो है जु ब्रह्म बुधि मै कौ
 कै आवै सुअ सै नां दी कह्यो है ॥ कि बुधि मै अविद्या
 देता ते ब्रह्म न आवै सुतो तं समुजि अ सै कह्यो है
 जु बुधि ज्यो विषे कौ गंदे है तो ब्रह्म कौ नां दी गंदे
 ॥ कौ जु विषे मै अविद्या है ॥ तब डिश्य है और ब्रह्म
 मै तो अविद्या नां दी ता ते डिश्य नां दी ॥ ब्रह्म ग्यान
 ॥ अरु बोध रूपान्तर स्वरूप है ॥ यद्वत् नि
 संदेह करि जानि और बुधि मै जु ब्रह्म नां दी आवै

सो ज्योनेत्रविश्वकैदेव है ॥ पै अपन पौनां दी देयति ॥ और
 अपान अस बोध एनि संदेह करि एक ही जानि ॥ पै ब्रह्म के अ
 नुग्रह वित्त बोध न होइ ॥ यह प्रस्तावतौ मे ॥ तो सोनी
 केवनाइ कह्यो ॥ और कबू संदेह मन मै आवे सो प्रबिये
 ॥ सिधो वाच ॥ सब अस अरथ इन के प्रस्ताव को निर
 ने मे र मन मे कबूनी के नां दी नयौ ॥ को कि कोऊ कहै
 है सब अस अरथ एक है ॥ और कोऊ कहै कि सब अस
 अरथ ॥ न्यारे न्यारे है ॥ गुरु वाच ॥ सब अस अर
 थ जैसे तै कह्यो तैसे ही है ॥ एक है और न्यारे न्यारे
 है ॥ सिधो वाच ॥ यह तो मे याद तै प्रबो है एक है सो
 कौन प्रकार तै है ॥ और न्यारे न्यारे है सो कौन प्रकार
 तै है ॥ यह प्रसंग मो को क्रिया करि समुझाइ कहिये
 ॥ गुरु वाच ॥ सब अस अरथ ए दे पि जु दे है सो या नां
 ति है एक कोऊ वात कहै है ता के श्रोता अनेक है ॥ इ
 न एक वात कह्यो अस श्रोता जिते ऊते तिन अपने अप
 ने चित्त मे अरथ जु दी जु दी नांति समुज्जा ॥ तो दे पि जो अ
 रथ अस सब एक होत तौ जु दे जु दे का है तै समज्जा ॥
 तो त्रयै समुज्जि किया नांति सब अस अरथ न्यारे
 न्यारे है ॥ और परमारथ विषे सब अस अरथ एक है
 है ॥ को कि वेदांत कहै है कि सब अस अरथ एक ही

रहै। अरु परमारथ के सब अरु अर्थ एक हो। न यह असे
है कि जैसे घट पट सब है। उन को अरथ कहिये है जु
धरा अरु कपरा दे बियाले प्रे तो सब अरु अर्थ जु दे
ही है। पे सब को अरथ यह ना ही सब अरथ ब्रह्म ही
है। क्योंकि धरा अरु कपरा ए तो माय कहै मिथ्या
है। तो अर्थ मिथ्या के सै होइ। अर्थ तो सां चौ ही हो
इ। अरु सां चौ तो तब ही होइ। जब सब ब्रह्म होइ।
यह प्रसंग तो मैं तो कौं समुझाइ कह्यो। और ही क
बू आसं का होइ सो प्रबोच्यो। सिधौ वाच। जीव को
मनिये है कि आवरन है और यह वात सब को ऊ
कहै है। अरु सब को ऊ मानै है। ता तै आवरन तो
जो नियो है कि है। क्योंकि आवरन जो न होइ तो अ
पान कौं कहोइ। पे यह आवरन कौन विधि है
या आवरन कौं संदेह तुम ही तै मिटे। ता तै यह प्र
स्ताव किया करि कै मो को नी के समुझाइ कहिये
गुरु वाच। यह प्रस्न जो तै मो कौं प्रबोच्यो। एक वार
यह प्रस्न मैं अर्पने गुरु कह्यो है। तब गुरु मो सो
कही कि शास्त्र मैं तो आवरन मात्र कह्यो है। और अ
कार तो विसय ना ही कह्यो। तब मेरे ह्मन मैं संदेह
मिथो न हो रह्यो है। और सास्त्र ह्म बोहत देखे पेय
ह प्रस्ताव कहूनी के करि न देख्यो। और इस्वर

प्रहृतमया कौनिरनै कियौ है। ताही विधि हृत
 सौ कहुत सावधान होइ सुनियै है। देखि आवरन
 कौ एक तौर चाहियै तिनो गोर आवरन कौ किर
 कह्यो जाइ। तब विचारै तै पचार गोर मन मै आवे
 है। तिनो मै एक तो जहां सुध ब्रह्म कौ प्रतिबिंब अ
 विद्या विषय परै है। एक तौर तो आवरन की यह है
 । अरु एक जीव के अरु मन के बीच है। इसरी गोर
 र आवरन की यह है। और एक मन के अरु इंद्र के
 बीच है तीसरी गोर आवरन की यह है। और एक
 इंद्र के अरु विषय के बीच है। ऐसे पचार गोर है
 तिनो मै देखि मै तो सो प्रत्यक्ष कह्यो। जहां सुध ब्रह्म
 कौ प्रतिबिंब अविद्या विषय परै है। तहां तो आव
 रन न चाहिये। क्योकि तहां जो आवरन होइ तो
 अग्रान कै समितो। पानी को ऊँ होइ हीनो ही तो
 यह नि संदेह जानौ कि जहां तो आवरन नां ही
 और जीव के अरु मन के बीच है। हू जान्यो जात है
 कि आवरन नां ही। क्योकि जो वात मन लगइ देखि अ
 रु सुनी सो तत काल समुझी ही। और देखि मन के क
 रज कबु जीव सो जु देख्यो नो ही जात है। ताते ह्यो
 हू नि संदेह जान्यो कि आवरन नां ही। और इंद्र
 र विषय के बीच है। हू जान्यो जात है

से ताते जान्यो जात है जु ह्यो क आवरन नाही ॥ और
 मन के अरु इंद्र के बीच ह्यो जान्यो जात है कि आवर
 न है ॥ क्यो कि एक बात का एक ही अरु न समझी ॥
 और एक वस्तु दिष्ट आगे जाती अरु न देषी के कबु
 और को और सत्यो अरु और को और देषो तो त
 ब जानि कि मन के अरु इंद्र के बीच आवरन है ॥ और
 आवरन जु हे सो अविद्या को है ॥ और ए दोऊ आव
 रन अरु विबेध अविद्या की सक्ति है ॥ ताते नि संदेह जा
 न्यो जात है कि आवरन इहां है ॥ सो यह आवरन इस्वर
 अनुग्रह ले मिटे ॥ यह प्रसंग तो मैं तो सुन के समुझ
 इ कै कह्यो ॥ और क संदेह होइ तो पूबीये ॥ सिधो
 वाच ॥ ब्रह्म जु हे सो अपार है ता को वेद क कहै है कि
 अपार है ॥ साख क कहै है कि अपार है ॥ और जान्यो
 क जाति है कि अपार है ॥ तो ब्रह्म की अपारता मैं तो
 संदेह नाही ॥ पै मन मैं यह संदेह है कि ब्रह्म अपनो ॥
 पार जानै है कि नाही ॥ क यह मो को कि पाकरि समु
 ज्झ कहिये ॥ गुरु वाच ॥ यह बात बोहत क विन
 क्यो कि जो कहिये है कि ब्रह्म अपनो पार जानै है
 तो तो पार आवै है अरु जो कहिये है कि ब्र
 ह्म अपनो पार नाही जानत है तो अग्र्यो न त आ
 इन दोऊ ऊतर न मैं तो एकौ नाही वन
 त है ॥ और विन वन तो उतर कै सै द्यो जाय ॥ ताते

योजानिकं ब्रह्म ज्ञानं तद्दे किमो कौ पार नां ही ॥ तब दे
 षि पा ॥ अरु अग्यो ॥ अरु अग्यो न कन आयो ॥ यद
 निसंदेह ज्ञान कि ब्रह्म ग्यो न स्वरूप दे ॥ अरु अग्यो
 दे यद प्रसंग तो मै तो सौ कह्यो और संदेह दो स्वरूप
 बायो ॥ सिमो वाच ॥ यद प्रसंग जु दे घी ये दे स्वरूप निसंदेह
 ज्ञानी ये दे जु पंच भूत आत्म कह्यो ॥ पेय द संदेह दे जु अ
 पंच भूत को नानांति मिले दे ॥ मिल बै की नांति दै एक
 तो नांति यद दे जु एक वस्तु मुख दे इता मै और बसै मि
 ले दे ॥ और इ सरी नांति यद दे जु पांचौ जु दे जु दे मिले
 स्वरूप द प्रस्ताव मो कौ क्रिया करि सु मु जाय कहियो
 गुरु वाच ॥ ते जु यद प्रसंग प्रबो स्वरूप द मै शास्त्र
 मै बोहत वार दे घोर दे यत दान तो असे ही कह्यो दे जु प्र
 च पंच भूत आत्म कह्यो और इन के मिलि बै की नांति व
 द कह्यो ॥ जु पांचौ जु दे जु दे मिलि कै एक न पदे ॥ पे
 य द मै र मन मै असे आवै दे ॥ जु पद्य ॥ मुख्य है ता सौ ज
 अरु तेज मिले दे अरु पिंड जु दे इ दे स्वरूप नती नही ॥
 के संजो गते होत दे ॥ और इन तीन न तै निन ज द
 याली रह्यो ॥ तही आकास है अरु पवन है ॥ कौ कि
 आकास तो सून्य ही सौ कह्यो ॥ अरु इन तीन न
 तै तो पिंड दो इ है तो जहां पिंड तहां सून्य नही ॥ अरु
 जहां सून्य तहां पिंड नही ॥

जात है जु पिंगड ॥ इन तीनों नदी कौ है ॥ अरु पिंगड में जहां ॥
 अवकास रह्यो तहां आकास आयो ॥ अरु जहां आ
 कास तहां पवन आयो ॥ क्योकि विना अवकास प
 वन कौ संचार कै सै होइ ॥ सिधो वाच ॥ तुम जु कही
 प्रची जल अरु ते जगती नदी मिले है ॥ और आका
 स अरु पवन ग जु देही है सुख हमरे मन में आयो ॥ का
 व में अरु पाथर में आकास मान्यो है अरु पवन रूमां
 न्यो है सुका है तो ॥ क्योकि काव में अरु पाथर में तो
 अवकास नां ही तहां आकास अरु पवन कै सै मान्यो
 यो ॥ सुखाच ॥ काव जू है सो कबु पहिले तै सुकोही
 नां ही उय ज्यो पहिले हस्यो हंष हो ॥ और जब हस्यो हो
 तब जल डार भापात पात पड्यो तदो ॥ तब तो अ
 वकास थोही ॥ क्योकि अवकास विना जल कै सै पु
 द्यो ॥ अरु जहां अवकास है तही आकास है ॥ अरु
 जहां आकास है तही पवन है ॥ और अब जो यह
 सुक्यो तऊ अवै वतौ बंदरे कै सकै काव हू में है
 तब देखियो नांति काव में आकास रू आयो अरु
 पवन रू आयो ॥ तै सै ही पाथर रू जान क्यो जु पाथ
 र रू जब उय ज्यो है ॥ तब कबू अ सो कति नदी
 प ज्यो ॥ क्योकि प्रची अरु जल कै संजोग तै उय ज्यो
 है ॥ और पाथर जब प्रची अरु जल कै संजोग सौ

उपजै है। तब देखि कि विनां अवकास प्रधी मै जल
संचार कैसे होइ तो अवकास तो आया ही और ज
हां अवकास नया तो ही आकास त ही पवना। ता
ते तय द जान कि तत्व तीन ही मिलै है। क्यों कि
उपनिषद् कहै कही है जु त्रिवित करण। औ
रण्यो च हत त्वन के पांच गुन है। स्रमै तो सकल
॥ अवकास को गुण राख है। वाय को गुण परस
है। तेज को गुण रूप है। जल को गुण रस है। प्र
धी को गुण गंध है। और एयांच पांच इंद्रिय ते उप
चरत आत्मक है। क्यों कि अवकास इंद्रिय है सो
आकास है। सब ग्रह है। त्व वा इंद्रिय है सुवाय
है। परस ग्रह है। तेज इंद्रिय है सो तेज है। रूप ग्र
ह है। रस न इंद्रिय है सुजल है। रस ग्रह है। घ्राण
इंद्रिय है सो प्रधी है। गंध ग्रह है। और जै से पांचो
इंद्रिय चरत आत्मक है। ते से ही काम को धादि
क कह जा नि देखि कि मोह ज है सो आकास है
क्यों कि सून्य है। और म द है सो वाय है क्यों कि ठ
न मा द है। क्रोध ज है सो तेज है क्यों कि तीव्र न है
॥ काम ज है सो जल है क्यों कि रस है। लोभ ज है
सो प्रधी है क्यों कि वासना है। और मूबर जु
है सो अज्ञ है।

नीहैयैकामक्रोधादिकेज्यंच तत्तत्रात्म
 ककहेतेतोमैअंतदकरनकेधरमसुनेहै॥
 तोएतत्तत्रात्मककैसेहोइ॥ सोयहअरथमो
 कौजुक्तिप्रबकसमुझाइकहिये॥ भुक्त्वा॥
 च॥ तयहदेषिकिअंतदकरनतैजीवकहा
 वैहै॥ पैहैपरमात्मातौदेषिकियरमात्माको
 कामक्रोधादिककेसोहोइ॥ औरदेषिकिपं
 नीजोहैतोताकोनीदरुआवेहै॥ औरसीतउ
 झरुजानैहै॥ औरविश्वकोब्रह्मरूपकरिदे
 पैहै॥ औरसखादरुजानैहै औरअंधरुजा
 नैहै॥ तोहदेषिकियेकामक्रोधादिकजेअं
 तदकरनकेधरमहैतेतोप्यानीकेतोअंतद
 करननाहै॥ औरएअवस्थातोप्यानीकोस
 बहोदिहै॥ औरप्याननयेरुदेहरहै॥
 क्योकिजीवनमुक्तिकहियेहै॥ तोयोजानि
 कएयंचतत्तत्रात्मकहैतेदेहगुनहै॥ यद्य
 स्ताचितोमैतोब्रुनकेसमुझाइकहो
 औरोसंदेहहोइसुहखीये॥ सिध्दवा
 वा॥ चैतनतौसरबवापकहै अरुज
 उजुदेसोमिथ्याहै॥ तामैतोसंदेहनाही

और यह मेद जु है। सुब्योहार मे है। तहां ऊदे धि कि
 ऐसे है जै सें ग्राका समे चंड है। ताको बिंब सब प
 र एक सोय र है। कदा जल कदा घड़ी कदा पर ब
 त कदा बिब कदार ता। पौ दे धि कि जल मे प्रति बि
 होइ है। और वोर प्रति बिंब ना दी होइ है। चांद
 ना होइ है। तौ दे धि बिंब तो सब वोर पर एक सो
 है। पै जल सब है ता तें यामे प्रति बिंब होइ है। औ
 र वोर सब ना दी। तहां चांद नीय होइ है। त्यों ही
 दे धि कि जै सें जल सब है। तें सें ही अंत ह कर न
 सब है। ता तें चैतन को प्रति बिंब होइ है। तब चै
 तन न ना सें है। और जहां सब ना दी। तहां ऊ चां
 दनी की ना ति चैतन तौ है ही पै प्रति बिंब ना दी
 होता। ता तें जड कहै। पै तें यो जा नि चैतन एक है
 । ता मे कब मेद ना दी। और जड जह है सो अग्रान
 करि ना सें है। अरु जब स्वर के अनुग्रह सो ग्रह
 न होइ है। तब सब चैतन ना सें है। जै सें सब आमु
 षण सुवर्न मे है। यह प्रस्तावतौ मे तो कौनी के
 समुजाय कह्यो। औरौ सें देह होइ सो प्रबीयै।
 सिधो वाचा। इस्वर जु है सुकौन प्रकार है मे राख

रौसंदेहमिताइयो॥गुरुवाच॥शास्त्रमेंतौकह्योहैनु
 मायाकैविषैसुधब्रह्मकोप्रतिबिंबसोइस्वर॥सि
 ष्योवाच॥तुमकह्योकिमायाकैविषैसुधब्रह्मको
 प्रतिबिंबसोइस्वरतबयानैयेइस्वरकीउत्पत्ति॥
 आवैहैऔरइस्वरकोअनादिहोमानैहै॥सुजोइ
 स्वरकोउत्पत्तहैतौअनादिपनोकहांतौ॥और
 जो इस्वरअनादिहैतौउपजनोकैसे
 वनै॥औरशास्त्रमेंतौइस्वरकीएदोउरीतैकह
 है॥औरइनदोऊनांतिनमेंतौविरुधपतबहै॥
 सोयहबुझारीक्रियाबिनांकैसेसमुज्जाजाइ॥
 तांतैहूतुमसोबिनतीकरूहोक्रियाकरिकैजे
 सैइस्वरकीइनदोऊनांतिनकोविरुधमिटैतैस
 समुजायकहीयो॥गुरुवाच॥तुंयहबडीबातप्र
 बहैयहविरुधअनादचल्योआयोहै॥औरजा
 निकिइस्वरकीक्रियातैजोअननवीहोइसोइ
 यहविरुधमिटावै॥अरुत्वितलगाइकैसुनि
 देषिकिइस्वरअनादिमान्योहै॥निराकारमान्यो
 है॥व्यापकमान्योहै॥औरकरतामान्योहै॥तातै
 सगुनमान्योहै॥औरदेषिकिवह्नतौअनादहै
 निराकारहूहैअरुव्यापकहूहै॥औरअकर
 ताकहैहै॥तातैनिरगुनहैतौअबदेषिकिअ

जानि॥ और विस्वदे सो इया हूँ स्वउपजो है ॥ तब देखि कि म

नादिता मै निराकार लो मै अरु व्यापकता मै तो जानि
ब्रह्म को अरु स्वर को ब्रह्म देना ही ॥ रह्यो करत
करता को न दस ब्रह्म तै अकरता हूँ मान्यो चाहि
ता तै जानि कि ब्रह्म तौ अकरता है स्वर करता कै सो
नीयो ॥ ता तै कर विल्व के लये स्वर मान्यो है ॥ पैं देखि
कि स्वर के निम्न माने अधीत कै से वदरो ॥ ता तै ब्रह्म
की इया को स्वर माने अनादिता हूँ आइ और उत
पत हूँ आइ ॥ कौ कि इया विना नये हूँ
चेतन मै इया ॥ तब देखि कि इया की
अनादिता मै तो संदेह ना ही ॥ और इया के होत व
उत पत नइ और स्वर को माया प्रति बिंब चेतन्य म
नै है ॥ और देखि कि इया मै कबु प्रियता है सो इया
ता माया तब जानि कि इया सो स्वर तब देखि कि
अनादिता हूँ आइ ॥ अरु उत पत हूँ आइ अरु विस्व
ता हूँ ॥ गइ और ब्रह्म करता हूँ अरु अक
ता हूँ है ॥ और एक ही है विना अनुग्रह असे जान्यो
न जाइ ॥ ता तै यह प्रसाव मै तो सो कह्यो सो तब अनुग्र
ह ही जानि ॥ और यह वं नि संदेह कर जानि कि मुक्ति
कौ उयां इया न ही है विना ग्या न मुक्ति न होइ ॥ और
यह नि संदेह कर जानि कि विना अनुग्रह ग्या न हो
इ ॥

बीज रूप है ही देखि कि क

24

24

॥५॥ प्रत्याहारिकरे मन धै वि कै धार न धारि र हे मन ही
 ॥ धरि ध्यां न र हे न ग हे मन और सबै त जि दोर अ चंच ल हे
 ॥ त्रिपुरी त जि सा धि समा धि स्तै त ऊ ग्यां न न ही इन ते
 क ब ही ॥ ए हे मन आं नि सं दे ह वि नां वि नु ब ह्म अनु प्र
 ह ग्यां न न ही ॥ ६ ॥ सु वि ता सु र दे ब ऊ सा धन कै सं
 ग ब ल क था नि त हे इ ज ही ॥ गुरु ते कु नि स्तो न क
 रे ब ऊ बार जु ग्रं थ अ नै क अध्या त म ही ॥ सु नि बै सु फि
 रे ब ऊ ती र थ वी र नि ग्यां न न ही इन ते क ब ही ॥ ए हे
 मन आं नि सं दे ह वि नां वि नु ब ह्म अनु प्र ह ग्यां न न ही
 ॥ ७ ॥ सु नि ही सु नि फे र वि चार करै कु नि प्र वै वि से
 य न जां न त ही ॥ सु नि कै स मु ऊ ब ऊ तां ति वि चार क
 रे नि ह वै मन चित त ही ॥ नि द ध्या स न फे रि करै नि
 त ही त ऊ ग्यां न न ही इन ते क ब ही ॥ ए हे मन आं नि
 सं दे ह वि नां वि नु ब ह्म अनु प्र ह ग्यां न न ही ॥ ८ ॥ ग्यां
 न न सा धन ते उ य जे न न या इ क बू न य जे य ह जा ते
 ॥ दि ष्ट अ गो च र रूप न ही क बू दे य त मे न ही आव त
 या ते ॥ न व नै क ह तै सु स नै न व नै व नि है क हि कै
 सै ब न य ते बा तै ॥ या ही तै नां नि अनु य ह सा धि
 हे आ य ही ग्यां न स्वरूप है ता तै ॥ ९ ॥ सु क र्म

सतसंगतकौंयस्यो कबहुन धस्यो नहि साधन के
मगमै॥ असे नये हु गये न कबूपा हे सब कुंजर
के पगमै॥ होत अनुग्रह का जनेयो सब भाषन द
षिय है निगमै॥ १०॥ दोहा॥ जसवंत सिंघ की नौ
समुझि अनुग्रह ते सतिसार॥ सिंघांत बोधया ग्रं
थ कौ धस्यो नां व निरधार॥ ११॥ अनुग्रह के फल
को ग्रंथ जानै अनुग्रह जाहि॥ कहैं कहां विस्तार
कै बौद्धत बात मैवाहि॥ १२॥

२॥ इति श्री माहाराजा श्री जसवंत सिंघ जी विरचि
ते सिंघांत बोधया ग्रंथ संपूर्णः॥ श्री कल्याण मस्तु
लिषतं बीजा कृष्ण दत्त आचार्य मध्ये वैत्रमासे सं ०१७०॥

॥ श्री गुरुभक्तानामस्तु नमः ॥ अथ अनुभवप्रकाशनि

रुचिः ॥ प्रबोद्धोऽप्रनामकरि कं हि ये क्रिया

कौमोः ॥ देनं संदेहजो भैः सैः क्रैः जना इये ॥ तु

महोसरनं यो ताको तो तु म्हे ही लाज इस्वरस्य

रूपमोहिनी के के वतां इये ॥ गुरु क ह्यो ॥ असे जांति इ

स्वरवदेजुं सुधवै तनको प्र ति बिंब माया मे लया इये

फेर इबो ॥ सिधत ब मायां धौ क ह्यो वै कौ नया रू को स्य

रूप फेरि आबे स धुजा इये ॥ शां व्रह्म प्र ति बिंब दो त इ

स्वर को दे यो या दिव्या यं क्र इवो रवो र असी जो रि बर है ॥

प्रथम अर्का स के के भं इह पवन रूप व है ते ज व है यो

नी व है प्र इ धर है ॥ नां ता वि धं दे यो पेर ग ही जा त को

रू नो हि स ब जग मो ह्यो या कौ कौ ने द यो व र है ॥ अ व मे

प्रतीत और और को दिषा वै और कौ न है क ह्यो धो मा

या जा तै न यो न र है ॥ शां गुरु क ह्यो ॥ असे मां नि वि दानं

द स प्र का स असे सो जां अ यं ड व्रह्म ता की इ ब्या जां न बी

॥ इ ब्या ही तै इ स म यो ता ही तै अ का स पो न तां ते ज न ते

ज ॥ तां ते ध र मां नी बी ॥ ता ही तै अ ने क रूप दे यो प

रे वि स्र स ब नि सं दे ह या कौ स दा इ ब्या प दि चां नि बी

॥ वा स्वा र क रू ते सो मा या जि न जां नै य दं स ब ही को

हे त एक इ ब्या उ र यां न बी ॥ शां असे तुं न जां ने जो अ वि

कौन है अविद्या वह काहू सो नई है किधौ आप
 ही सो जप जी है को न भोत न हिये ॥ और जो कहै अ
 विद्या हेत सब को न है काहू तेन नई आप ज
 प जीयो न हिये ॥ तौ कहै वचन मे कै से हू न आव
 त है अनिरवचन ताहि कै से कहिये ॥ ४ ॥ न
 हिया कै रूप कब नाहि कबु आ कित है अस त ह
 ना हिय ह ना हिय ह सत है ॥ न काहू सो जप जी न
 आय स नई है य ह असे कहै वाहि वह कै से व ह
 त है ॥ ता सो कहू कै से करि कहिये जग त हेत क
 बु वै न होइ ता को कै से कहू हेत है ॥ और विधि
 कहै ए को नाहि ने व न त वा त ता तै मे विचार कहै
 इ ब्रा मे र मत है ॥ ५ ॥ फेरि हू जो असे कहै इ ब्रा
 ह्म तौ मानत है ॥ ये जग हेति कि न अविद्या ही जानी
 ये ॥ अविद्या कै मानै वह अनिरवचन होत ब्रह्म अ
 अविद्या दोऊ हेत काहे मानीये ॥ या तै मे कह्यो हे
 तो हि समुद्रि विचारि देखिय देवाति निश्चै सो वित
 मां हि आनीये ॥ इ ब्रा ही कै कहै होत एक विषे कार
 न ता ता ते य ह जग त को कारन वधानीये ॥ ६ ॥ जो ये
 वि असे निरगुन ब्रह्म
 वह तौ है स्रष्टा सचेतन स
 रूप वह चेतन ही इ ब्रा ता सो सब कबू कहै ॥ चेतन तौ

मां निविद्यै विनां मां नैवेतना को जडता औ सुन्यता प्रसं
 ग आनि परै है ॥ निरुनस्वरूप आयस वै गुनवादी मां
 हि प्ररनता औ नैविन कहौ कै सै सर है ॥ १॥ करिके
 प्रनां मं करु सरन तम्हारै आयो की जीये निबाह जे
 सो रावरो वषांन है ॥ तुम्हारो ही गुर देव ध्यांन धरै
 दिन बचन तुम्हारो मो को वेद सो प्रमान है ॥ जानत ह

थि जारि - १२

त
 फिर सिष्य तब प्रविद्या कै वि

फिरि वेद जिन माने स्य

तो ए कै सवद

यद्यप्यलक्षैदया सिंधुअपनोसमुजिमोसोमयाक
रिक्कैकदे॥१७॥ ब्रह्मस्योक्तहतगुरुसिष्ययहअसै
जांतिजीवदेकहतमानत्रोरनाहीवातदे॥असैह
तजांतिजीवदेहकैनमांदिक्कहदेहकोबोहार
हेतप्रांतहीलयातदे॥औरसुनिदेहजबहोतउ
तयतितबजांत्योपरनीकैनांदिस्बकोसंघातह
देहकोनिबाहपानवायहसुजांतिनैतअसै
कहूपेरितोसो जैसजांत्योजातदे॥१८॥ अंतम
नीकैकरिविचारैतैजांत्योजातकेवलप्रतबप्रा
नवायकोअधारह॥देखियतसांसकुनिनारीह
जोदेखीयतदेखियतसांसहीसोआयकोविचा
रहै॥सीतलताउधस्ताप्रकारऔरकेतिकजदे
खियत तिनहमैप्रांतकोविहारहै॥देहमांदि
जीवक हैकोनविधिकह्योजायजीवकेविये
अकोतोगकोनप्रकारहै॥१९॥ औरसुनिसरीर
विषेवेष्टाजेतीकबुतिततीसवैयप्रांतवायह
सोजांतबी॥औरजुहैग्यानयहजतेसबजांत्यो
जातप्रांतकोधरम नांदिनिसंदेहमांतिबी॥
ग्यानमांत्योचाहियेहीयामै विचारनां हीविधि
मांत्योजायसोइउरआनबी॥होइसमाधानअरुउत
तरहैतामैग्यानकीअवस्थाअसीमांतिकैवप्रांतबी॥२०॥

शास्त्रमैतौसबवैरकह्योहैअविद्याविषैवेतनकोप्रतिबिंब
सोइजीवजाननो॥ताकोफुनिआवरनमान्योहैअविद्याहै
कोजीवविषयाहीकोअग्यानयनमाननो॥प्रतिबिंबमाने
देखिआवरनकैसेवनैआवरनहैतेप्रतिबिंबकैसेअननो
॥आवरनप्रतिबिंबदोऊकोनिबाहनाहिअसीविधिजीव
कहौकैसेकैप्रमाननो॥१५॥अबसुनिमेरेमनआवतहैसो
इकहोजामेनिसंदेहब्रह्मतत्त्वकोप्रकासहोदेहतोविचार
रैतैआनासहीसोलागतहैतैसेहीविचारयाभोग्यानकोआ
नासहो॥लगायोहैधिरकीमैपारेविनाकाचजैसैतामैजै
सेबाहिरकोभीतरविलासहो॥अैसेप्रतिबिंबमान्योआव
रनजान्योग्योतैसेहीसरीरविषयग्यानकोनिवासहो॥१६॥
तबवहग्यानकबूकाचकोधरमनांहीअंतदकरनहू
कौनबहधरमहो॥जोहीलौहैधामअरुकाचवहवाही
तोरितौलौवहग्यानकेअनासकोमरमहो॥तैसेहीसरीर
अरुअंतदकरनजोलौतबहलौग्यानकेअनासकोन
रमहो॥ग्यानकोअनासयहतामैतौसंदेहनहोयांही
सोंकहतजीवयाहीसोंकरमहो॥१७॥आरयहअैसे
जानिग्यानजोयदारथहैकाहूकोधरमनांहिसबही
तेन्यारेहो॥देखियतजेजेततौजडअरुमायाकहैति
नकोधरमग्यानकैसेहोतहोहो॥तैसेहो॥कहितफे
रिनांहिकबूयाभैफेरिसबगुणनकेमतयहनिर्धारो

यविस्वकोउजारौदे॥१७॥ सतविदानंदताकीइयाही
 कोईसजांनिमायातौकहीमेतोहिइयाहीकोरूपदे॥
 ग्यानतौवतायोतोहिवदोदेअनासमानग्यानकोअना
 सवदेजीवकोस्वरूपदे॥ इयाओअनासदोऊइनको
 नूअसैजानितोकोस्वरूपजासोकदेहैअरूपदे॥ जे
 सैकैवतायोतोहिअसैहीविचारिलेहनिसंदेहहोइदे
 षिदोऊकेनरूपदे॥१८॥ सबैया॥ विस्वकोकारनवि
 स्वकोपोषकविस्वस्वरूपवदेजकहावे॥ विस्वअधा
 रअधारनहीतिहिरूपसबैरुअरूपसुतावे॥ यादेकरे
 नधरेकबूइयाअकरतासदाकोउदासीलयावे॥ अ
 पअनंतअषंडअपारसुअसोसरीरमेकैसैकैअवे॥
 १९॥ तबअतबअनोगतानोगकोनोगकरैकबइ
 नअधावे॥ मिलेसबमेनिरलेपसदावदसाबीअसं
 यदेसुतिगावे॥ सबैगुनपरनगुनसोईनिरंजनदेरुवि
 राटटियावे॥ अपअनंतअषांरुअपारसुअसोसरी
 रमेकैसैकैअवे॥ २०॥ एकअनेकसदाहैसमानदे
 स्थलहैसूबमग्रथवतावे॥ अविनासीहैनित्यप्राट
 बिष्योनिरबंधनिसीमदेकैसैबधावे॥ आदिअनादि
 कारनकाजनिमिंधुकोकोदेहुयावे॥ अपअनंत

॥२१॥ सबै

तिअैरचलेनहलेविनुव्यापकहैसबजामेसमावे॥
 तितरहैअजअंतनहीतिहिकारनकोकहिकोउपजावे॥

निसेषपरमनवारनपारनहीपरिमाणप्रमाणजतावे
 आयअनंतअषंडअपारसुअसैसरीरमैकैसैकैअ
 वै॥२३॥गंग्यअगंग्यअसंघिअचित्तउपाधिमिल्येनि
 रुपाधिकहावै॥निरबधियहैनिरबानसदयहअ
 सोषतब्रगहैनगहवै॥कलाविनुहैरुकलासब
 वाहीमैहैनिरवैबनवै॥आयअनंतअषंडअपारसु
 असैसरीरमैकैसैकैअवै॥२३॥परसबकैनपरैक
 बुवकैउरैरूनहीकबूवातैलषावै॥हैसतअचित
 आनंदनित्यविसेसभल्येनिविसेसकहावै॥रहो
 रक्षरतिनांअवकाससरीरकहोतामैकैसैअमावै॥अ
 पअनंतअषंडअपारसुअसैसरीरमैकैसैकैअवै
 ॥२४॥कवित्र॥देहनांहीइंहीनांहीमननांहीबुधि
 नांहीअहंकारचितनांहीदधिबौनहीतहं॥कहि
 बौकहूनजांमैसुनिबैकीवातनांहीधेयनांहीधा
 ननांहीध्यातारूनहीजहं॥गुरुअरसिष्यनांहीन
 मरूपवित्यनांहीउतयतिप्रलैनांहीबंधमोब्रह्म
 हं॥बचनकौविषेनांहीसाखअरुवेदनांहीअर
 कहाकरुउहांग्यानरूनहीतहं॥२५॥दोहा॥
 धारेहीमैबोहतहैजसवंतकल्यैविचारा॥याअनु
 वप्रकासकौपटिसुनिसमजोसारा॥२६॥इतिश्री
 महाराजाश्रीजसवंतसिंघजी

गिर्यया॥ श्रीपरमात्मेनमः॥ १॥ अथ अपरो बसिधो
तल्लिख्यते॥ जाकी इष्टा तै नये विस्वसबै निरमाना॥
कारन अरु कारज दोऊ जातै नये प्रमाना॥ १॥ करत
हे सब विस्वको ताको करतानां हिा बंदन असे ब्रह्म
नाम एक ताजा मां हिा॥ २॥ बंदन करि गुरुदेव को
म विचारि ताया बै फिरि मुक्ति को कहिये
॥ ३॥ कौन करम ते होत है मनुष्य देह उ
करता किहि विधि भोगता किहि विधि कर
ते॥ ४॥ किहि विधि निर्मो विस्व सब कब की
तारा॥ न इ अविद्या कौन विधि कै से जीव अया
॥ ५॥ यह अरु और अरथ सब दीजे मोहि वताया
कहिये नियट किया लै तो यह संसे जाया॥ ६॥ त
ब गुरु कह्यो दया लै कै कह्यो सिध सब तो हिा अ व
न मनन ते अरथ सब जै से ना स्या मोहि॥ ७॥ मले बु
रा करम जब दोउ होत समाना॥ कहत ग्रास्त्र मे हो
त बपुरष देह निरमाना॥ ८॥ मनुष्य देह ते करि सकै
न लौ करम जो कोइ ता को सिध दजानत निश्च
सु न फल होइ॥ ९॥ बड़ सोया दी देह ते करम उ
रे कर लेता तेइया संसार मे ताहि बुरो फल देता॥ १०॥
मनुष्य देह ते करम एलागत सब ही आहिा न लौ बु
रो समुजत सकल

यैयसुदेहतेलागतएहोमंदि॥मलौबुरोसबहीक
 रेविनुसजेमनमांदि॥११॥औरदेषियदुबुधिदस
 नुषदेहकैसाध॥मलौबुरोसमुजतऊकरतोनांदि
 नहाय॥१३॥तातेजांनोजातयदुबुधिपाताहेजे
 ३॥करतातोबुधिदेनहीइस्वरकरैसुहोइ॥१४॥म
 नुषदेहतेकरमएलागतअैसेअइ॥इहैहीयहअ
 पसकरताकहतवनाइ॥१५॥करतातोकोऊऔ
 रदेतातेपसोवियोग॥तोहीफिरिफिरिहातहैस
 कर॥अहोभोग॥१६॥तातेयाकीबुधिहुंफल
 तनोहीमान॥करताजाहोइहैहैतोसंमुजैजानि
 ॥१७॥जबहीयहसमुजैइतौकरतातौमैनांदि॥त
 बहीताकोकरमफलभोगमिटेबितमांदि॥१८॥
 करतातोइस्वरकरुइनकैमतेनहोइ॥जीवकर
 मजेकाहतहैअनादिहैदोइ॥१९॥इनकोज
 बयहअबियेपहिलैजीविकिकरम॥तबएकद
 तजुहैदोऊबीजअंभुरकैधरम॥२०॥जीवकर्म
 इहिविधिकहैबीजअंभुरकैन्याइ॥अैसेऊतर
 कोनविधिकैसेमान्योजाइ॥२१॥तबफिरिपूर्व
 यो॥कहैइनकैनांदिनआदि॥ब्रह्मअविद्याजीव
 कर्मयाहो॥कहतअनादि॥२२॥इहिविधिहुऊत
 रदथैकैसेहोतअमान॥घटिवठिनांदिअनादिमैचा

सौ होत समाना ॥ २३ ॥ तब ईस्वर कौन विधिकरता मानै
 जाइ जो ईस्वर करतान दई स्वर पनो सुबाइ ॥ २४ ॥ उ
 यति कहित अनादि है उपजति नां दिन नित ॥ २५ ॥ असे
 उत्पत्तिको ईस्वर नां दिन नित ॥ २५ ॥ एइ फिरियों क
 हत है निहवे करि चिति मां हि ॥ ईस्वर के अनुग्रह वि
 सुन क्रम उपजे नां हि ॥ २६ ॥ ईस्वर जो इन कै मते
 रता वां दिन आदि ॥ ताही ईस्वर कौ कहै अनुग्रह मां
 का हि ॥ २७ ॥ जो ईस्वर या विस्व कौ करता पैन कहाइ
 ताही कौ अनुग्रह कहै कौं किर मान्यो जाइ ॥ २८ ॥ य
 ह कहिये समुज्झाई कै ग्यान होत है या हि ॥ उपजत अ
 नै कर मते कै ईस्वर तै आदि ॥ २९ ॥ करै कहाय कर्म
 उइन तै क बून होइ ॥ फल दाता ईस्वर सदा निसचे क
 रिकै जोइ ॥ ३० ॥ अनुग्रह मां न्यो चाहिये ईस्वर कौ चित
 मां हि ॥ ईस्वर के अनुग्रह विनां कबु वै कारज नां हि ॥ ३१
 ॥ कर मन मे न दिग्यान कबु दह त निश्चै मां नि ॥ ग्यान अ
 विद्या मे कहां ए दो क ज उ जां नि ॥ ३२ ॥ ईस्वर ही तै या
 यै जां न्यो जात प्रमां ॥ ग्यान रूप ईसर सदा जो मे प्रर न्य
 नां ॥ ३३ ॥ ईस्वर ही तै होत है जिय कौ ग्यान प्रकास ॥ ईस्व
 र विनं यद कौ न तै होइ अविद्या नां सा ॥ ३४ ॥ इहि वि
 धि अनुग्रह मां नवो ईस्वर कौ निरधारा ॥ तब ईस्वर न
 नो सही निश्चै है करतारा ॥ ३५ ॥

यौनैमनहीकबूतादि। कौकिरि करता एकदिनिनि
तही करता आदि॥२६॥ और शास्त्र जनिता कस्त
मानतादि। कहत जु असे कोन विधि हम मानै मनमां
दि॥२७॥ नितिकरता तो मानिये जो सब करै सम
न॥ मलेबुरे दैषत डिगन यतो प्रतिबप्रमान॥२८॥
और यही दैषत सबे ग्यानी को इकहो त अफर
ग्यानी बोहत है माइ कजर मउ दोत॥२९॥ अनु
ग्रह इस्वर के विना उय जे ग्यान न आइ ग्यानी को
इकहोत है सो इस्वर अनुग्रह पाइ॥३०॥
ग्यानी अनुग्रह ते न पाइ स्वर के निरधार॥३१॥ एक
विना अनुग्रह ते र है मान ऊअग्य अपार॥३२॥ एक
नपर अनुग्रह नयो विना अनुग्रह एक। तब आव
त इस्वर विषे राग द्वेष अनेक॥३३॥ विषे पनो इस्वर
विषे कब रूचाहत नांदि॥ इस्वर ता के सी कहो रा
ग द्वेष जामांदि॥३४॥ अब सुनि है सि शंत यह नि
श्चे करि कै धारि॥ विनु समु जे त करत ते सब जा
ल निरवारि॥३५॥ नी के करि कै समु जित वित क
करि विश्राम॥ इश्वर मै क रूपा इये राग द्वेष को
नांम॥३६॥ इस्वर मै ना सत जिनै राग द्वेष दोइ
दोष धरे अप दोष ते तु बिबुधिते जोइ॥३७॥ जे
ने अपत है को न सर ज है निरधार दो इव तावत

ककैअपनेदिष्टविकारा॥ध॥॥मल्लोतिरमिनिरम
तबुरोकबत्तकाहुताहि।बुरोनफिरिनिरमतम
लोइस्वरयाजगमांहि॥ध॥॥निरमवदेसमदिष्टि
सबवाकैरीतनश्रीरातोताइस्वरमेकहोरागदेष
किदिठोरा॥ध॥॥असेदेष्टिअनेकमेरागदेषकीर
ता॥इस्वरमेकबहुतहीरागदेषअनीत॥ध॥॥इ
स्वरनिअएकदेवहुजानितताहि।जोभासक्य
भासबहुतज नइजोआहि।प॥॥तोयहअय
नोआपपरिकेसैरागरुदेष।वहतोहेनितपकह
तहानइजोलेष॥ध॥॥रागदेषकदायाइयेजहा
नइजोआहि।एकैजानिविवादिबिनुतिसदेहक
रिताहि॥ध॥॥चाहेजबतबहीकरैजैसोचाहेत
हि।ताहीतैयहसमझवकहतसुतत्रजुवाहि
॥ध॥॥स्वबाचारीहेसदावाकोजानिप्रमांन।व
वलश्वामान्रतैविस्वकस्योतिरमान॥ध॥॥इव
तैजबजगकस्योकरमकदातवजानि।इहिनि
धिनिरम्योविस्वसब ॥असेकरतामाना॥प॥
दाओरअकरताकहतदेकरताहीकोलोगा
करतइतोयेहोतनहिकियेकरमकेनो॥ध॥॥
करतअकरताहेसोइइयातैजगजानि।निश्चे

करिकैकरमा ॥ अतेनतबतमांनि ॥ ५६ ॥ विस्व
 नयैतैकमी ॥ जीवकरतदेदेपि ॥ तेइसंवितप्रास्व
 धकीयमांणहलेसि ॥ ५७ ॥ इतहीकरमनतेबड
 रफिरिफिरिलेओतार ॥ कवरूपसमां नसकह
 तवतदेपिसंसार ॥ ५८ ॥ तौलौयाहतवतैरहैकर्म
 जालकेमांहि ॥ जौलौयापरहोइगोइस्वरअनुग्र
 हनांहि ॥ ५९ ॥ इस्वरअनुग्रहतेबडरि करमक
 रसनिहकाम ॥ तबउपजतिवेरागकुनितापावै
 विश्राम ॥ ६० ॥ श्रवणमननकैहोतहीसाबीभास
 तजाहि ॥ निश्चैकरि तजानयहैविश्राम
 मसुताहि ॥ ६१ ॥ साबीजाग्रतमैसोइसपनैहीमै
 सोइ ॥ साबीसोइसुषयतिमैप्रतिब
 तलेदरिहोइ ॥ ६२ ॥ जानियहोउ
 सुषयतिमै साबीपनौनिदान यहै
 अकरताहैसदाकहतजुसदा
 प्रमान ॥ ६३ ॥ मिलैअविद्याहोतहैकरताया
 कोनाम ॥ नातैदाहोनामतेनांदिनहोतवि
 राम ॥ ६४ ॥ अंतहकरतसंजोगतैजीवकहत
 द्यायाकैतीनसरीरहैयहिलौकारनआ
 ॥ ६५ ॥ चैतनकोप्रतिबिंबजबहोतिअविद्या
 साहीसोजानोसहीकारनदेहकहैजु ॥ ६६ ॥

अंतह्करणचतुष्टयसोऽसृष्टिर्बिम्बदेहः॥ इदिविधिकरिणदे
 शगतितीजैस्सुखसुखदः॥ ३१॥ अंतह्करणसुखारणमन
 बुध्दिचित्तअहंकारादोतअविद्याकैमित्तैःइदिविधिना
 मयकारा॥ ३२॥ तादृशैः... सबकहत यदमनमा
 रोजुबनाशायतेसुधस्वरूपलोकबहुबुधिर्जाइ॥
 ३३॥ चित्तकौतातेकहतसबउज्जलकरीयेधोया॥ अहं
 काररूकौकहतहरिकियैसिधिदोइ॥ ३४॥ ज्ञानचार
 नकौत्संबेइदिविधिदेतलपाइ॥ कौजुमिलिइनेके
 विषेमलिनअविद्याआइ॥ ३५॥ औरदेधियातेजबे
 होइअविद्याहरि॥ जीवनामतबहीगयेरह्योबहु
 नरहरा॥ ३६॥ सुनितबमनहैचेतनाबुधिप्रकासहैसु
 बि॥ धियताचित्तसमरथताअहंकारपरतबा॥ ३७॥
 इदिविधिकरिणजानतद्वैसैसुधस्वरूप॥ रूपप्रतब
 वाकैसंबेअपनौनाहिनरुपा॥ ३८॥ जीवअविद्याक
 र्मप्रतिपापप्रतिहेमानि॥ सुखदुःखइनेकेभोगसब
 यहोबहुकरिजांनि॥ ३९॥ बबलतापरबतनदीधा
 तुसमुद्रवषांनि॥ दामिनघनओराबरफयहोबहुक
 रिजांनि॥ ४०॥ पंबीकीटपतगपसुअरुजलचरपहि
 चांनि॥ धूलचरकिंनरजष्यरूपहोबहुकरिजांनि
 ॥ ४१॥

समवेयहोवह्लकरिजोनि॥४१॥ घरीपहरअरुने
दिनप्रबमासलेमांनि॥संबबरितुअनेनजुगयहोव
ह्लकरिजोनि॥४२॥ कलपकालआकासअरुप
वनतेजपरमांन॥जलअधीयदिदिसोयहवह्ल
करिजोनि॥४३॥ सपरसरूपरुग्ंधरससहअ
थविनुपार॥विनाअरुसहसहजेयहोवह्लनिर
धार॥४४॥ परापसंतीमध्यामाअरुबेपरीप्रकार
इहिविधिबानीआरययहोवह्लनिरधार॥४५॥
वेदसाधुसुमिरितिसकलबहुबुधिबाकवि
चार॥सर्वेयबिसिधांत ॥रुयहोवह्लनिरधार॥
॥४६॥ मुरुउपदेसरुसिष्कनिसतरजतमवि
स्तार॥नीचऊचअरुसमविसमयहोवह्लनिस्था
रा॥४७॥ सहअवनउपमानअरुहेअनुमानअ
पार॥देवहोतप्रतबसोयहोवह्लनिरधार॥४८॥
अनुपलक्षिपरमानइकअरुथायातिपैधार॥इहि
विधिकहेप्रमानषटयहोवह्लनिरधार॥४९॥
भावअभावरुतरकजेअमसंसेजगजार॥निश्चेवि
किरुजातहैयहोवह्लनिरधार॥५०॥ बरतचारि
दरसनबहोजेआअमहैचार॥विनआअमपाव
उसबयहोवह्लनिरधार॥५१॥ मरुऊउरुऊजेस
वेबंधमोबसंसार॥अरुसमानविसेषयहो
विधार॥५२॥ मायाइस्वरजतनकनिरु

अरु विस्तार ॥ कारनकारजनि तिस्रनि तगरोखह
 निरधार ॥ ए३ ॥ बडे बडै है पारलो तिन तौ न रोख
 पारा यह निश्चै करि जानत त्व है अरु निरधार ॥
 ध ॥ जामै है सब ही कहू कहन सनन जा मां हि ॥ ता
 ते न्यारौ नै कनहि नहि न न्यारी नो हि ॥ ए ॥ ॥ ॥ जु
 समुझि कै एक ब्रह्म असे कहत अनेक ॥ ऐतौ भेडा
 बहोत सब तब धरन एक ॥ ए ॥ ६ ॥ सख बा भेदो
 सबै सब ही कहु वामां हि ॥ न्यारे हात अण्णाने ते
 उ न्यारे नां हि ॥ ए ॥ ७ ॥ यह निश्चै करि जानत यति
 येयाहि बिबेक ॥ एक एक कहै एकै एक कान
 यह एक ॥ ए ॥ ८ ॥ कीनौ जसवंत सिंध यह आग
 तत्व विचार ॥ अरु अपरो विसि दंत यह भयो
 नां निरधार ॥ ए ॥ ९ ॥ या अपरो विसि दंत नो
 अरु धरै मन मां हि ॥ यूटै सो संभारै ते फि
 फिर आवै नां हि ॥ ए ॥ १० ॥ इति श्री मादराग
 जसवंत सिंध जाति अंगन सिद्ध नंगन
 लियत वोजा रुमदत श्री विंगम अंगन मंगल

॥ शोधय ॥ श्रीपरमात्मे नमः ॥ ॥ बरवै ॥ एकदंतगजबद
नसुगवरीनंदा विघनहरतंगनियतिकर अनंदा ॥ २ ॥
दोहा ॥ अपनी इबाकरिकीयौ विस्वरूपपरकार ॥ बंद
नपरमानंदको जो जगको आधार ॥ शाव्याससूत्रको
नासपटसंकरकरौ वनाशाता ओढै अंगानको सी
तसंबै मिटि जाइ ॥ ३ ॥ संकरगंगातट विषै बैठे सहजसु
नाशात होउ दासी पुरष इकनमसकार कियौ आइ ॥
४ ॥ तदसंकर प्रबो कहौ जातिनां उग्ररुवांज ॥ अरु
मनकी इबा कहौ कोय आपत जिगांज ॥ ५ ॥ बरवै ॥ ज
तिन जॉनत आपन तातन मात ॥ जीव सबै मो कहत क
रत जब बाता ॥ ६ ॥ मिथ्या जॉनि प्रपंच नयौ दुषइना वि
षय सुषन मै दुष बडु सुष अति नन ॥ ७ ॥ घर कुंटे ब
नही मेरे आवत काम ॥ मोहूतै उन को नहि जात बि
राम ॥ ८ ॥ विषय सुषाममता तैनी कज हो द्वाय द
सब जूबीनागत ममता मोहि ॥ एण अरि न ॥ सुक
धिरिया घर माहि पुरष कै रहत ज्हा सुवामरे ड्य
होइ धिरी नही दहत ज्हा ममता ही दुष करु मो
हिय ह मास हो ॥ परिहां कंमि सरनै जॉन को तमे
हिराषही ॥ १० ॥ बरवै ॥ इनवातुन दुष उय जे अ
चरिज को न ॥ मोत नही मै अरि जॉनत होना ॥ ११ ॥

२६ ॥ सब दै इष की घांन ॥ १३ ॥ काम करत यह सब ही
 अचरिज सा ॥ ज ॥ बिन ही कारन देष ऊ उय जत
 काज ॥ १४ ॥ रुधिर मांस की मुरति बीन ब होत ॥ ता
 ही मै सिंगार पगट उंदेत ॥ १५ ॥ रूप दिया रुमन
 कौ करत अधीन ॥ सुधि आये हू सब अंग की नै
 दीन ॥ १६ ॥ जब उय जैत बस ऊत कबु वैनां हि
 धरमा धरम विवेक तबै मिटि जां हि ॥ १७ ॥ दुष्ट सदा
 ही जां नौ इष कौ हेत ॥ ता आधीन नये ते न ही इष
 देत ॥ १८ ॥ काम दुष्ट कै ज्यों ज्यों होत आधीन ॥ महा
 प्रबल इह त्यों त्यों बड इष दीन ॥ १९ ॥ क्रोधा वे
 स नये कबु परत न जांन ॥ पूज्य अब धन सूजे इक
 रै निदान ॥ २० ॥ इह करि कौत कलष ऊन अचरि
 ज वात ॥ धरम विवेक न रहै कर अघ घात ॥ २१ ॥
 ॥ लोभ सुमारा जांनि न का हू देत ॥ सदा कुमारा
 दी कौ दैय हू हेत ॥ २२ ॥ लोभ मिटावै सब गुन अ
 रु गुर कांनि ॥ पुनि हू वाई अयनी निश्चै जांनि
 ॥ २३ ॥ त्रिय ति होइन त्रिक बरू अचरिज जो
 इ ॥ ति कुल लोक की संपति जो घर होइ ॥ २४ ॥
 ज्यों ज्यों बीन सरार पुष्टि त्यों आस ॥ या त्रिष्टा
 ॥ २५ ॥ देह बुटै हू बुटत
 न इषारोगा देव नमोग ॥

॥२४॥ मोहो वे स न दै ह्य र ह त न ग यो न प मि थ्या ज ग कौ क
 र त जु स ञ्च स मां न ॥२५॥ ध र म रा द भै र व त्त न म न कौ दै त ॥
 अ ध र म नौ कौ ल ग त या कौ दै त ॥२६॥ रा ग मो ह कौ ह्य
 स ज ञ्च त ह्यै न ॥ बु धि वि वे क मि टा व त क र त अ चै न ॥
 ॥ म दै तै इ ङ्गि य ग यो न स वै मि टि जा ङ्ग ॥ ध र मा ध र म वि वे क
 क ह्न न ल य ङ्ग ॥ २७ ॥ पी यै क र त वि क ल ॥ ता तु ब म द
 री त ॥ बि न पी यै त न वि ह्न ब ल य द वि प री त ॥ २८ ॥ प
 र गु न तै इ ष उ प जै म ब र ज ञ्चि न ॥ ध र म वि वे क न र द र्श क
 की द ञ्चि न ॥ २९ ॥ ए ष ट ड ष के क र न प र ग ट दे ष ॥ अ ब स
 इ ङ्गि न के गु न क हौ वि से ष ॥ ३० ॥ दे ह च ल न वो हार स
 न के स थ ॥ मो रे न ञ्चि न ए व सि द्ध ञ्च न हा य ॥ ३१ ॥ नै न दि
 ष च त स ब द्धि मि थ्या रू प ॥ सी य मां जि रू यो य क र त अ न्न य
 ॥ ३२ ॥ अ व न न तै स ष अं ब लो पा यो न ञ्चि न ॥ त्रै सौ क ष
 न स न ञ्चो जि हि ड ष ज ञ्चि न ॥ ३३ ॥ स प र स र स न ञ्चि न
 ड ष की ष ञ्चि न ॥ क र म ञ्चि न ॥ कै ज ञ्चि न स मां न ॥ ३४ ॥ नै
 नि दी प क दे ष त प लो प तं ग ॥ अ उ नि द्ध ञ्चि न इ ञ्चि न
 ॥ ३५ ॥

॥३५॥

॥ ३६ ॥ नै वा स अ ञ्चि न ॥ ३७ ॥ र
 स न ञ्चि न ॥ अ द ग ल बां डी मी न ॥ त्रै सौ ग ज स प र स तै
 बं ध न ली न ॥ ३८ ॥ अ रि न ॥ ए कि क इ ञ्चि न ॥ अ न्न इ ञ्चि न
 ॥ ३९ ॥ यो चो मि लि मो मां हि क सौ इ न्न तै स हौ ॥

इमोहिमनलेतहै॥ परिहांपहौडुषकीषानिसदाडुषदेत
 है॥१॥ अंतहकरनविचारहैइहिरीति॥ यहसबअ
 पनैबसकरकरतअनीत॥१॥ विषैरूपमनचंचलधि
 रनहीहोइ॥ संकल्पविकल्पयाकैहैगुनदोइ॥१॥
 बुधिकोकारजनिहचैनिहचैजांनि॥ मनकैपाबैरह
 तगनतनहिहांन॥१॥ अहंकारयहकहतजुमैसो
 कौन॥ कोऊवौरनदेखतजामैहो न॥१॥ सुधिराष
 नगुनचितकौऔरनबांन॥ मनकौघाघायाकौजांनि
 निदान॥१॥ अंतहकरनअरुजागसबडुषकौरूप
 ॥ बिनसुखदेखतसबकौरंकुरुनृप॥१॥ एतौडुषमै
 जांत्योअपनैजांनि॥ तबमैबांडोघरुअरुकुलकीकां
 न॥१॥ आवतआवतआयोतुम्हरेपास॥ जानतह
 अबकैहैपरनआस॥१॥ मेरीइबाकुलीसुकही
 वनाय॥ तुमसरनैहोआयोलेडबयाइ॥१॥ अरि
 संकरदेसाबासकहोतुंधन्यहैसतपुरुषनकीरिज
 गततैनिन्यहै॥ तेरीइबासुनतनयोसुखचित्तकौ॥ प
 रिहांदितकारीयहदसाकरैगीहितकौ॥१॥ दोहा॥
 तैजुकहीसंसारमैडुषहीभासतमोहि॥ अैसेहीयहजां
 नतजैसैनासततोहि॥१॥ जिन्हैअविद्याआवरनति
 रिलीनोसुखसो

॥१॥ रोगीमीवोषायज्युडुषीहेतपरिणाम॥ तौ
 हीजगसुखसौलसतअंतजांनिडुषधाम॥१॥ एकअ

विद्याश्रमं रेजानसकलसंसारानासंश्रविद्याम्ये
नतैयहैमंननिरधारा॥५५॥कह्योजीवपरंणामिक
रिदीजेमोहिवताइ॥५६॥नयदारयकोतहैवैयाक
रिजान्येजाइ॥५६॥तदसंकरत्रैसैकह्योसाधनप
थमउपाइ॥५७॥पीबैग्यानप्रकासहैसहजेतामैआइ
॥५८॥एषटसाधनकहवहौआदिद्वैजज्ञास॥
समदमइंदीबसकरनमुषिमोषकीआस॥५९॥बो
हीबसतनफिरिचहैसोइउपरमजानि॥बवैतितिब
मानिलैसुखडुखसहैसमाना॥६०॥एसिधसाध
नहैबहैतामैकरतप्रकास॥औरपावनोसातवै
सतगुरुहरनआस॥६१॥इस्वरअनुग्रहतैइहो
आयोमैरपासातोकोअधाचाहियैबचनविषैवि
स्वास॥६२॥करनकहतहौजोगहवतेरहितको
जोज्ञासाधनकरिअष्टांगकौज्यौचितउज्जलहो
इ॥६३॥बंदनकरिकैजीवतबस्यौधरिमनप्री
ति॥विधपूर्वहवजोगकीकहियैमोकौरीति॥
६४॥जमुअरुनैमहिजानित्वंआसनप्राणायाम
॥प्रत्याहाररुधारणाध्यानसमाधिसुनाम॥६५॥
जमहैपांचप्रकारकौइहिविधिस्तुतमानिबुरो
नवाहैऔरकौताहिअहिंसाजाना॥६६॥सत्ता
सांचुकौबोलनौअस्तेकीयहरी।

जेन होरा योय है प्रतीत ॥ ६६ ॥ परनारी सो राधाये
 ब्रह्मचरिज सुचिदेह ॥ अपरिग्रह ममता तजेज
 मया चोग निलेख ॥ ६७ ॥ नैमुयां च विधि सुविद्य है
 इंडी सुध असुचित ॥ विष्मात्याग संतोष तप करै ब
 तादिक नित ॥ ६८ ॥ स्वाध्याय जु पढतै रहै अध्यात्म
 चितलाइ ॥ प्रतिधांन नित विष्णु कौ चिंतन करै बना
 ॥ ६९ ॥ सुप्रधिर आसन बैति कै घटक्रम करै बनाइ ॥ ता
 या बैकहि हों बडारि प्राणायाम सुनाइ ॥ ७० ॥ अरि
 ॥ नेती धोती वसती न्योली जांनीये ॥ नसत्री चाटका
 घटकर मवषांनीये ॥ इनतै सुध सरीर करै गौमांदिरे
 ॥ परिहां ॥ तबैक चाई नै करै गौमांदिरे ॥ ७१ ॥ दैह
 ॥ यसब करै कैकी जीये प्राणायाम प्रकार ॥ एक
 कुंन करै च है गती न्यो निरधार ॥ ७२ ॥ और वोर सो फ
 रि कै मन कौ ल्यावै वोरि ॥ प्रत्याहार सु जांनिये जा
 मेन हि मन दौर ॥ ७३ ॥ एक वोरि चितलाइ येय है
 धारना होइ ॥ चितला गौला गौर है ध्यान कहवै
 सोइ ॥ ७४ ॥ परन हीना सत ही धेय रूप चितमांदि
 ॥ सोइ जांनिस माधियह और विषे कानांदि ॥ ७५ ॥
 ॥ इन वातन सु चित कौ उज्जल करै बनाइ ॥ श्रव
 न मनन करि कै करै नित अध्यासन नाइ ॥ ७६ ॥
 ब्रह्म विद्या कौ तत जेबे समुझ श्रवण सु होइ ॥

यद्वद्वरावैजुगति करि मनन करवै सो ॥ ३४ ॥ नि
त अध्यासन अरथ कौं दिठकी नौ चित मां हि ॥ ता कौ
सुमरन नित करै न लै बिन रूनां हि ॥ ३५ ॥ जीवक
हो साधन सबै मेकी नौ चित लाइ ॥ अनुग्रह करि
कै ग्यां न अब दीजै मोहि बलाइ ॥ ३६ ॥ संकरा वायो
वाच ॥ विस्वरूप एस कल त्वं मिथ्या ही करि देषि ॥
क आत्मा सत्य है निश्चै करि कै लेष ॥ ३७ ॥ जीवो वा
च ॥ तुम प्रपंच मिथ्या कह्यो फिरि प्रबतइ हि हेत
श्रवण दिक्क रू विश्व मे सांचो फल क्यों देता ॥ ३८ ॥
संकरा वाच ॥ जौ लौ गुर हौं सिष्य त्वं तौ लौ ही जगदेष
श्रवण आदि दे एस बै तौ लौ सति करि लेष ॥ ३९ ॥ श्र
वण दिक्क तै जौ नित उय जत ग्यां न अघंडा तदश्र
वण दिक्क सिष्य गुरु मिथ्या सब ब्रह्म मंडा ॥ ४० ॥
श्रवण दिक्क है विस्व लौ विस्व ग्यां तै जाहि त्यों ही
ल करी के जरै हित आग रूनां हि ॥ ४१ ॥ जीवो वा
च ॥ संकर क्रिया कदा बितै मिटै चित के घेद ॥ जहौ मे
समुज्यो अबै विस्वरूप कौ ने दा ॥ ४२ ॥ मिथ्या न्रम सं
सार कौं वोर विनां क्यों होता ॥ जहौ रूपो जानीये देखि
सीप की जोति ॥ ४३ ॥ और आत्मा एक तुम कह्यो स
चि करि धारि ॥ ता की वोर रूप कौ कहिये मोहि
विचारि ॥ ४४ ॥ आवरि जहूँ सिंके कह्यो न लै ताहि सावा
सा अधिष्ठान या जगत कौ जौ नो ब्रह्म प्रकाश ॥ ४५ ॥

एकवैरनही अस्माव्यापकहैयहजानि॥इहिसिगरे
 संसारकोब्रह्मरूपहीमानि॥१०॥करिप्रणामजि
 ययहकह्यो जगतप्रज्यतुमआदि॥ह्यांऊसंसय
 नांमिदोकोनमितवैतादि॥११॥कह्योआत्मा
 रूपतुमयातेसंसयमोदि॥सत्यब्रह्मब्रह्मवजग
 कह्योरूपकोहोइ॥१२॥अधिष्टानहैब्रह्मसति
 तातेजगसतिजोइ॥असैहीनमसापकोरसरी
 वितानहोइ॥१३॥सादिसबिननमहैनहीजोनि
 यमेयहहोइ॥तौयहकबुवैनैमुनहिसादिसवि
 नरूजोइ॥१४॥ज्योआकासमैनीलमांसंघपीत
 रूजोइ॥पितैतैगुरकरवौलगतबिनसादिसभ्रम
 होइ॥१५॥पांचप्रकारप्रपंचमैनिश्चैतंएजानि
 अस्तिनातिअरुप्रीयतानांमरूपलैमानि॥१६॥
 अस्तिनातिअरुप्रीयकोत्रिविधिसत्तितमान
 नांमरूपएदोइतंमिथ्यामनमैजानि॥१७॥

जीवकहोयासीयमैइहैरूपयाजोइचमरूपैकौचि
तमैसीयनजानौहोइ॥१०७॥विस्वरूपयाभरमको
कारनकहियामोहि॥सत्यआत्माएकतैइजोभ्रम
कौहोइ॥१०८॥संकराचार्यावाच॥भरमरूपयाज
गतकौहेतअविद्याजोनि॥औरअविद्याकीकहो
दोइरीतलेमोनि॥१०९॥राषेदंषिसंभ्रावरनएकसक्ति
यहलेषा॥औरबिबेपसंभ्राकोऔरदिषावेदेषि॥११०॥
मिलैअविद्याकेनयेनांनारूपप्रकारात्पोहोइहिसु
धब्रह्मतेकीनौजीवअपार॥१११॥जगतब्रह्मकौहेत
दएकअविद्यादेषि॥ताकौहेतोसूलबिनरूपविसे
षा॥११२॥हेतांहीनांहीकुबुवैकहीनजाज्ञाअनिरव
चनयातैकदेवऊरूपीकेभाइ॥११३॥मायाआअ
ब्रह्मकैतातियाहिप्रकासादेषाताहीब्रह्मकौकारतअ
वराणासा॥११४॥अरित॥जबेचंदकराहआसैरहोत
हेतबेचंदमावाहिकरितउदेतहो॥ताहीससिचूराहवि
पावतदेषरा॥परिहं॥ब्रह्मअविद्यारीतयहेतलेषरा॥
॥११६॥दोहा॥मायाब्रह्मप्रकासतैआपनईस्वरहोइ
॥इस्वरहोइब्रह्मकौरूपदिषावतसोइ॥११७॥
॥मायाप्रथमअ
तसकैफेस्तिहोतदेवाइ॥अनिकैतेजस्तनईब्रह्मरि

७ रिमिताइ स्थूलतुल्यफिरियांघकरिजगतकह्योइह
 ताइ॥११७॥ अधिष्टानयाविस्वकौसुधआत्माजानि
 तोलौयदसांचौलगतजोलौनहीब्रह्मग्यान॥११८॥
 जीवकह्योतुमवचनयमेरेइसनआस॥ग्यानकह्योता
 सोअबैहोइअविद्यानास॥११९॥ तदसंकरअसैक
 ह्योसत्तिवचनयजोइ॥ग्यानयहैजोएकताजीवब्र
 ह्मकीहोइ॥१२०॥ जीवकह्योयाजीवकौरूपवत
 वोलौन॥कहीयैमोहिदयालकेब्रह्मरूपहैकोन
 ॥१२१॥ संकराचार्येतिच॥मैजुकहतहैआपकौ
 ताहीकौजियजानि॥मैनहोइवहदेहपुनिइंडीह
 मतिमान॥१२२॥ मनमैरौमनमैनहीतातेमनमैनांदि
 चितहूमैरौमैनहीमैन्यारौइतमांदि॥१२३॥ बुधिमे
 रैमैबुधितहीयहैसांचकरिमान॥यातेइनमैनांदि
 मैमैन्यारौकरिजानि॥१२४॥ रहैदेहजाकरहैजाहि
 गयैतैजांदि॥असौपाणसुमैनहीमैरौहीयहबाइ
 ॥१२५॥ जोकदाचितजानिहैअहंकारमैहोइ॥नयो
 अविद्यातेप्रगटअहंकारजडहोइ॥१२६॥ सोरवा
 अंतःकरणमैहोइचेतनकौप्रतिबिंबजब॥मैहूंक
 हीयैसोइयाहूंकौजियजानत॥१२७॥ जोकदाचि
 चेतनकैप्रतिबिंबसौदे
 ॥१२८॥ याकेतीनसरीरहै

कारणसुखिमजानि॥तीजैदेहस्थूलदेहद्विवि
धतैतत्संजानि॥१२१॥प्रथमदेहकारनक्लीतादि
अविद्यामंनि॥इजैअंतहकरनइसुखिमदेह
पिबान॥१२२॥कारणसुखिमदेहएजीवलंगोइ
होता॥पंचभूतकोतनयदेहस्थूलकरतउदात॥
१२३॥अरिना॥कारणसुखिममानदेहएदोइहो॥
यादोतै तदेखिजीवयहहोइहो॥इतदोऊकैना
सजीवपदतारहो॥परिहो॥पाबोसुधस्वस्वभ
योजोहोवहो॥१२४॥दोहो॥औरस्थूलसंशरीरयह
होतकरमअनुसार॥अबयांकीउतयतिकोता
सोकहुविचार॥१२५॥एकैनीरफिरयाचवहोत
पुरुषउतयति॥प्रथमसंकलयकीजीयेजापोदि
ककोसति॥१२६॥इजोआइतहोमकीमंत्रसक्ति
कैनाइ॥वाकोधुवासरकेमंडलयोहचोजाइ
॥१२७॥रविमंडलतैमहकैयैरत्नमियारिआनि
होतनीरयहोतासुरेइदिविधिकरित्जानि॥१२८॥
वहैअनमैआइकैपुरुषपेटमैजाइवाहीज
लहुसमुजित्चोथैदेयहभाइ॥१२९॥सुक्रव
रकैगरमैनीरयाचवैसति॥असैकरियहहोत
हैस्थूलदेहउतयति॥१३०॥करमहोइजैसक
बूतैसोहीतनहोइ॥

सोइ॥१२२॥ करमजुतीनप्रकारकेएतनिश्चैजा
नि॥संचितअरुप्रारधुदेक्रीयामांगलेमांन॥१२३॥
जनमजनमकेकरमदेतिनइंसंचितजांनि॥जिनवे
उपजीदेहयहताहिप्रारधुमांनि॥१२४॥ अबउप
जोगदेहतेक्रीयामांगएजोइ॥इस्वरआराधनकि
येबंबितसुनफलहोइ॥१२५॥ जीवितच॥मो
मनतेसबहीमिटेसंसयभरमअनेक॥आसंकाभो
जीवमेजीवकह्योहैएक॥१२६॥इस्वरसुनफ
लदेतजोआराधनकोमांनि॥तौअवतइस्वरविषे
रागद्वेषकीबांनि॥१२७॥ संकराचार्योवाच॥नि
कटगयेवंडजातहैहरिरहैवंडिजोइ॥यातेजांनो
आगिमेरागद्वेषनहीहोइ॥१२८॥ रागद्वेषकब
हुनहीनिहवैइस्वरमांनि॥करमनकोतजांनि
जडफलदाताएतांनि॥१२९॥ निश्चैत्वरूपकरम
सबजडहीकरिकैजांनि॥सदासुभासुलकर
मकोदाताइस्वरमांनि॥१३०॥ जीवकह्योयह
मेअबैसमुज्योसबैवनाइ॥ताइस्वरकोरूपपु
दीजेमोहिवताइ॥१३१॥ संकराचार्योवाच॥
तिबिंबमायाकैविषेसुधब्रह्मकोआहि॥यह
निश्चैकरिजांनतइस्वरकहियैताहि॥१३२॥ त
तस्थलबनकहतहोइस्वरकोनिरधरा॥उपजा

वेपोषे सदा ब्रह्म करै संघार ॥ १४१ ॥ अस्वरूप लब्ध
 न कहैं इस्वर को तं जंनि सुध सचिदानंद है ऐसे ही
 तं मंनि ॥ १४२ ॥ सो रवौ ॥ सता जात कुसल चित प्रकास
 को कहत है ॥ आनंद आनंद निच त्रै सै अरथ विचार ले
 ॥ १४३ ॥ जीवो वाचा दोहा ॥ तीन धर्म तु मज्झ के मो को
 द पगता शतौ वह निर्गुन को न विधि कहिये मोहि व
 नाइ ॥ १४४ ॥ जो तुम कहि हैं तीन को अरथ जु दो मन
 मां हि ॥ इन को एक स्वरूप है त्रै सो इत्त जंनि ॥ १४५ ॥ तो
 सत चित आनंद तं मंती न कहै किहि नाइ ॥ इन को अर
 थ दयाल कै कहै मोहि सम जाइ ॥ १४६ ॥ आचार जमुस
 काइ ॥ तब कह्यो धन्य तं आहि ॥ फिरि बनाइ तो सौ कहैं
 यह हू संसय जां हि ॥ १४७ ॥ सत्तया दिया तै कह्यो असत
 न कह्यो दोहा ॥ चित प्रकासता तै कह्यो प्रकासन हि
 सोइ ॥ १४८ ॥ आनंद पदया तै कह्यो कब हू नही डूष
 रूपा ॥ इति विधितै तं जंनि त्रै सो सुध स्वरूपा ॥ १४९ ॥
 यह स्वरूप लब्ध न कह्यो इस्वर को तं जंनि ॥ ताइ स्वर अ
 र जीव सौ दोहा अनेदं सुगोना ॥ १५० ॥ जीवो वाचा ॥ जी
 व कह्यो इन को सकल लोग कहत है दोहा ॥ इस्वर अ
 र या जीव सौ एक पनौ को दोहा ॥ १५१ ॥ संकराचार्यो वा
 चा ॥ अरिना ॥ बाल अवस्था मां हि पुरष इक देषीयै ॥ ब
 ऊ वैवाहि फेर बि

कह्यो वह है वह है परिहां ॥ ३६ ॥ अवस्था बां डिमानी
 ये नरव है ॥ ३७ ॥ देह ॥ त्यों जिय ते अंत द करन ॥
 न्यारो करिये मं नि ॥ ईस्वर ही संनिन करि माया अ
 मे जां नि ॥ ३८ ॥ ईस्वर अरया जीव की ए उपाधिक
 रिहर ॥ पीबि सुध स्वरूप ही रहि है वेतन पूर ॥ ३९ ॥
 ईस्वर अरया जीव कौ ए कय नौ ही ग्यांन ॥ ग्यांन मयै
 ते करम कौ होत ना सय द जांन ॥ ४० ॥ संवित यिब
 ले करम सब न सम न ये तं मं नि ॥ अब उय जे गे नो दि
 फिरि कीय मां ए हू जां नि ॥ ४१ ॥ बंधी देह जा तै र है
 क है पार क्षता दि ॥ र है देह तो लै र है द ग ध व स्र ज्यो
 आदि ॥ ४२ ॥ ॥ असौ ग्यांनी हो इ कै जीव तो लं जां नि
 ॥ सो कहिये जीवन मुक्त निश्चै करितं मं नि ॥ ४३ ॥
 ॥ सो हो जीवन मुक्त की रीत क होय द तो दि ॥ त
 हि कां मना की क बूझा हू न हि होइ ॥ ४४ ॥ अ
 पने सुध स्वरूप मे सदा मगन जो आदि ॥ इष्टा की
 इष्टा क बूक्यो करि उय जेता दि ॥ ४५ ॥ और कर
 म पार क्षा एत न लै र हिय द मां नि ॥ करम फेर
 इ न ते अ ब उय जन के न हि जां नि ॥ ४६ ॥ रहि है या क
 म पार क्ष जोइ ॥ तो लै या की देह कौ सुध
 होइ ॥ ४७ ॥ ग्यांन न ये हू देह गुन रहत दे

अथैडुषव्यापेनहीसुषितैसुषनहिमांहि॥जैसेसुष
डुषओरकेलगेओरकौनांहि॥१६५॥जबजैदेपार
एतदसरीररूजाजातौलौजीवनमुक्तहैबहुसो
मुक्तसुतां॥१६६॥देहसमापतकैविषेउपजेजा
कौं॥पानाताकौंसह्योमुक्तसबनिहचैकहतप्रमा
न॥१६७॥अनुग्रहकरिकैरावरैअबमेरीयहरी
तासुनियेप्रभुमेरीदसामेनधरिसचप्रतीता॥१६८
॥संगरेवो॥यहिलैसुषडुषसतिमोकौंएलागतहुते
ताहुमेडुष॥तिसुषहुतैलागतहुतौ॥१६९॥दो
हा॥क्रियातुम्हारीतैदसामेरीअसैजोहिासुषडुष
नैकुनभासहीमेरेसेएमोहिा॥१७०॥अरिल॥चले
जातहोएकबटाऊबासमो॥तहांएककैपुत्रनयो
हैतासमो॥तहांएककैसोकपुत्रमनलैगयो॥परि
हां॥वाहिवटाऊनैकसुषेडुषनांनयो॥१७१॥दो
हा॥असैहीदेष्टसबैसबमेसाबीहोहिासुषडु
षअरुयहदेहउनिलगेबटाऊमोहिा॥१७२॥पहि
लैरूजानतहुतौमनचंचलअतिआहिाधिरकरि
कैसैराषिहोकोनजतनतैयाहिा॥१७३॥सोमनअब
असोतयोफिरैनकितहुंओराजातनकबहुदेषि
येताहिडसरीवोर॥१७४॥जाइकहांयहमनअवैवो

२२ पंखी उहै जिहाज को नही जायगा और ॥ उहि फिरि बज
 स्यो आवही बैतन को वदवौर ॥ १७६ ॥ मन असे धिर हो
 इकैली ननयो मो माहि ॥ बुधि कूक देषत जऊ बूढ पा
 वतनां हि ॥ १७७ ॥ सोरवौ ॥ अब जो देषत चित्त या कू
 कू पावत नही ॥ गद्यौ न जानौ किति धरी बात सब सा
 थलै ॥ १७८ ॥ दोहा ॥ अहंकार रूप बग्यो देषत रूप
 माहि ॥ कबूर होइ हैता हि कू उहि विधि देषत नां हि ॥
 १७९ ॥ तप असु विद्या को गरब और ऊतो अनिमान
 ॥ ए सब रह विधितें ग एत न तें ग यो गुमान ॥ १८० ॥ मै
 जु कहावत कू सद ऊत ही मो पासा ॥ ता की तो मो कू
 अब नैक न आवत बास ॥ १८१ ॥ अहंकार मो को अब
 नासत आहि अन्त प ॥ अब जग सि ग रौ मै न यो मै ही
 आनंद रूप ॥ १८२ ॥ त्रिगुन बंधते दार तो घर घर अ
 बन मां हि ॥ बंधन बूढे धिर न यो चल्यो जाइ अब नां
 हि ॥ १८३ ॥ जित जित अब कू जात कू तित ही तित
 समाधि ॥ मुक्त हौं न की नैक कू र ही न मो को साध ॥
 १८४ ॥ पाली वौर न नैक कू कहा निकट कहा हरि
 सिंधु लौर हो आत्मा हरि ॥ १८५ ॥ यह
 हि ॥ ग्यान अग
 ॥ १८६ ॥ न समन न
 ये ठ प ज्यो तहां परमानंद प्रकार ॥ सुख हवात चाहत

कह्यो आवस्य कइ कवार ॥ १८३ ॥ कहैं कौन सो
मोहि अब उमह्मासतनां हि दिषत हू करि एक
सब सुख अत्मा मां हि ॥ १८४ ॥ नाना विधि देषत हू
तो उब प्रकास कै मां हि ॥ अब हू महां प्रकास तै दे
षत कबु वै नां हि ॥ १८५ ॥ आनंद फल प्रापत न
यो उम प्रसाद तै आशा उम यहू सै मां नी यो ह
जा सहज सुभाइ ॥ १८६ ॥ जो हैं बोलत हो कबु
सोली जो जय मां नि ॥ और क्रिया जे हाथ की ते स
ब मुदा जां नि ॥ १८७ ॥ यो इत तै उय जत क्रिया य
रद बना सुआ हि ॥ अरु जो भोजन करत हू हो
म जां नी यो ता हि ॥ १८८ ॥ जब हू सोवत हो त बैल
ऊरु वत मां नि ॥ ए सब तन की चेष्टा मेरी करि मति
जां नि ॥ १८९ ॥ उय जत हू ए देह तै ए मो मे कबु हू
ना ॥ बोलन हू देह तै तै बोलत बैना ॥ १९० ॥
॥ तद संकर सै कह्यो मन मै अति सुष पाशाद
सा आयन तै कही मो सौ सबै वनाइ ॥ १९१ ॥ द
सा जु जीवन मुक्ति की नि संदेह न इतो हि ॥ धनि
जां नितो हू अ बै आनंद उय जै मो हि ॥ १९२ ॥
और जु यह संवाद हू मेरो तेरो जां नि ॥ इ हि आन
द विलास कौ सुष समुद करि मां नि ॥ १९३ ॥

जौ आनंद विलास कौं पढ़ै सनै वितलाइ ताको
उपजै ग्यान फुनि जीवन मुक्ति सुताइ ॥१७७॥
भाषा की नौ ग्रंथ यह जसवंत सिंघ बनाइ अरु
आनंद विलास तब दीनौ नांव जनशरण ॥
रमया कौ या कै पढ़ै जे वपढ़ै वितलाइ फल
या कौ तब आपही समझै सबै बनाइ ॥१७८॥
संबत संवत् २६६६ वैशाख परचौबीस। सुकल
पक्ष कार्तिक विषै दसमी सुतर जनीस ॥२०१॥
इति श्री माहाराज श्री जसवंत सिंघ जी कृत आ
नंद विलास ग्रंथ संपूर्ण ॥ ॥ श्री कल्याण मसु
लिषतं दोआदुल्लाह तश्री आंबेर मध्ये वैतमासे सं १७९॥

ए विषय इति न कृणुः। कथा ईश्वरी का एकी वि
 प्रतिद्वरे ह्यः॥१०५॥ को ए विषयै शाल गै जा का
 को ए गुमां नः॥ पर दुर्जन वे ई धे निद्र सो को ए दुर्मां न
 ॥१०६॥ जो शान ए गग का ही धै विनां सहे कु कुत्रा भः
 सो अपराधी का पुरसः। निव हीर ह्ये उ दसः॥१०७॥
 सो ई द ग ग म सु र सोः सो ई र्जित म सु जां एः॥
 गुणी साध म सु म ति सो जा के धन सु विधां न
 ॥१०८॥ मू प व न गु ए व न सो सो ई स र क ली नः
 कृ जो म र कु द स ए क हे न ये ध न ही न॥१०९॥
 दो र्प दी जै म म कं च द्रु बु धि क नि ही नः॥ प ड रे
 उ नू के स द न धे च द्रु ग वी एः॥११०॥ चु ग ली
 कै र्ध ध न ह नै धूं नी दि ली द्वि चोरः॥ लं प र म सु
 का य र ह्म पं ए ये सै के स व गेरः॥१११॥ जे न र के
 सु द व नी म हित क र ली हो यः। हि उ द्वा री द्र उ वा
 य वे व ली वि र ली हो यः॥११२॥ सु व को म ग र सां
 ति ज ल ग को नां हि नै सां ति वि नां जुं ग्ग न है द्र व
 वि नी ज्युं म हः॥११३॥ गो र्ध वी ग लो कां व डु का
 म प्री र गु ज रा गः॥ प र स रां भ या जी व कृ दि न
 क र्वा धि ले जा तः॥११४॥

उतराफालुनायादेसिंह॥५॥उतराणात्रयपादाहसचित्रा
र्धकलाद्वित्रार्धस्वातिविशाषापादत्रयंतुलः॥विशा
षापादमेकंअनराधजेष्टांतदृष्टिकमूलंनपूर्वेषा
ढाउतराषाढापायेधनुः॥उतराणात्रयःपादाःश्रवणध
निष्टार्धमिकारः॥अधनिष्टार्धस्वातिनीषापूर्वीनदपदया
दत्रयंतुलः॥२॥पूर्वीनदपदयादमेकंउतरारेवसंतम
न॥१॥ इतिचंद्रशिषमाण॥अथराशयः॥मेष
वृषश्मिथुनरकर्कधसिंहपुंकांसादुलः॥वृश्चिध
तुंमकरशुक्रमीन॥इतिराशिषमाण॥ ॥
चुचेचोलालिलुलेलोअमेषः॥इतिउर्वविबुवेवोवृ
षश्चकिकुघडबकेकोहमिथुनः॥रहीऊहेहोड
डिडुडेडोकनीममिमुमेमोटटिटुटेसिंहपुंकांपिपु
अणठमयोकांसादूरिसरोरततिठतेतुलः॥तोतनि
तुतेनोयविबुधश्चकः॥ज्येयोमतिपुधफडनधनु
मोजजिजुजोखखिखुखेखोगमिकरः॥शुक्र
गाससिससोदकंन॥२॥दीउराजयदेदोचविनी
नः॥१॥अलामेषः॥उकादृमश्कावमिथुनः॥उडाह
कर्कधमावसिंहपुंकांसादरातातुलः॥नोजा
वृश्चिकोचनोअधनः॥अजामकरः॥गोदसाऊ

मः१२॥ द्वासीतः२२॥ तिराशिप्रमाणे॥ ॥ निजराशिः
द्राशिःफलंशेषंशुभांशुत्तं॥ जन्मस्थेकसतेपुष्टिः॥
येनास्तिनिर्दिष्टः॥ द्वतीयेराजसत्मानंचतुर्थेकलः॥ हागं
पंचमेत्त्रार्थपरिचंसंज्ञे॥ षोडशेरासंयः॥ रश्मिन्क्षन्त्यागमं
षष्टेराजपूजाचसप्तमे॥ अष्टमेप्राणसंदेहोत्तमसेतोरागं
वचः॥ द्वादशमेकार्थनिष्पत्तिः॥ क्रवमेकादशेराजयः॥ द्वादशे
नरायांकेनमृत्युरेवनसंशयः॥ इतिचंद्रफलं॥ तिथिः
कशुणंशोक्तं॥ नक्षत्रं च चतुर्गुणं॥ वारं च षट्गुणं॥ शो
करणं षोडशान्वितं॥ ५॥ धात्रिसंज्ञुणोयोगस्ताराषष्ठीगुणोत्तरा
चंद्रस्यसंज्ञुणंशोक्तं॥ स्तस्माच्चंद्रबलाबलं॥ ६॥ शुक्लमहोर्बलं
चंद्रः॥ कृष्णेताराबलीयसीद्विशंपचपनवमं॥ अष्टप्राकपदीः
रुवदशदा॥ ७॥ मेघेचसिंहेधनुः॥ पूर्वभागेष्टेषचक्रंन्यामय
रेज्याम्यां॥ मिथुनेतुलेकं॥ तचपश्चिर्मायां॥ कर्केअलोमीनस
उत्तरायां॥ ८॥ सन्मुखेअर्धलाभायदक्षिणस्यसंपदा॥
ष्टितोमराणंचैववामचंद्रोर्ध्वनक्षयः॥ ९॥ इतिचंद्रफलं॥
जन्मरुक्षाजणेष्वादौदिनं॥ शब्दंउयावत्॥ नवमिअक्षरं
शंशेषाताराविनिर्दिष्टोदा॥ १०॥ जन्मताराद्वितीयाचपदीचं
चतुर्थिका॥ अष्टमानवमातारापटताराशुभावदा॥ ११॥ यद
पिबलवानचंद्रोमुनिभिः॥ कथ्यतेपुत्रप्रदोभवति॥ युनय
तदपिडरितं॥ त्रिदशंपचपसप्तस्थितातारा॥ १२॥ १॥

त्रिरविजीयाचधुककलोदत्तवापयसनीदराह
 सीवीरा७अनंदाजनवमी७॥सुता॥१२॥इतिरा
 जल ॥ ॥विष्णुत॥प्रति२॥आयुष्मान्नसोता
 म्पधवोभनस्तथापप्रतिगंजदमुकमीच७धृतिदस्
 ल॥सथेवचगं जोशरुदिर१॥कवमेव१॥व्याधातो१॥
 हर्मण१॥लथावज१॥सिद्धि१॥द्व्यतीपात१॥वरीयान१॥
 परिध१॥सिव१॥सिद्धि१॥साध१॥शुत१॥शुक्त१॥

ब्रह्मा२५पेन्द्रो२६वैधृति२७॥इतिसतावीसयोगां
 नाम॥ ॥परिधाद्व्यतीपातवैधृतिसकलसजेद॥
 विष्णुलेघटिकापंचशूलेसप्तप्रकीर्तित॥षट्गंडेच
 तिगंनेचनवव्याघातवज्रियेत॥१४॥इतिद्योगफल
 ॥अतीतिथयोर्विघ्नाशुक्लेप्रतिपदादिषु॥एकोना
 सप्तशताचशेषंस्यात्बनादिकं॥१५॥बबं१॥बल

वंश्चैव कौलवंश्चैतलं ॥ १५ ॥ वणिजं हविष्टं रिसा-
 ऊः करण निचराणि च ॥ १६ ॥ अंते कृष्णच उद्देश्यं राकु-
 निरदशीदिनागयोः ॥ नवेच उष्यदंतागं किंस्तद्व्यतिपा-
 दले ॥ १७ ॥ विष्टे विना बवाद्ये मुकणेषु दशस्वपि च उव-
 र्गप्रिता कार्या कर्णीया च मुना कृया ॥ १८ ॥ सप्तस्य संक-
 मेनागे तैतले च उष्यदे ॥ गरे विष्टानवेष्टि स्य वणिजे वा-
 लवे बवे ॥ १९ ॥ उद्देश्यतस्य किंस्तद्व्यतिपादौ कौलवे-
 नवेत् ॥ कनिष्ठमध्यम्यफला धान्यार्धे निष्टि मुक्ता मादौ ॥ इति
 कर्णप्रकारः ॥ ॥ दिवोद्विप्रहरस्याज्यच उर्ध्वसप्तमस्तथा-
 द्वितीयपंचमो ह्यष्टमिषष्टारविपूर्वकः ॥ २० ॥ आद्या बुध-
 सूर्यस्तते द्वितीया सोमे त्रितीया गुरौ च उर्ध्वी ॥ षष्ठी कुजे
 सप्तमका च शुक्रे सूर्याष्टमी कालकला विवर्ज्या ॥ २१ ॥
 इति कालवेला ॥ ॥ कुलिकं रा निविज्ञेयं गुरुं चैवोप-
 कुलिकं ॥ कदकं नौममेवं ही वारमादौ गणे बुधे ॥ २२ ॥
 मघा कं चारे रा किने विरागाः ॥ आद्या कुजे उक्तं ते च मूल-
 ॥ वक्रि गुरुं ब्रह्मवती च शुक्रे ॥ रा नौ च हस्ते यमघटयो-
 गा ॥ २३ ॥ यमघटे गते स्युः कुलवेदकरमुदे ॥ कर्तुं स-
 त्यप्रतिष्ठायां शिशुजीतो न जीवति ॥ २४ ॥ इति यमघट-

विनाखात्रवमादित्येपूर्वाषाढात्रयं नाना ॥ धनिष्ठादि-
त्रयं भौमे बुधे च रेवतीत्रयं ॥ २६ ॥ रोहिण्यादित्रयं जीवे-
युष्यत्रयं च भागवे ॥ २७ ॥ त्रयं चोत्तराफाल्गुन्यां शनिवा-
रेण वरजयेत् ॥ २८ ॥ इति उत्थातमृत्ककाणयोगः ॥
मूलं श्रवणोत्तरा नक्षत्रास्तिकाचपुनर्वसु ॥ पूर्वा-
फाल्गुनी स्वाती तानां सिद्धयोगप्रकाशिताः ॥ २९ ॥ इ-
ति सिद्धयोगः ॥ ॥ मासस्य प्रतिपदा श्रेष्ठा द्वितीया का-
र्वसाधिनी ॥ त्रितीया द्वे ममारोग्यं च उर्ध्वी च धनदा-
ः ॥ ३० ॥ पंचमी च श्रिया नित्यं षष्ठी च कलहप्रीया ॥
नयानसमायुक्ता सप्तमी सखिदा स्मृताः ॥ ३१ ॥ अ-
व्याधिः बृजलानवम्यां मरणं ध्रुवः दशमी नृमि-
ला भावय एकादशी च सिद्धदाः ॥ ३२ ॥ द्वादशी प्राणसं-
सर्बसिद्धात्र द्योदशी ॥ शुक्ला बायदिव कक्षाव-
नीया चतुर्दशी ॥ ३३ ॥ पूर्णमास्यां अमावास्यां प्रस-
न्नैव कारयेत् ॥ नंदा नक्षत्राज्यारिक्ता पूर्णाः ॥
स्थिरयत्र मातुः ॥ ३४ ॥ प्रतिपत्तुष्टकादव्यास्तां श-
फलाः ॥ शुक्ले नंदा बुधे नक्षत्रा मंदेरिका-
ज्या ॥ ३५ ॥ गुरौ पूर्णं खिलारं न सिद्धाः सुप्ति-

थयः क्रमात् ॥ १५ ॥ ऊतवहः कमलजः गिरजाव्रजः
 दनः भुजंगाग्रहृदिनेत्राः त्रिवाचः ऊर्गिण्यमः ॥ १६ ॥
 श्वेताः ११ च्युतः १२ मन्नेः १३ श्वरः १४ राक्षितः १५ पुराणे
 काः १६ तिथो हि दशसंज्ञकेषु नृणां संधीश्वरान् ॥ १७ ॥
 यो दशतिथीययोः स्मृतस्तु चित्रयोः परे ॥ १८ ॥ आदि-
 त्ये चाष्टमी हस्तश्चिनी चोत्तरात्रये ॥ मूलं पुष्यधनिष्ठा
 याः सिद्धियोगा प्रकीर्तिताः ॥ १९ ॥ सूर्ये निशाभा नरणा
 दा दशतिथीचतुर्दशी अनुराधामघाजेष्टा विरुधा सप्तमी
 सदाः ॥ २० ॥ सोमे च नवमी पुष्यश्रवणरोहिणी मृगः ॥ द-
 रा म्यां च सदा मैत्रं सिद्धियोग प्रकीर्तिताः ॥ २१ ॥ चंद्रे
 चित्रोत्तराषाढा पूर्वाषाढा विशाखयोः ॥ एकादश्यां च
 त्रयोदश्यां षष्ठीयत्नेन व्रजयेत् ॥ २२ ॥ सोमे षष्ठी च
 तीया च अष्टमी च त्रयोदशी ॥ मूलाश्चिनी मृगोऽश्लेषो
 याः सिद्धा उत्तराश्रयदाः ॥ २३ ॥ मंगले आर्द्रा धनिष्ठाया
 द्वितीया पूर्वभाद्रपदा ॥ शतमीषा उत्तराषाढा दश-
 म्यां च विव्रजयेत् ॥ २४ ॥ बुधवारे द्वितीया च सप्तमी द्वाद-
 शी शुचः ॥ मृगो नुराधा पुष्यं च सिद्धा कृतिकरोहणी ॥ २५ ॥
 बुधे धनिष्ठा नरणाश्चिनी मूलसंयुता ॥ तृतीया नवमी

चैवप्रतिपदारेवतीत्यजेत्॥४५॥गुरौ दशमापंचम्या
शुभमास्यां निशाखयो॥योस्माश्चिन्योरनुराधसिद्धि
पुष्पपुनर्वसौ॥४६॥जिह्वेष्टमाचउर्ध्वचित्राश्रद्धा
तरफालुना॥रोहिणीशतमीषष्टीकृतिकामृग
वर्जयेत्॥४७॥शुक्रे प्रतिपदाषष्ठीएकादस्या
चत्रयोदशी॥पूर्वाफारेवतीश्चिन्योःश्रुतिमेत्रादिति
शुभा॥४८॥मार्गवेरोहिणीजेष्टाद्वितीयासप्तमीशु
भा॥पुष्योऽश्लेषामश्रावेवसर्वकर्माणिवर्जयेत्॥४९॥
शतौचउर्ध्वनक्षत्राच उर्ध्व्याचरोहिणीः॥श्रवणे
शमश्रास्वातीपूर्वाफालुनासिद्धिदाः॥५०॥शौरेह
स्तोत्रराषावारेवतीचित्रसप्तमी॥षष्ठीचोतरफालु
न्यापूर्वाभावाविजर्जयेत्॥५१॥इतिसिद्धियोगश्च
द्वयोः॥पुनरेवप्रवक्ष्यामिस्त्येयं दहति वांतिधि
॥वेपुवेपुचराशिश्वउभयोचरपिद्वयोः॥५२॥ध
नुमानेद्वितीयाचउर्ध्वीदृषऊंमयो॥मेघकाके
द्वयोःषष्ठीकन्यामिधुने चाष्टमी॥५३॥दशमी
द्विचिकेसिंहेनादशमकरेउले॥एताश्चतिघ
वोर्दग्धादौघैराशिश्वितेरवौ॥५४॥एताज

उनजीवेतयदिसकसमोतवेद॥ निवाहे विधवाना-
रीवात्रायांमरणंध्रवं॥ कृषीसर्वविनाशायवाणिज्यं
मूलनाशनं॥ ५५॥ इति अर्कदग्धातिथिकलं॥ षष्ठी
उशानिवारेणशुक्रेणैवउससमी॥ अष्टमीगुरुसंयु-
क्तानवमीचंद्रदेहजे॥ ५६॥ दशमीशुभिषुत्रेणसो-
मेकादशातथा॥ सूर्येकादशाप्रोक्ताः कर्कटवो-
गाप्रकाशिताः॥ ५७॥ इतिकर्कटवोगः॥ ५८॥ आदि-
त्येचाश्विनादेवासोमेमृगसिरस्तथा॥ नौमेअश्लेषाचै-
वबुधेहसंययोयवेद॥ ५९॥ गुरौअनुराधाश्चैवशु-
क्ररवाढयो॥ शनौशतभाषाचैवआनंदादि-
कीर्तिताः॥ ५९॥ आनंदश्चालदंडश्चधृमाक्ष-
जापतिश्चसोमश्चध्वाक्षश्चधनुश्चावबधुमुकर-
पवत्रश्चमेत्रश्चमानसश्चयदाक्षश्चलुपकश्चउत-
श्चसुतश्चकाणश्चसिद्धिश्चशुभश्चअमृतश्च-
लश्चगणश्चमातंगश्चराक्षसश्चचरश्चधिर-
श्चवर्द्धमानश्चइतिआनंददिवोगः॥ आदिस-
हसेगुरुणश्चपुष्यः सोमेनसोमं तृगुरेवतीच॥ बुध-
श्चाश्विनिरोहणश्चनौमाश्विनश्चाशुतसिद्धवोगः॥ ६०॥

॥६०॥ इति त्रिमृतमिन्द्रयोगः ॥ सप्तस्यारविना
 रस्यादपक्षस्यादौ तिघौ बुधः संव
 तीक्ष्णसदायोगो विजयेष्ठतकम
 स्या ॥ इति संवतीक्ष्णयोगः ॥ भर
 णाभानुनाचैव सोमे चित्राप्रकाति
 ताः ॥ कुजे चोत्तराया धनिष्ठा च
 प्रदेहजः ॥ भगुरौ चोत्तराफालुन्यां शुक्रै जेष्टा प्र
 कातिता ॥ रेवती श्रुति संवत्ता ज
 न्मरुक्षाय प्रकातिताः ॥ शिविवाले
 शुचवैधव्यं प्रवेशं मरणं ध्रुवः ॥ क
 श्री सर्वविनाशा वनाणि ज्यं मूल
 नाशनं ॥ इति जन्मनक्षत्रं ॥ दस्ता
 द्यापंचनक्षत्राणां धनिष्ठा श्रुति रेव
 ता ॥ हेमकंकाणरत्नानां सोमार्कगुरुत
 र्गवः ॥ इति चूडारोमधारतः ॥ पुष्यो मेत्र
 धनिष्ठायां चित्रा रेवति रुपां उत्तरात्रयां शुभा
 ब्राह्मी प्रवेशं कारयेत् ग्रहे ॥ इति काति धिभूक्त
 भातुवारे निद्यासुयोगापरिवर्जनीया ॥ मेघकुली
 करतुलाश्च यज्या प्रवेशं दिवया

तदंशः॥२॥इति नवधरप्रवेशमङ्गलः॥पुष्पेतिष्टा
मृदुवायमूलैश्चिराच्चिनीविभवतथाचहस्तः॥प्रभाप्रति
ष्टाबहुपुत्रपौत्रणभवति नार्यःपौत्रिवलभाचः॥वा
रणसूर्येणभवति रोगाबुधेनवैधव्यकुजेनमृत्कः॥जी
वेडंशुकेणवानेश्वरेणसिद्ध्यतिकार्योणिबद्धमवे
राः॥इतिपैसारैरोमङ्गलः॥जीवारिभास्करदिनेगुसहस्त
मूलेब्रह्मेडविष्णुयवनोत्तरसौम्यभेषुकन्याकुलीरज
मृष्टश्चिकःकीटलग्नेधविलबन्धनविधिश्रुतकृतव
धनाः॥इतिचामरआटीरोमङ्गलः॥करत्रयेवैभवरेव
ताचदितिद्वयेचाश्विनीभेधुवेषु॥कृत्वाशिशूनांतृते
चतददविलंबितासुसुखदाभवती॥१॥इतिपालणै
रोमङ्गलः॥हस्तेडमैत्राश्रवणस्थितिष्यपौष्मश्रविष्ठाच
पुनर्वसौचश्रेष्ठानिधिष्ठातिनवप्रवाणेत्यत्कात्रि
पंचापदिमसप्तताराः॥२॥इतिहलाणैरोमङ्गलः॥
अर्द्धगुरुडकरवगघडबिलावश्चबज्रजसि
हृदवटवडुवणस्वानधतथदधनसर्पपयफबभूमस
द्विरलवहिराः॥श्रावसहमीढाः॥इत्यष्टवगः॥दा
शम्याचतुतायायाकृष्णपक्षेपरेदले॥सप्तम्याचच
उदरेणाविष्टःपूर्वदलेस्मृतः॥॥का॥५॥

चशुक्लपक्षे परे दत्ते ॥ अष्टम्या पूर्णिमा च विष्टपूर्व
 दत्ते स्मृतः ॥ २॥ इति तत्राः ॥ पण्डितः ब्रह्म
 रसः ११ तं दा बीज २ सप्तमी ७ बारसः १२ तदा ताज वज्र
 २ सी ७ ॥ ते रसः १२ जमा चो धनवर्मा च वंदरा १४ रि
 ता पांचम ५ दशमी १५ पूजमः १५ पूर्णिमा ॥ इति तिथिः
 शानं ॥ माते मे प्रेक्षो लायी च त्वारो वृषकं तयो धनु
 ले सप्त कं न्यायं बाणं धनक के यो आनल ग्रे नवे
 त्राणि प्रसूतिकायां प्रवर्तते ॥ १॥

मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	उ	वृ	ध	म	कु	मी
३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
३५	११	३	४३	४७	५०	५३	५६	५९	६२	६५	६८

मंभः १२ श्रिक यो ४ तौ मः शुक्रैव
 म २ उलो ७ न तो बुधः कं न्या ६ मि
 धुने २ प्रोक्तः कर्कस्य चंद्रमा १
 स्यान्मानः ॥ १२ धन्विनो जीवः राति
 मं कर कृतयो ॥ सिंहस्या धियं स्व
 कथितो गणः कोत्तमैः ॥ १॥ इति रासि स्वामी ॥ ॥

वेमैरुलेऽप्रोक्तः प्रस्यद्वयश्च द्विकौ भौमस्यतृगुण
कौचकं न्यामीने बुधस्य च जीवस्य कर्कसकरोमीने
नये सितस्य च ॥ उलामे भौचमंदस्य उच्चनीच उदाकृतः
॥ इत्युच्चनीचानि ॥ रवीं उभौ मगुरवो ह्यशुक्रशनि
हवः स्वस्मिन् मित्राणि च त्वारियरस्मिन् रात्रवः स्मृ-
ताः ॥ १ ॥ कंत्या राहु गृहं प्रोक्तं राक्षसं मथुने स्मृतं ॥ राहु
नीचं धनुर्बीणादिकं शनिर्बदस्य च ॥ २ ॥ जीवास्ते मगु-
सन्तु ये गुरुगृहे सर्वे च गेहगुरौ ॥ शुक्रे स्ते कं विदूषण-
च सयने विस्मृर्वि सधे दिने ॥ दृष्टे नार्गव नंदने च सयने
मासाधिके तो दृजे त कंत्या यो च विवाहितान् ववधू-
वर्षीत्यरनो ब्रजेत् ॥ ३ ॥ इति वर्षीत्यरं नववधूदोषला-
आदित्यात् सप्तमं क्रमं नस्मयोगं विनिर्दिशेत् ॥ अत्र किं
चित् कुसते कार्यं तस्मिन् नस्म तां ब्रजेत् ॥ ४ ॥ इति नस्म-
योगः ॥ चतुर्थः षष्ठः द्द्वनवमे एदशमे एचत्रयोदशे
विंशदिने शुभं दिने रवियोगशुभमिति ॥ १ ॥ एकस्त-
ययंचास्म नजं तिगयं दसहसा ॥ तद् रवियोगय एकाग-
वणमिगहानदी संति ॥ २ ॥ नक्षत्रकर्मयोगे शुभमघं वेग-
लग्नहे ॥ सर्वेषां अवयोगानां रवियोगे न हन्यते ॥ ३ ॥ न-
कास्तं कालयासादि नक्षत्रावयोग कृत् ॥ सर्वेषां उ-
ष्टयोगानां रवियोगे न हन्यते ॥ ४ ॥ इति रवियोगः ॥ १ ॥

कृतिकाभरणीमूलआश्लेषपुनर्वसु॥सधाचित्राविशा
 प्राचश्रवणेदिशमस्तथा॥१॥एताप्राप्तहरिष्यास्त्रीस्नाने
 नकारयेत्॥यदिस्नानप्रकुर्वीतपुनश्चतुर्नजायते॥
 ॥२॥प्रतिपन्ननवमीचैवषष्ठासंगलशुक्रयो॥स्त्रीनज
 मनिविधवास्त्रीस्नाननकारयेत्॥३॥देवामीपुत्रन
 दायस्वयंनारायचयोदशी॥द्वितीयाउभयनाराय
 तास्नानविजयेत्॥४॥ऐन्द्रानुराधानिलरेवतीषुष्य
 जायतिवीर्यसौम्यधिक्षं॥श्रवणवृश्चिकितथोत्तराणिम
 वारागनास्नानशुभानिभानि॥५॥इतिस्त्रीप्रस्तुतिस्नान
 मङ्गलः॥उत्तरारोहणीहस्तसौम्ययवनरेवती॥धस्त
 स्त्रीस्नात्वाचानुराधाश्रिणीषुवः॥इतिदशोत्तरारो
 मङ्गलः॥पुष्येचादित्यचित्रयज्ञतनयोशक्रोत्तरारेव
 तीस्नातौवाजिविशायमित्रसहितंभानौगुरौभागवे॥
 ऊर्ध्वेकीटगृहेष्टयेमृगयतौचंद्रसुतेवाकतेसनादश
 रकुंतयडगबुधैकाधारेष्टियाणंहिता॥१॥इतिहृषि
 यारेवांधनरोमङ्गलः॥अदितकमलनाथोचोत्तरांवि
 यविशायामभवतिनिमषवाणैसंक्रमेवाणवेदैशिवय
 शिकथितोच्चशेषत्रि
 रात्रमङ्गलैः॥इतिसंक्रांतमङ्गलैर्विचारः॥हस्तस्वानि

तुराधाश्रवणपुनर्वसुमृगाश्विनीपुष्यादिस्वल्पिदेवग
ण॥१॥पूर्वात्रयोत्रयोभरण्यादुराहिण्यपिमृत्युगणोवे
ष्टामूलं द्रव्यं धनिष्ठाश्रवणकृतिकाचित्राविशखास
घापलादिगणः॥२॥इतिदेवतामनुष्यगुरुसगण॥मृ
गादियंचश्रपिनेषुमूलेहस्तादिकेचटुतीश्रिनीपु
ष्वर्वात्रवेचश्रवणेचतुदविद्यासमारंभसंतिसिद्धौ
॥इतिविद्यारंभमस्तुतःसंपूर्णसमाप्तोयं॥संवत् २७
एववर्षेसाकेऽद्यप्रवर्तमानेमाहाभागल्यप्रदःमा
सोत्समासेचेनेमासेकृष्णपक्षेतिथौ२सोमवासरेलिष
उंउज्जमीतीरामश्रीकृष्णप्रीतर्थे॥श्रीकृष्णसूरणंमम॥

॥ सूर्यादिसप्तमंरुष्यं न समयोगं विन ईश्वर ॥ यत्किं
चित्कुरुते कार्यं तत्सर्वं न समं न वेत् ॥ १ ॥ इति न
समयोगः ॥ चतुर्थमिष्टनवमेः दशमे च त्रयोदशे
विंशदिने शुभं अधिष्ठातृवियोगाः शुभं नामतः ॥ २ ॥ अ
त्राकर्कटयोगेषु यमघंटे गल ग्रहे ॥ सर्वेषां अवयो
गानां रवियोगे न हन्यते ॥ ३ ॥ इति रवियोगः ॥ १ ॥
तिथिहस्तार्कपंचम्योः षष्ठी मृगशिरचंद्रमौ ॥ तौ
माश्विनी च संज्ञम्यो बुधे नुराश्राचाष्टमी ॥ ४ ॥ तृती
या गुरुपुष्ये एतौ मारुतगुरेवती ॥ दशमी शनिरो
हिण्यां विषययोगाः प्रकीर्तिता ॥ ५ ॥ इति विषययोगः ॥
पडिक्कामूलकिपांचमनरणी ॥ आदिमरुतिका नव
मिरोहिणी ॥ दशमि अश्लेषा पुष्ये रेवतीया ॥ ६ ॥ अ
योगज्वाला मुषीकदीया ॥ ७ ॥ जांमेतौ जीवे नही
वसेतो ऊज उथायः ॥ सूर्यवपहरे चूडलो मयका
नर लो जायः ॥ ८ ॥ इति ज्वाला मुषीयोगः ॥ १ ॥
अतः तीज संतं मधुरे दशमि दूजे दल होयः ॥ चवदशि
धुरं धारडे न जां लो लोयः ॥ ९ ॥ छेद चो यधुरं
एमी एकादशी कै अंतः ॥ पहली दूज मला गती उजल
पषं पकं ॥ १० ॥ इति नडा ॥ ठाया पादो रसो पेतं ॥ एकदि
श शतानि च ॥ लब्धां के धटिका दोया शेषां के पल नह
री ॥ ११ ॥ इति दिनमांनं ॥ सूर्यना

वसूनेन यथा उतं ॥ नवजिह्वहरे कामं । गतं रात्रि
 स्फुटं न वेद ॥ ११ ॥ इति रात्रिमानं ॥ शरवसो मन्त्रानि
 सरवारेः । दक्ष एगुद एकलौ निवारेः । अकेलुके प
 ठिमदधीः । मंगल बुधे उत्तर विरुधीः ॥ १२ ॥ इति
 दिमाशूल ॥ शरवरो हिलि सां नलि मिष्ठाः । उत्तर
 हस्तकदहो एचित्राः । पठिमश्रवणं मकरसिगम
 णां । हरिहरवन्त पुरंदरमरणं ॥ १३ ॥ इति नक्षत्रदि
 साशूल ॥ जो उगे सो पुबै दिजे सृष्टिमल्लि सिंघा
 रजिलिजेः । जाले जो सीमऊषो जालः । जहां शनीष
 रतहां ही काल ॥ १४ ॥ इति काल ॥ पडिवानवमी
 द्वेः । द्वितीया दशमी उत्तरे ॥ तृतीया एकादशी अग्नि
 याः । चतुर्थी दशानैरुतेः । पंचमी तेरसि दहले ॥
 छगचवदसि पठिमिः । सातम इति मकायभिः । आ
 ठिमश्रमावसि ईशाने ॥ १५ ॥ इ. उ. आ. न. द. प. वा.
 ई. ॥ १॥ इति योगिनी शैवासो ॥ मीनादोत्रयमादि
 लोवसकन्यादिकत्रयः । वृश्चिक्यात्रयं राहुः वर्ज
 नीयश्चयत्रतः ॥ १६ ॥ गढमढमंदिरजालयगारः । स
 नपुमराहुनकीजेवारः । मरैकलित्रके निर्धन होयः
 करैराहु पुनिश्वे होयः ॥ १७ ॥ इति सूर्यवत्तराहुवा
 समाप्तः ॥

॥॥॥ दशमी पंचमं वा रा म द्पंच वा रा एकादशी ॥ का एका
दशी पदित्या ज्यत्र तं ऊर्ध्वं वा दशी ॥ ॥॥॥ दशमी पलमे
कच एकादशी द्वयंगताः ॥ का एकादशी पदित्या ज्यत्र
तं ऊर्ध्वं वा दशी ॥ ॥२॥ लगने स्थिता दिनकर ऊरुते ग
पी जा हृष्टी सुतो वितुते रुधिर प्रकोपः ॥ काय सुतो
प्रकवीति वक्र उम साजः ॥ जीवे उन्ता ग वि कु धा सु
प्रका ति दा स्य ॥ ॥३॥

॥ अथ वर्षविधिलिखते ॥ काव्य ॥ गता दृष्टंदा मुनि
मन्त्रचंद्रेन श्रोतुं योग्यं मज्जे विनक्त्या ॥ त्रिधा फलं
^०_१ ^१_२ ^३_४ ^५_६ ^७_८ ^९_{१०} ^{११}_{१२} ^{१३}_{१४} ^{१५}_{१६} ^{१७}_{१८} ^{१९}_{२०} ^{२१}_{२२} ^{२३}_{२४} ^{२५}_{२६} ^{२७}_{२८} ^{२९}_{३०} ^{३१}_{३२} ^{३३}_{३४} ^{३५}_{३६} ^{३७}_{३८} ^{३९}_{४०} ^{४१}_{४२} ^{४३}_{४४} ^{४५}_{४६} ^{४७}_{४८} ^{४९}_{५०} ^{५१}_{५२} ^{५३}_{५४} ^{५५}_{५६} ^{५७}_{५८} ^{५९}_{६०} ^{६१}_{६२} ^{६३}_{६४} ^{६५}_{६६} ^{६७}_{६८} ^{६९}_{७०} ^{७१}_{७२} ^{७३}_{७४} ^{७५}_{७६} ^{७७}_{७८} ^{७९}_{८०} ^{८१}_{८२} ^{८३}_{८४} ^{८५}_{८६} ^{८७}_{८८} ^{८९}_{९०} ^{९१}_{९२} ^{९३}_{९४} ^{९५}_{९६} ^{९७}_{९८} ^{९९}_{१००} ^{१०१}_{१०२} ^{१०३}_{१०४} ^{१०५}_{१०६} ^{१०७}_{१०८} ^{१०९}_{११०} ^{१११}_{११२} ^{११३}_{११४} ^{११५}_{११६} ^{११७}_{११८} ^{११९}_{१२०} ^{१२१}_{१२२} ^{१२३}_{१२४} ^{१२५}_{१२६} ^{१२७}_{१२८} ^{१२९}_{१३०} ^{१३१}_{१३२} ^{१३३}_{१३४} ^{१३५}_{१३६} ^{१३७}_{१३८} ^{१३९}_{१४०} ^{१४१}_{१४२} ^{१४३}_{१४४} ^{१४५}_{१४६} ^{१४७}_{१४८} ^{१४९}_{१५०} ^{१५१}_{१५२} ^{१५३}_{१५४} ^{१५५}_{१५६} ^{१५७}_{१५८} ^{१५९}_{१६०} ^{१६१}_{१६२} ^{१६३}_{१६४} ^{१६५}_{१६६} ^{१६७}_{१६८} ^{१६९}_{१७०} ^{१७१}_{१७२} ^{१७३}_{१७४} ^{१७५}_{१७६} ^{१७७}_{१७८} ^{१७९}_{१८०} ^{१८१}_{१८२} ^{१८३}_{१८४} ^{१८५}_{१८६} ^{१८७}_{१८८} ^{१८९}_{१९०} ^{१९१}_{१९२} ^{१९३}_{१९४} ^{१९५}_{१९६} ^{१९७}_{१९८} ^{१९९}_{२००} ^{२०१}_{२०२} ^{२०३}_{२०४} ^{२०५}_{२०६} ^{२०७}_{२०८} ^{२०९}_{२१०} ^{२११}_{२१२} ^{२१३}_{२१४} ^{२१५}_{२१६} ^{२१७}_{२१८} ^{२१९}_{२२०} ^{२२१}_{२२२} ^{२२३}_{२२४} ^{२२५}_{२२६} ^{२२७}_{२२८} ^{२२९}_{२३०} ^{२३१}_{२३२} ^{२३३}_{२३४} ^{२३५}_{२३६} ^{२३७}_{२३८} ^{२३९}_{२४०} ^{२४१}_{२४२} ^{२४३}_{२४४} ^{२४५}_{२४६} ^{२४७}_{२४८} ^{२४९}_{२५०} ^{२५१}_{२५२} ^{२५३}_{२५४} ^{२५५}_{२५६} ^{२५७}_{२५८} ^{२५९}_{२६०} ^{२६१}_{२६२} ^{२६३}_{२६४} ^{२६५}_{२६६} ^{२६७}_{२६८} ^{२६९}_{२७०} ^{२७१}_{२७२} ^{२७३}_{२७४} ^{२७५}_{२७६} ^{२७७}_{२७८} ^{२७९}_{२८०} ^{२८१}_{२८२} ^{२८३}_{२८४} ^{२८५}_{२८६} ^{२८७}_{२८८} ^{२८९}_{२९०} ^{२९१}_{२९२} ^{२९३}_{२९४} ^{२९५}_{२९६} ^{२९७}_{२९८} ^{२९९}_{३००} ^{३०१}_{३०२} ^{३०३}_{३०४} ^{३०५}_{३०६} ^{३०७}_{३०८} ^{३०९}_{३१०} ^{३११}_{३१२} ^{३१३}_{३१४} ^{३१५}_{३१६} ^{३१७}_{३१८} ^{३१९}_{३२०} ^{३२१}_{३२२} ^{३२३}_{३२४} ^{३२५}_{३२६} ^{३२७}_{३२८} ^{३२९}_{३३०} ^{३३१}_{३३२} ^{३३३}_{३३४} ^{३३५}_{३३६} ^{३३७}_{३३८} ^{३३९}_{३४०} ^{३४१}_{३४२} ^{३४३}_{३४४} ^{३४५}_{३४६} ^{३४७}_{३४८} ^{३४९}_{३५०} ^{३५१}_{३५२} ^{३५३}_{३५४} ^{३५५}_{३५६} ^{३५७}_{३५८} ^{३५९}_{३६०} ^{३६१}_{३६२} ^{३६३}_{३६४} ^{३६५}_{३६६} ^{३६७}_{३६८</}

पहली तो गत वर्ष मांडी जै पढे सवाया की जैः॥
 पढे प्रहृ की जैः॥ पढे दोहा की जैः॥ पढे सवाया
 में जन्म रोकार लेली जैः॥ अर आधा में घड़ी जैली
 जैः॥ सुख दया तूरी घड़ी लेली जैः॥ अर दोहा में पल
 लेली जैः॥ जन्म लग्न वैतै में गत वर्ष लेली जैः॥
 पढे साढा बापे श्रावो नागदी जैः॥ शोष आकर
 है ति को मुंथा रो जैः॥

वसूनेनयताडितं॥ नवजिह्वहरेकागं॥ गतरात्रि
स्फुटंनवेव॥११॥ इतिरात्रिमानं॥ शरवसोमत्रानी
सरवारेः॥ दक्ष एगुरु एकलौनिवारेः॥ अकेलिकेप
छिमरुधीः॥ मंगल बुधेउत्तरविरुधीः॥१२॥ इति
दिमाश्रुल॥ शरवरोहिलिसांनलिमिन्नाः॥ उत्तर
हस्तकदहोएचित्राः॥ पछिमश्रवणंमकरसिगम
णं॥ हरिहरबंनपुरंदरमरणं॥१३॥ इतिनक्षत्रदि
साश्रुल॥ जोउगेसोपुबैदिजैसृष्टिमल्लिसिंधा
रगिलिजैः॥ जोलो जोसीमऊषोआलः॥ जहांशनीष
रतहांहीकाल॥१४॥ इतिकाल॥ पडिवानवमी
नूबैः॥ द्वितीयादनामीउत्तरो॥ तृतीयाएकादशीअग्नि
योः॥ चतुर्थीद्वादशानैरुतेः॥ पंचमीतेरसिदहलेः॥
छमचवदसिपछिमिः॥ सातमक्षतिमकायमेः॥ आ
ठिमआमावसिइहांनेः॥१५॥ इ० उ० आ० न० द० प० ब०
ई॥१॥ इतियोगिनीशैवासो॥ मीनदोत्रयमादि
त्योबसकल्पादिकत्रयः॥ वृश्चिक्यात्रयंराहुःवज्र
नीयश्रयत्रतः॥१६॥ गढमढमंदिरजोलयगारः॥ स
नपुमराहुनकीजेबारः॥ मरैकलित्रकेनिर्द्धनहोयः
करैराहुपुनिश्चेहोयः॥१७॥ इतिसूर्यवठराहुवा
समाप्तः॥

॥ ॥ दशमी पंचमेश्वर मन्त्रः ॥ दशमी पंचमेश्वर मन्त्रः ॥
दशमी पंचमेश्वर मन्त्रः ॥ दशमी पंचमेश्वर मन्त्रः ॥
कंच एकादशी द्वितीयः ॥ एकादशी द्वितीयः ॥
तं कर्कशं दशमी ॥ ॥ लगने स्थिता दिनकरः ॥
पीडां दृष्ट्वा मुतो वितनुते रुधिरकोपः ॥ कायमुने
प्रकृतिवत्कुरुष्व राजः ॥ जीवेत्तु गन्धर्वः ॥
प्रकृतिदास्य ॥ ॥ ॥

॥ अथ वर्षविधिलिखते ॥ काव्य ॥ गतादृष्टं दृष्टं
 शान्तं चंदनं शोभनं सोमं शुभं जेवितं तपः ॥ विष्णुं च
 कारयती पलां नि ॥ मुजन्म वारा विद्युता निना निना
 मपादमाहं च साहं च जन्म वारा दिसंयुतं ॥

प्रहलीतौ गत वर्ष मांडी जै पकै प्रदाया की जैः॥
 पकै प्रदु की जैः॥ पकै दौं ठा की जैः॥ पकै प्रद यो
 मै जन्म रौ वार लेली जैः॥ अर आधा नै छुड़ जै
 जैः॥ स्तु र्यो दया तूनी घडी लेली जैः॥ अर दोह नै प्रद
 लेली जैः॥ जन्म लगन रूवै तै मै गन कब लेली जैः॥
 पकै सा दा बा रे थ॥ रौ ना गदी जैः॥ दोह कर
 है ति को मुंथा रौ जां ली जैः॥

वस्तुनंनयताडितं॥ नवनिश्चयेकागं॥ गतरात्रि
 स्फुटंनवेद॥११॥ इतिरात्रिमानं॥ सर्वसोमवानी
 सरवारेः॥ दक्ष एगुरु एकलौ निवारेः॥ अकेष्टिकेप
 डिमरुधीः॥ मंगल बुधे उत्तर विरुधीः॥१२॥ इति
 दिमाश्रुल॥ सर्वरोहिणि सांनलिमिन्नाः॥ उत्तर
 हस्तकदक्ष एचित्राः॥ पठिमश्रवणं मकरसिगम
 णां॥ हरिहरवन् पुरंदरमरणं॥१३॥ इतिनक्षत्रदि
 साश्रुल॥ जोउगेसोपुबेदिजेसृष्टिमल्लि सिंघा
 रगिलिजेः॥ जोलेजोसीमऊमौआलः॥ जहांशनीछ
 रतहांहीकाल॥१४॥ इतिकाल॥ पडिवानवमी
 द्वेः॥ द्वितीयादवासीउत्तरे॥ तृतीया एकादशीअग्नि
 योः॥ चतुर्थीद्वादशानेकतेः॥ पंचमीतेरसिद्धहलेः॥
 षष्ठ्यवदसिपठिमिः॥ सातमहतिमवायबिः॥ आ
 ष्टमिमावसिईशानेः॥१५॥ इ० उ० आ० न० द० प० ब०
 ई॥१॥ इतिचोगिनीशैवासौ॥ मीनादोत्रयमादि
 त्योवसकलादिकत्रयः॥ वृश्चिकपात्रयं राहुः वज्र
 नीयश्चयत्रतः॥१६॥ गढमढमंदिरजोलयगारः॥ स
 नपुषराहुनकीजेवारः॥ मरैकलित्रकेनिर्द्धनहोयः
 करैराहुपुनिश्चेहोयः॥१७॥ इतिसूर्यवत्तराहुवा
 समाप्तः॥

॥ ॥ दशमी पंचमं वासमर्पवावा एकादशी ॥ का एका
 दशी परित्याज्यव्रतं कर्कशी दशी ॥ १॥ दशमी पलमे
 कच एकादशी द्वयं गताः ॥ का एकादशी परित्याज्यव्र
 तं कर्कशी दशी ॥ २॥ लगने स्थिता दिनकर ऊरुते ग
 यीडा दृष्टी मुतो वितनुते रुधिरप्रकोपः ॥ कायमुतो
 प्रकृतिवक्र उमनाजः ॥ जीवे दुःखार्गविबुधा सु
 प्रकांतिदास्प ॥ ३॥

॥ अधर्षविधिलिखते ॥ काय ॥ गता दृष्टं दामुनि
 धान्नचंदनं श्रोत्रो नमो मगजे विनक्त्या ॥ विधाफलं
 वारघटी पलां निमुज नमो रात्रिदुता नितानि ॥ १॥
 मपादमाध्वे सार्धे च जन्मवारा दिसंयुतं ॥

पहली तो गत वर्ष मांडी जै पळे सवाया की जैः ॥
 पळे प्रदुकी जैः ॥ पळे दोढा की जैः ॥ पळे सवाया
 मै जन्म रोवार नेली जैः ॥ अर आधा मै घडी जेली
 जैः ॥ सूर्योदया त्री घडी नेली जैः ॥ अर दोढा मै पल
 नेली जैः ॥ जन्म लग्न वैतै मै गत वर्ष नेली जैः ॥
 पळे साढा बांरे १॥ रोना गदी जैः ॥ रोम आकर
 है ति को मुंथा रौं जा री जैः ॥

। श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथ मङ्गलं लिख्य
 ते ॥ ॥ आदित्ये अश्वनी देया ॥ सोमे मृगशिर
 स तथा ॥ नौमे अश्लेषा चैव ॥ बुधे हस्त प्रजो ज्येष्ठा
 तथा ॥ १ ॥ गुप्तं अनुराधा चैव ॥ शुक्रे उत्तराषाढयो
 ॥ शनौ शति निषा चैव ॥ आनंदादि प्रकीर्तिता
 ॥ २ ॥ इति आनंदादि जोग ॥ ॥ नगुरो दक्षिण
 गच्छे ॥ न पूर्वो शनि सोमयो ॥ शुक्रार्कयो न प्र
 तीच्या ॥ न उत्तरा बुधो मयो ॥ १ ॥ इति वारदि
 सामूलः ॥ ॥ पूर्वो रोहिण्यमुणरे मित ॥ उत्तरा
 हस्तकदक्षिणचित्रा ॥ पक्षिमश्रवण ॥ मकरसि
 गमणा ॥ हरिहरबंभपुरंदर मरणा ॥ १ ॥ इति द्वा
 डैरो मङ्गलं ॥ ॥ पुष्ये मेतत्र धनिष्ठायां ॥ चित्रा
 रेवति वारुणी ॥ उत्तरात्रय मृगो ब्राह्मी ॥ प्रवेसं
 कारयेद्गृहे ॥ १ ॥ रिक्ता तिथिर्भूतमानुवारे
 नद्याश्च योगा परिवर्जनीयो ॥ मेषकुली रोम
 करतुलाश्च ॥ त्याज्या प्रवेसे हितथा तदंसा ॥ २
 ॥ इति नवाग्र प्रवेस मङ्गलं ॥ ॥ पुष्ये हस्ते
 तथादित्ये ॥ मृगे च श्रवणे तथा ॥ जलप्रज्ञा च

नारीणां। गरजसंपद्यते सुषं॥१॥ इति जलवा।
पूजा मूलतः॥ ॥ ऐन्द्रो नुराधा नलरेवती॥
। प्रजापतिर्वसवसौ मयि क्षिप्रः। पूर्वात्रयं त्रीणानि
द्योतरोणि। वारंगनास्नां नमुजानितानि। ॥
इति दश उवणरो मस्तुती। इति काजरणी।
मूलं आद्रा पुष्य उन्नर्वसु मघा चित्रा विशाखा च
श्रवणे दशमस्तथा एता प्राणहरा रिद्धा। स्त्री
स्नानं नकारयेत्। दशमी पुत्रनाशाय। सर्वना
शाय त्रयोदशी। उतीया उन्नयनाशाय। ता
मुस्नानं नकारयेत्। जदि स्नानं प्रकुर्वेत्। पु
नः प्रसूति न जायते। प्रतिपः नवमी चैव। षष्ठी
मंगलशुक्रयोः। स्त्री जन्म न विधवा ता मुस्नानं
नकारयेत्। ॥ इति दश उवणवर्जनी का
मस्तुती॥ ॥ जीवा रजा स्करदिने। युक्त्वा हस्तमू
ले। ब्रह्मे उविश्रुपव नोत्तरसौ मयेष्टु। कन्या
कुलीर ऊषष्टि शिककी टलने। धं वलि वंध
न विधिः। सुज कृतवधूनां। ॥ इति चामर आ
टीरो मस्तुती॥ ॥ पुष्ये धनिष्ठा मृगशिरा मूले

शिराश्वनीवेश्वरमघाचहस्तोऽष्टप्रतिष्ठा
 बज्रपुत्रपौत्रणी। नवंतिनार्याः प्रतिबलना
 चाष्टप्रतिष्ठाबज्रपुत्रपौत्री। नवंतिनार्या
 पतिबलनाचा। श्वारेणामूर्येणनवंतिरोगी
 बुधेनवैधव्यकुजेनमृत्युजीवेऽशुक्रेणश्व
 नीश्वरेण। सीधंतिकार्याणिबधूप्रवेशा। श।
 इतिपेसारोमस्तुत्रा। मूलाज्ञेनमघाद्विदे
 वनरणी। साय्याणिपूर्वात्रयं। ज्योतिर्विदनि
 । अधोमुषंहिनवकं। ज्ञानामिदंकीर्त्तितं। वा
 पीकूपतमागगर्त्रपरिषा। षातोनिधिरुधृति
 षेपौद्यतबिलप्रदेसगणितारंजाप्रतित्रेष्टे
 गंत्रीजंत्रहलप्रवाहगमनारंजाप्रसिध्दंतिच
 । शरंगषोदीजे। वावमीशुणाइजे। कखोष।
 णंइजे। तत्तावषणंइजे। षाईशुदाइजे। वा
 वडीषोदाइजे। इत्यरधतीमाहेगमीजे। जूवे
 रमीजे। इतपणोकीजे। मुरंगषोदीजे। गमी
 कीजे। घरटीरोपीजे। हलबादीजे। इतराथो
 ककीजे। अधोमुषनक्षत्रामांहेकीजे। श।

हस्तेऽमैत्रांशवणाश्रयिष्यापोऽस्यविष्णो
 पुनर्वसुश्चाप्रोक्तंनिषिस्तानिनवप्रद्याणे
 त्यक्त्वात्रिपंचादिमसस्तारागणनाइतिह
 लाणैरोमस्तर्त्त॥॥जीवास्तेऽगुसन्मुषेऽगु
 गृहे।सूर्यचर्गेहेगुरो।शुक्रास्तेऽकविदक्षणे
 चरायने।विष्णुविरुधेदिना।बुधेजार्मवनेंशु
 नेचनयते।मांसाधिकेचबुजेत्।कन्याज्या
 तिविवाहितानववधावर्षात्परंनोबुजेत्।
 इतिनवधप्रवेसमस्तर्त्त॥१॥अर्क्केजोमेन
 थाजीवोतीक्ष्णमिश्रोयनेषुच।रक्तश्रावो
 विधातव्योरोगवेदोचकारयेत्॥१॥नवरात्र
 श्राद्धपक्षेचाहित्वासर्वदिनानिचरक्तश्रा
 वो।प्रकुञ्चयेत्।वर्ज्जियत्वादिपंचकं॥२॥
 इतिलोहीकटां वणरोमस्तर्त्त॥॥हस्तादिपं
 चकैःश्रवरेवत्युसनिपुनर्वसु।धनिष्ठापुष्य
 शुक्रगुरुज्ञा।शुभदावस्त्रपरिधाने॥१॥आ
 दित्येजीर्जितेवस्त्रं।सोमेनित्यंजलाद्रिता।अं
 गारेवदहेत्याग्नि।बुधेचार्थः।समागमामलि
 नेचसदावस्त्रे।जवेत्तजानीश्वरं हति॥१॥इ

नवावस्त्रपहिरणरोमकूर्त्ती॥१॥ दिना
करनघ२० संख्या॥ चंद्रमावोम५० बाणे
॥ द्दिततनगजाश्च२० चंद्रजषट्पद्धारं
णि॥ अनिरसगुण३६ संख्या॥ वाक्यपति
ताग५० बाणेनयनजुगच४२ राज्जा॥ स
प्रतेशुक्रसंख्या॥१॥ इतिदिनदशाफलं
॥१॥ धातुगुणमहयोमेन॥ श्रुतिद्युगं क
रत्रयं॥ पुनर्वसुद्वयं॥ मूलं वापुतरात्र
यं॥ विषमो वसरोमासो॥ मार्गमेषश्चफा॥
त्युने॥ मकरे मिथुने मीने॥ लग्ने कन्या तुला
धर॥ जो मार्कवर्जिता वारा गृह्यते च द्विराग॥
मषष्ठी रिक्ता द्वा दशी च॥ अमावास्या च व
र्जिता॥१॥ इति द्विरागमनः वेवं धाम कूर्त्ती॥
नवेत्पूषणि मेत्र पुष्ये च साक्रे॥ करे दस्र चि
त्रानिले चादितो चागुरुश्चंद्रशुक्रार्कसोमे
षु वारे॥ तिथौ नंदपूणि जया द्वा रशाषा॥१॥
॥ इति धारसाषा वारो तच दं वणम कूर्त्ती॥॥
वरस्य नास्करबलं॥ कन्यायां च गुरुबलं॥ द
यो चंद्रबलं ग्राह्यं॥ नान्यथा स्याद्विवाहना॥१॥

वरं बलस्येतीदृशां शो। कंन्याया च दृष्ट्वा स्मृति
। धयो चंद्रबलं ग्राह्यं। पाणिग्रहणिकर्मणि।
राचतुर्थगोघादशगोष्ठमश्व। नमन्यते तास्क
रणपूजां। आद्ये द्वितीयेन वपंचमस्ते। सहस्र
रश्मौ प्रवदंति पूजां। शत्रुतीयेषु षष्ठ्ये वा द
शमेकादशस्तथा। रविशुक्रो निगदितौ। वा
रस्येव करग्रहे। षाघादशे निधने तु र्ये। देवा
चार्यगंतो यदा। पूजा तत्र न कर्त्तव्या। विवाहे
प्राणनासना। प। द्वितीये पंचमे चैव। सप्तमे न
वमे तथा। एकादशे गुरो नार्या। विवाहे स्यात्
शुभा वहा। ह। आद्ये गुरो द्वितीये च। षष्ठ्ये च द
शमे पिका। पूजां कृत्वा ततः कार्ये। विवाहे शु
भमिच्छता। श। पंचवर्षा भवेत् गुरो। कंन्या च स
प्तवर्षका। कांता च नववर्षा च। महिला घादश
वर्षिका। प। संप्रसैकादशे वर्षे। कंन्यायां जो
न विवाहिता। मासि मासिरजतस्यां। पितापि
वतिसोऽपि तं। ए। माता चैव पिता चैव। ज्येष्ठे त्रा
ता तथैव च। त्रयस्ते न रकं यांति। दृष्ट्वा कंन्या

रजश्वला ॥ १० ॥ प्रथमं अष्टादश दोषकहे
 वे वेधं लता तथा पातं नक्षत्रं ग्रहद्विषितां
 कुलिकं योगदोषं तु कुमारं परिवर्जय
 त ॥ ११ ॥ रिक्तातिष्ठिगं म्रतां वृष्टिवातिपातवे
 धृतो ॥ क्रूरग्रहयुतं चंद्रां ग्रहाणां जन्मकृष्ण
 कां ॥ १२ ॥ एकार्गल्यमघंटचा चं प्रावस्थात्र
 पग्रहं ॥ एते अष्टादशा दोषादिने चित्याततो
 लग्नं ॥ चालता पातं च वेधं चायुतिया मित्रमे
 वचा उपग्रहे कार्गलं चैवा विवाहे सप्तवर्ज
 येत् ॥ १४ ॥ पंचोर्धस्थापयेद्विषां पंचतिर्यक्
 स्थिता तथा ॥ द्विद्विचैव च उक्तेण ॥ लिषेद्वि
 दान् प्रयत्नता ॥ १५ ॥ ईशानं कृणुतिकादि
 नां ॥ निलिषेत् सुधी ॥ ग्रहांस्तत्रैव दातव्या ॥ यो
 यत्र प्रतिवर्तते ॥ १६ ॥ रिद्धं घादशमुक्ताः ॥ रा
 स्मिरं वणीमूनुस्तृतीये गुरु ॥ षष्ठं चाष्टमर्क
 जश्च पुरुतो ॥ हंति स्फुटलत्रया ॥ पश्चात् सप्त
 ममिडजश्च न ॥ वमं राहुः सितपंचमं घावि
 शं परिपूर्णमूर्तिरुडपः सतामये ते त ॥ १७ ॥

॥ रविलतावितदरीनित्यं कौजीसमादिशा
 मरणं चाद्रीत्राशंकुर्यात् ॥ वौधानाशकरो
 त्येचा ॥ १४ ॥ धनमीने पुतीयाचचत्रथीवृ
 षक्रनयोः मेवर्ककदीयोरषष्ठीः कन्यामेषु
 निचाष्टमीदशमीवृश्चकेसंघेष्टादसीमकरेव
 लेग्यातव्यातथीयोरदग्धादजदत्राशेत
 येरवो ॥ १५ ॥ इति अर्कदग्धा ॥ १६ ॥ मृगपुष्पा
 अश्वनीचित्रा ॥ अनुराधारेवतीकरससीत्व
 हस्यतिशुक्रव्यापारेमुषदायका ॥ इति व्या
 पारकरणरोमहर्तृश ॥ श्रीरस्तः ॥ १
 ॥ इंद्रो^ननुराधान^{स्त्री}लरेवती^{स्त्री}शुक्रजो^नयति^{स्त्री}वीश
 वं सोमं धृष्टः ॥ श्रीत्रयंतीनचोक्तं गणिवा
 रागनास्त्रादुक्तं नितानि ॥ १७ ॥

॥ संवत् १७७५ वैशाख वदि ११ राजा अजेय जी
दीकाने रे सहर मै अमल की यो जिको सी वण
मुष दि १ जो ध उरु कुच की यो १२ दिन पर हा
॥ जंठा नीरतन चंद अर मोदी टी ह द म वी काने र फो
जले अर अजे सि ध जी रे ऊँ क म मुकु वर अमर
सी ध जी नु वी काने र दि रा वण ने आया था सु १८०४
हुती क ये मु दि ११ आया सु सी वण व दि १२ म फ र जं
गरी ल डा ई ई र ती न र द का म आ यो अर उ म रा
व ४ व डा अर अर ही लोक घणों को म आया पखे
नो ज फा ना जी अर महाराजा श्री गज सिंह जी री फो र

॥ प्रीतिरसातेनमः ॥ अथनागदमणबंदुजंगलिय
॥ बलतोसारद्वारनऊसारदकरोयसाय ॥ प्रवाडापु
गांसिरैजडुयतिकीधजाय ॥ १ ॥ प्रनृश्रणावेयाडीया
तवडांचादंत ॥ केयालणैयवढायांकेयैयांनकरंत
॥ २ ॥ कोईनदीतोकान्हासुणोनलीलासंधः ॥ आयवै
डेऊखलैवाजांबोडणबंध ॥ ३ ॥ अवनीभारुतार
जागैयमजुगत ॥ नाथनिहांणैतितनवैनवेनिहांणै
॥ ४ ॥ बंदुजंग ॥ निहांणैतनवैननाथजागैवहेला
द्विधाधेनगोवालहेला ॥ जगाडेजसोदाजडेना
जागै ॥ महासाटधूमैतनानितमागै ॥ जिमाडेजिहुं
गावताभोगजाणा ॥ परोसेजसोदाजामैत्रक्रयाणा
रोगैअष्टावेकीयेअचमंत ॥ कहरंग्रहेयांनबाडा
किसनं ॥ लीयेलारसंगारगउचारलीला ॥ करैअ
कोजमनातटकाला ॥ सणेगांसअगमऊनीस
ला ॥ हरेवाहरेवाहवेलीहवेली ॥ भरेमांगसि
हूरमारगभालै ॥ बहेसांनलोवजसेराविचालै ॥

हेहरेहेकरे धेनदाकौः। जुरोषैचनंदकुमारजाके
हराणीदांआवलाजुलआवै॥ नगधनतीधेनगोपी
लावै॥ एकेवेवदेचोहदेआवकुनी॥ संजालेलीवा
धगोपीसस्य॥ कुवेनंदरीधेनसंधेनहेला॥ निलैवा
लाजाणआगंगमेला॥ घुरैनैरनेसारकाधेपरदे॥ त्रि
णीतरउलरेसंगतदे॥ महकंतसंधेतणोसोहमाधे॥
रुमंदिरतिलकेवैणहाथे॥ वाईवांसलसगलाअंग
वाता॥ गलैसालब्रजबालगोवालगाता॥ सबेसांव
लोआवलाब्रजसादा॥ जमनेतदेराणअहरजादा॥ र
मेवासबेसाधकोहेकरागे॥ कहुकीजीयेकानभारा
बितागे॥ बिकुचरेनाथसारीविसारी॥ कीयासारका
जोधबेबेकनारी॥ साधेपारपीडारचिहुंयारयासे॥ कि
थेलकुटीगजगोपीकलासे॥ गुडैगेडीयागीदमेदान
रे॥ धणैधूमरेउंवरयेरधरे॥ मांजाआवतौऊउलाहेक
रे॥ फरारामिलेदोटकेघोटफरे॥ मांजाआकुडेमांज
येबेलमातौ॥ रंमैसंगगोवालीदौरंगरातौ॥ मिलेचोव
आमोसामीदोटमाधे॥ कुवेइधमलांतणेहुलहाथे
वदावैघणसांकडेदोटचाडे॥ जमनांतणेनाथीकोन

रजडेः॥दुःखीलारकांहेचढेब्रमडलाः॥नरीजंफकाले
इहीनागताली॥कालीनागसंकांन्हसंभालकेवाः
॥लोधीजाणवुदोदहेमबलेवाः॥कुवोइसरोमेल
तेमेलमा धाः॥दुरेऊतरीबालगेवालहाथः॥करे
त्रिषकनांनमडे वकनां॥जोवैधनभूंकारकां
वैजमतां॥जइनाथकालीसरसबाथजोडे॥धणीनोमच
लीचढीवातघोडे॥ऊतीआयगेवालजुरंतआरे॥दाहा
कारहकारसंसारसारे॥सणेवातएधातमातासनेहा॥
जमोदाढलीकंभलीधंभजेहा॥संबाहेसघीहारहाली
सदांणा॥रहावाविचालैधकीब्रजराणा॥तरेनंदरी
नारिइदीरदोले॥षडेऊपरैएकदालीषिलोले॥जो
वैजोवतजुधमेलाजमोदा॥बाबदोयोऊदोकांन्हो
मघबृदा॥बहेलेचनेनारुग्रावदंता॥कांन्हइयो
कांन्हइयोजमोदाकदंता॥कालंदीतणेआवजुरंत
कंठा॥गयोतागचितामणारंकेवा॥बलिदेवकु
ऊदिषाबोसदांमा॥रुमैसांमतेवांसजोवंतरामा॥
मदारीददतेनदीलाहलोया॥गउगोयगोवालजुरंत

गोपी ॥ अलीघुंटाकाकरैमासआरा ॥ धामैराम
कमलदेकासथरा ॥ अत्रालक जलोदरबारआवे
मेलैनागणहेकहेकामिलावे ॥ इषेनालगोनालप्रीमे
प्रवता ॥ रहीनागणहोवलीदेवरभा ॥ नयनागुज
प्रत्ररूपजोती ॥ महामेदजातीतणोनाकमोती ॥ यणे
सावलोगांमयीलापिवोरा ॥ कणेऊयरेनागठयेक
दोरा ॥ पायेधूधराशेलत्राणंदरजा ॥ गलेमालमो
तीरुलेमालगुजा ॥ विचैडुलरीएकचोकाविराजै
जिसौरजवांहरनिबरजै ॥ बिडवांहुवाज्जतण
बांधवाहे ॥ मिणांजोतिहीरातणीनगमाहे ॥ अहीनार
जयमाललक्ष्मोलजंवा ॥ मुहचेप्रहरेलटकेठुह
ची ॥ सबैसंदरामंदरादेखसोही ॥ वलेदाउमांद
चोकाविमोही ॥ अधूरेअमृतेनजवैअघाई ॥ जि
मेकुंडलाकानकपोलजुई ॥ इषेनासिकासुधद
पककेरी ॥ कलीचंमजाणेललीलेपकेरी ॥ न
नेहदी ॥ रघुमंकजनेती ॥ सोभामीनयंजनम

सहेत॥ उऊमृकुटीसामचीदेविहोहे॥ ज
मैत्रीकसुतासयीजीणजोहे॥ अलीसैक
लीजेणकीधोअलकी॥ तालिकेसरीक
मन्त्रतिलकी॥ बाधेचोलमेरंगरीवि
गी॥ सोहेऊपरमगयंगीसुरंगी॥ चवेन
गणीचंद्रिकाभोरचेही॥ विचचंपपरथ
वाअही॥ आरहेसरोहकरेअवलकी॥
रुधोनामलोकावणोरजलकी॥ एहीन
गणीकुणजेकुमिआवो॥ हीजरेधवारधरे
ऊलरायो॥ ऊवारूपमेदेवदेवहेरान॥ ज
मेजागसीनगराघोजतन॥ अनांदाप्रवेव
नहेसैवारे॥ मगलेपगलेमहलेपधा
रो॥ रमेतैधरेदवबीजरेहऊ॥ मोरोध
वेराटअष्टीनमाऊ॥ चमकेचमकेचव
चेता॥ ललायलागुंलुलेंलेंलेती॥

एषां रूपमैवेदसंयेषसेई। जउतागरीनागरीनारिवेह।
मोहआणंददेधेमुरकी।। तूलारेवलेनाथनोषी।
ता।। कगहंतआयाअठैआजकेहा।। गहेबायरोस
योसायगेहा।। तोलानागणीनावायोगेहसूलो।। दी
आयणाताजलेधेदुलो।। षटकैमनेनागणीबोल
गो।। प्रहृजागसीमुज्याबायधारो।। कालानागसु
जायेवेगकानो।। परातातसोजैचढैमातयांनो।।
याईनागणीबोलएहानिकासै।। वसैरसणेडसणेवि
भवसै।। कहीकोरचापारहेआवकावै।। इसौबाल
देधेदयामुजआवै।। हजारामुषांजागसीनागदेवा
लडाकोनबाडैनिगधारलेवा।। महाकालकालीनि
क्युबोलमानै।। यडादोतडाआजस्तवाअयानै
जावोनागणीमामवेगा।। जजगडो।। अठैमांड
स्योआजवेवेअप्रडो।। रडजेईसामातआ
गेरंडाला।। चवैबोलापहधअकालचाला
वधारानथारैअजेबालबाला।। चलेवाकरे

तेसमाउधमालाः। बललेरमीजेधएमातमोले।
नरीजेनहीआनसुबाधमोले॥ उडेबाजडनाथन
लीजगवोअजेसुषपेपीनरीसोउआवे॥ जूनेके
धारोपरासेसजेहो॥ कालीनागसुउधरोलागकूधो
॥ बलाबालदेमोक्रिसुं कालकेडे॥ कटकीअटनान
ही॥ उरुकेडे॥ इरंगाडवाहातिदलाडुगला॥ नडी
रानकुआवलउधनला॥ नकुपेदलेदेदलेमेध
नदा॥ उडेवानकुंउभरानांभजदा॥ समालानुकी
लालकालानसाची॥ हगलापटाला॥ गलानदीध
घा॥ घोडारानउरानहीआधरठा॥ नहीधूधरेया
धरेरोलधिया॥ नहीबंदबाजुहजारीनसेषी॥ नहीजी
एअंजेसगाजीवरेमी॥ ठवेहअलेधधरंगेनगद॥
प्रीयाजीहयालेहमोजानपाये॥ ऊडीबकडीठोपनी
हीजरदा॥ गुपगीनबगीनकगीनगदा॥ करीठबरी
लनाहीकरसी॥ कूमोलीकूटापीनकुंनकुंसी
कारनकारनअगरटकी॥ बंधारनकीएककीली
वकी॥ नकेरीननेरीनेनीसाधन॥ २एगु
जेनधुरेरेवदा॥ नकुंवाजएकजमायाल
वायो॥ सुलेऊकएरलोसीअवायो॥

नकुनीषीवाषायषगेनराजीः। वडांरागनिधुनको
जंविराजीः। गुडेनालजोलीनपुनगाजे। वडे
हाककोकांनकासोकबाजे। नकुंरुबकैजेतठटे
वाई। त्रबालेवजलेनबाजेत्रिघाई। घडेवेऊने
ऊहमातीनषटाः। धुरेजांएआसाठरीमेघघंटाः।
बलकंटीठालनेजांनधजा। दीसेसुरलीहेकथा
रेडुतुजाः। आयेओइकेसुरमीएआरे। मगोलेह
डोलोहरिष्मानधारे। नदीसेनसेन्यानदीकोम
जाई। लडेकोकिसेसूलपूखलडाई। नएनागपु
त्रीजिगसुज्जरीरे। तिगीमहिपुकानदीउरुकी
रे। कटकीषगाबाघरौनागकाबै। अमीनागणीवि
गरोसुज्जआबै। बोलाजेजगडेजोवेजुधवाये।
हास्याजीपीयीवागकरगरहाये। इसोआजगेह
एनूलोकआबै। कालीनागसुंउधसेगीमकाबै।
सठेकुणकालीगीणीसीममीपे। कालीनागचीकी
महीआजकीपे। जलैत्रयनीलावडेविषजाल
वदनेमहसेवडेवोमबाला। वडासिंधसीगीगहमी
गवाला। जेरीसुंरुआजेनरेडुपूकाला। अ

रूखे धणु श्रीमदुगे अमारौः। ऊंसी आकरो मद्रु
रां पुष्ट आरौः। निज ना विषाणी थं क देनाहं।।
न दे जस वेरी जि क्रे द्यवाहः। धन गी नरे दी ल वी
वपासाः। गो नै दिषा ऊ आ ज वे ग ग म सा। म
गी न गरी दा डटे को न पे एणः। मोरो ए ए नै क इ ए
हं नै एणः। मुं जे उ हो सी ध जी द क मां हे। न टै न
गे बोल धो टा न वा हे। ज म ना ज मे ना गणी को
जोराः। फले के ए न मा व मी वे ग को राः। ज म ना ग
ना गणी वै ए जाणी। लीया बोल गी सो ज लीया
लाणी। क रे वा स सु ट सा ल जो टो कं ली रो। वले
हरे इ म रे कु ए वी रो। अ मारै न गी दि दे पुष्ट जो
। मि ज वे रि ध मि ध मा वा रु मो रा। मारै नै द वा वे
को भ ग माई। न लो ए क ब लि न द को ना म नाई।
मो कं म आ पो क्रे उ म्मो ले। की यो वा म नै डो ज
रु को ले। म नां रु न मुं के धे डी पु क मा मो। स जे
रु क ग स मे वि ग दी मो। मां मे मो क ली मो ज

॥ कसमासाः ॥ इगंधीदरोकुं कुगोउपवन्सीः ॥ घणोदी
रोमुनीयोनेमघागेः ॥ हमेजीपसीजुजुवीजोगजागेः ॥
वैमागन्नागबिहेधेनमारोः ॥ बडेआजगेनागणी
रुवारोः ॥ सुदूनीगणीकीधमेउठसेवाः ॥ गलेगोदु
उगलेगेहजेवाः ॥ नरांनेदलागीरडेभेहनीकीः ॥
मेसीजंणगेरजेरेभेदीकीः ॥ बाधादेदीजेदिजादे
बोलेः ॥ नहीनागणीगेगउदीनगोलेः ॥ पैसाजीमगे
दईबाप्रवालैः ॥ अवेगेथवासौवसैगउकालैः ॥ ६१
उधमिनीसदउषदईमगेधोलीयोधिगळगुग
माईः ॥ वराअबभीवाहसोमोवरेवीः ॥ कणासेकराका
जडाकोरकीहीः ॥ महीभागणोप्राकणोधेनमादीः ॥
अलाहलमेगलंकीजेजेमनीः ॥ अमूनागणीआथ
सीरागपुगीः ॥ पडैलालरीधेनअहिनारपीधोः ॥
लीरागनौजागवेगेणकीधोः ॥ पीयागगमेगेगया
रौपिअणोः ॥ वडागेपरापूगकायेविहीणोः ॥ उप
मेसंजेमकालीजंगडोः ॥ इमोकाडिमागुलागजा

ॐ॥ ॐ कुरु बले बापनां स्वर्गदोः ॥ सूर्योऽस्य जगत्तुल्ये
 गच्छेदोः ॥ कुरु बले बापनां स्वर्गदोः ॥ तरे आवजो ज
 गसी जं मगी जे ॥ पा बा पा पनी ना गणी गुं प्र सां ले ॥ १ ॥
 कुरे वा गवा जे विहं ले ॥ नी गो बा द डु को ई जी गो न
 नी सां ली फुण मे ए पा यो न मां नै ॥ पिता मा गरो ऊ न
 वां नै ॥ मो ती नी ऊ ई धू री सा ध मां नै ॥ दु जे नै दै धे
 ला म हू ली ॥ लाला रू न कू ई ग दू दं ग लू ली ॥ जि हा
 ऊ प डै बोल जे गो ॥ ललाले ई लले मो फुण मे ए ले
 नार तू पु ह नै मा द आं ले ॥ जि के नी म म्मा बो ल गे द
 वि धा वै ए जं ए र मे मु र्ग बाल ॥ ए ले पु कू ली वार ई वि
 लं ॥ अ म्हां पं थ मे डा गं ली धार आ गे ॥ ल स्यां आ ट म्हा
 ट ला गे ॥ मे रा दे म्मा ही र चा व म्मा दै ॥ म त्री ऊ म्हा
 क्ख ग वा दै ॥ म त्री क द्वा वं स क्री रे ग म्मा सी ॥ व डै
 धां स दा व्र ज वा सी ॥ ध रै क्ख म्हा रे व डी टा ट छा गी ॥
 म री के थ म्हा व ट ना गी ॥ र ली क्ख म्हा रे रा व पर वे रू पो
 ग ई नै दै ने स बल न्द न हं ग ॥ अ वै ना ग ली मु र्ग
 आ गे ॥ मिले क्ख म्हा उ त पां ली न म्हा गे ॥ जा ये नै
 त्र वा ट जा गी ॥ हि वै ला ग वा स क्ख गे ली कू ला गी
 ग ली रू प जे बाल क्ख नै ॥ मिले व ड रा मु द गो सा म म
 ॥ काली ना धू गो जो पु कू मा यो ॥ ज सो र मा ई नै द का वे

ॐ कुरु बले बापनां स्वर्गदोः ॥ सूर्योऽस्य जगत्तुल्ये
 गच्छेदोः ॥ कुरु बले बापनां स्वर्गदोः ॥ तरे आवजो ज
 गसी जं मगी जे ॥ पा बा पा पनी ना गणी गुं प्र सां ले ॥ १ ॥
 कुरे वा गवा जे विहं ले ॥ नी गो बा द डु को ई जी गो न
 नी सां ली फुण मे ए पा यो न मां नै ॥ पिता मा गरो ऊ न
 वां नै ॥ मो ती नी ऊ ई धू री सा ध मां नै ॥ दु जे नै दै धे
 ला म हू ली ॥ लाला रू न कू ई ग दू दं ग लू ली ॥ जि हा
 ऊ प डै बोल जे गो ॥ ललाले ई लले मो फुण मे ए ले
 नार तू पु ह नै मा द आं ले ॥ जि के नी म म्मा बो ल गे द
 वि धा वै ए जं ए र मे मु र्ग बाल ॥ ए ले पु कू ली वार ई वि
 लं ॥ अ म्हां पं थ मे डा गं ली धार आ गे ॥ ल स्यां आ ट म्हा
 ट ला गे ॥ मे रा दे म्मा ही र चा व म्मा दै ॥ म त्री ऊ म्हा
 क्ख ग वा दै ॥ म त्री क द्वा वं स क्री रे ग म्मा सी ॥ व डै
 धां स दा व्र ज वा सी ॥ ध रै क्ख म्हा रे व डी टा ट छा गी ॥
 म री के थ म्हा व ट ना गी ॥ र ली क्ख म्हा रे रा व पर वे रू पो
 ग ई नै दै ने स बल न्द न हं ग ॥ अ वै ना ग ली मु र्ग
 आ गे ॥ मिले क्ख म्हा उ त पां ली न म्हा गे ॥ जा ये नै
 त्र वा ट जा गी ॥ हि वै ला ग वा स क्ख गे ली कू ला गी
 ग ली रू प जे बाल क्ख नै ॥ मिले व ड रा मु द गो सा म म
 ॥ काली ना धू गो जो पु कू मा यो ॥ ज सो र मा ई नै द का वे

नजायोः। नहीनागणीलागथारोनवारेः। हिवेहेकही
गंवकेरुं डजरेः। प्रकाउअभाउपहिलापमायेः। घउ
राधीयेनीवडेअजथायेः। समीकादरजुंनदीसमने
लेः। बोलेकाठगेकोरपाधोरबोलैः। सुणौनांओमी
णोपुराणोसयाणीः। रोलीजैनहीजंगलेजाटराणी
कालीनागरीकांएराभेनकाईः। बकेबालनांमुं
नयाठबाईः। धुरायेसीयोपांननैधीनधायोः। वले
मालीयोमोकलेकाउकायोः। ओमोमामोहेसमीभेडआ
वेः। क्रिसुआपरोमोलआफेररावेः। पबेगीहयोठेननैमी
भमोरीः। ओरोरुंएलाजैमभोआवओरीः। नमोधीरथो
थयवैनगनारीः। जपांजोउगेसूवागवाधारीः। अठ
गाकहैवैएजेगाअघाईः। पठेगेगलाआजगेनैपसा
ईः। नरंनारिकानगणीनवीआणीः। रटीबांजुडीदेवर
एवरणीः। नारीगीमीयोसुंबीजोनमायोः। जेएणीक
णीहेकरूंहीजजायोः। आयोनगसुंजुलेकाअगगेः।
अडीलोहावोआजमावोनआगेः। वडानीचनूयालके
कालबोल्याः। समानागसुंकहीकेवानमोल्याः। अही
रावनैदाकडोपुहुआडाः। घएकादजीगाकोईकोडगडा
जुजंगणीनांगधारेनुजाराः। दिहोआंगरांर
टीगिजाराः। सदाआणीयोनागणीगांएआहुः।
वेदपासैनकुपुएथाहुः। अदिनारिसुंनारि
रीः। एमोदेवसभेअनेरीः। एना

आपणी ६६ मोहीः । नरो अमरां गीनीहीः । पव
नोन नै दोउं दो प्रवेसः । अगै एहरो गीनीही अने मेः ।
सु ए पुरमान म विचार सुनीः । धुयो इ पपुरा रिने कां ए
धुनीः । सही बोलीया बोल जे गीनी नीलीः । जयने वर
ने दीयो दोउ वालीः । गले टे नरा से बी दयो न बूहेः ।
सभी बाल पुनां गीने उय ए सूरुहेः । दिमा लै निरुं नाग
वाली दिवाजाः । वणी नाग साका बंधी को ई काजाः । नमी
ने न नारी मुरारी नरभूः । पठै सी भजं जे कर जे परभूः । रा
मा नार सी हे सभी धन रेखाः । ब्रह्म उवाला वले कुं ए विसे
माः । स ह ले ल मे को लु अरे सयाणीः । पया सां उ ने पट उ
य पट राणीः । ईया सी उ ने पट सो र्मा आरंः । सभी देव वे
रा लिष्णाल म सांः । ज ए ली गले ज ए बो हुं ही उजायो
उ पाडे ईला सो म मो ना सायोः । म जो ए गी बाल म कमा
ल माधाः । बलिराव जे हा बले जे ए बाधाः । जिगा राव
डो क ह स सी देव जे लोः । गे वा गयो आप आपो गी लोः ।
बले रो वि ए गे जिहुं दे वि बाईः । प्रतिहार कर गर मे रि
धि पाईः । सका ई दसा नाग काली सुणयोः । अहु गे
गे न ले काज आयोऊ नो मुरली ना दली धे धुरीः । मा
रा जग सी सी भवा ये म धुरीः । विक्र से ह से वे ए उ ने व
जाईः । स प गां प गले सर जे सुणईः । वधा ई वधा ई उ
सो रा वधा ईः । कुरे मुरली ना द गे वं नाईः । म धानी
र उवा जही म ल माईः । ज सो रा क ह ई क नृ जी को न
जाईः । वजा जी प सी जु च बा स वजा ईः । ज ग यार ना

रदसीमैपगईः।रहीसुरलीधुनवाजैरसीलीः।वलेजे
यनाब्रजनासथवीलीः।टलेसाथजंएअमीआरलीध
कीयोवैएनारेसजेब्रजकीधोः।विजोगेमीजोगेवगेवै
एवजायोः।अनूआपणोजीएअमृगपायोः।जिमोसि
धवैरांगकालीजगयोः।उपडेफलंकारदरबारआ
योः।अणंकादकाटकगेरुबंदेरीः।अणंयागीयोमीकूडे
सामधेरीः।अरेनंदरेधोटअइकटपुटोः।जलाबोल
माहेकलांकोलेजेहोः।नलीवाठगेमीवगीकाटनांमीः।
अनूअंगलानीमोईकुंकपीमीः।गोपीनाथमाहाअ
यागुदेः।अरोगरुजंएबूरोअउदेः।अहीमूववाजे
जेहीनहउपडेदंमैगारुजीएकालीरंमाडेः।जुडेजा
येलेमिलेनागजादीः।विठैसायनेमीबलोमुरवारीः।
उजगजेमीधिरैनारिकुंडेः।कालीनागनूअलीयोकांन
कूडेः।मैसाराउसारांभरापायकारांः।लहेलागलारांन
लायकारांः।मवेमूठमारेकूरेसोइएचारांः।कुणारांअण
रांनरेकूगकारांः।उडेडीगलांकीशुलारांअंगारांः।अध
रांजीगारांउनेत्रीधकारांः।कूकारांकरारांभमैहा
भारांः।उबंनंउधारांवहेकारवारांः।निधारांनोध
रांजुडेअमगारांः।पादूरांयहारांभवेधीरंधारांः।ध
मारांअधारांमहमैप्रसारांः।अहीगुडे

आपणी ६६ मांहीः। नरो अमरां गीं नीहीः। पव
नोन नंदौ उएं दो प्रवेसंः। अगै उहरो गीं नीही अनेमैः।
सु ए पुरमान म विचार सुनीः। धुयो इ पुरा रिने वां ए
धुनीः। सही बोलीया बोल जे गरी नालीः। वयने वर
ने दीयो रोड कालीः। गलोटे नत्रा सै बाधो न बूहेः।
सभी बाल पुना गीने सुय ए सूहेः। दिमा लै नि सुना ग
वाली दिवा जा। वणी वाग सा न्ना बंधी नो ई का जाः। नमी
ने नु नारी मुरारी नरपूः। पठै सी भ जे कर जे परपूः। रा
मा नार सी हे सभी धन रे जाः। ब्रह्म उ बाला वले हुं ए विसे
माः। स ६ से ल से को ल अरे न याणीः। पया सां उ नै पट उ
य पट राणीः। ई आ सी उ नै म सो र्म आरंः। सभी दे म वे
या लिष्वा ल म सारंः। ज एणी गले ज ए बो री ही उ जायो
उ पाडे ई ला नो म सो नार कायोः। म जो ए रं बाल म क सा
ल माधाः। बलिरा व जे हा बले जे ए बाधाः। जिग रा व
डो क डै सभी दे व जी ए। रगे वा ग यो आप आपो गी ए।
बले रौ वि ए गे जि दुं दो मि बाईः। न नि धार कर गर मै रि
धि पाई। स वा ई द माना ग काली सु लायोः। अ दु गे र
गे न लै का ज आ यो क नो मुरली ना दली धै धुरीः। मो
रो जा ग सी सी भ वा ये म धुरीः। विक्र से ह मे वै ए उ ये व
जाई। स प गं प ग ले सर गे सु लाई। व धा ई व धा ई ज
सो रा व धाई। करै मुरली ना द गे न न्नाई। म धानी
र उ ला ज ही म ल माई। ज सो रा क डी क नु जी गो न
न न न ली य सी ज च बा व ड। रं ग यार ना

रदसीमैपगाईः। रहीसुरलीधुंनवाजैरसीलीः। वलेजे
यनाब्रजनासथवीलीः। टलेसाथजंऐअसीआरलीध
कीयौवैशनादेसकेब्रजकीधोः। विजोगेरीजोगेवगेवै
एवजायोः। अन्नूआपणोजीएअमृगपायोः। जिमोदि
धवैरांगकालीजगायोः। उपडेफलंकारदरबारआ
योः। अणंकारफाटकगैरुब्धेरीः। धणंघागीयोसोब्रज
मधेरीः। धरेनंदैधोटअईकटपुटोः। जलबोल
गहेकलांसेलेजेहोः। नलीवाठगैसोवगीफाटनांभीः।
मधूंअंगलानीसोईकुंकपीभीः। गोपीनाथनाहचआ
गुडोः। अरोगरुजंणबूरोअउदेः। अहीमूठवाजै
हेहीनहउपडैरंमैगारजूजीएकालीरंमडैः। जुडैजा
गेलेमिलेनागजारीः। विठैसापनेसोबलोसुरकारीः।
जगजेगीफिरैनारिकुंडैः। कालीनागनूंसीलीयोक्रान्त
इंडैः। मेसाराउसारांभरापायकारांः। लहेलागलारांन
जायकारांः। मचेमूठमारेमूरेसोइएशारांः। कुणारांअण
गंनरैफेगकारांः। उडैडीगलांकीठलारांअंगारांः। अधा
रांजीगारांउनेत्रीधकारांः। वृंकारांकरारांभमैहाथ
पारांः। उब्बनांउधारांवहेवारवारांः। निधारांनोध
रांजुडेन्नमगारांः। पाटूरांयहारांभवेधीरंधारांः। ध
मारांभसारांसहसैप्रसारांः। अहीगुडैजांणबूलाल

गाराः। धर्मैराजधारां न लेखीय नारां। धूर्जंगाधरा।
धरकैर्धनाराः। निहसेनगारां मूरारां सवाराः।
लीनागनूकान्हूवैकराराः। कालीनागरीको
रीहरीदथाः। रहीदेववाठरीदेवरथाः। जुडेन
कालाकरेपावजायाः। करेसापरीकी। वलीमू
याः। रडेराठकाठकीयोविनेमीः। वडनेवडेऔए
यासवीमीः। कालीनागनेजुधमागेद्विभनेः। व
जमनां सरसैरवरनेः। कीयोआपसुंआपआ
वक्रनेः। मरमांयमोधसवसुधसोनभनेः। श्रीहलेड
गेपालेबडवेः। जेवोनागलीगुगनांमैडवेः। अदीराविन
वपुकोनसूजेः। आठनीडीयोसेसनासेअलुकेः। नईमीरपी
पडेगागनंगः। मनुमोडीयोरासमाधैपुनंगः। निसीगाग
वजेगलगालीः। मंडेपावआंएदयोवनमालीः। कालेना
योऊपरैमिगकालीः। वलेनागरनेअंककालीः। डरेनाग
लीनरेपोयणउचेः। नमोनामतेमायनारदनामैः। नुले
दक्षिणोरनारदनामैः। पनैगीद्विरेकानीयोनिधनामैः।
पैनाधसुंनगलीहाथजोडीः। गमेदेवमोटाअमेमति
डीः। नूकरेरेकारेजीकारेगमीसुं। आयाआजतेमाकु
जेअमांसुं। महाभेभआंएदजाधमोटाः। मरोडेक
बीयासरबमोटाः। जुडेपगेनाधणांअजडेहा। बुहा
णांऊपरैमायवेहाः। लोकांहीविनालेननूलीकला
आपसुंआपसुंयआगेः। श्रीमीरोधमाडे

मजेहीनसूहेः। बुधेदीएकुंएरावलीगनिबूहेः। ब्रह्म
उदकवीमदेव्याविहांलेः। जसोदागोहीराजनेपुत्रजा
लेः। जेवनरायाभक्तपधरावैः। नलेनंदगोईगनोपुत्र
भावेः। गभेराबलोगुणांशयोगउदेः। अरोगरडुंजी
एकटौअउदेः। पडीकापनेथापीयाराजपाईः। प्रसूव
नाहोयसापवराईः। दीयेईगनेगोसुएवैएकीधोः। क
लीनगरीनारिउकाहकीधोः। आगेनागलीनेटसोमेद
लेः। जाहनाथलीजेजिकाराजजंलेः। उकारेधएंआपय
पैअरचैः। मोवेरेदलेबीलनारीसरचैः। अहीनाभीयो
इलेबालकांलेः। असवारसुवाआयोअपलांलेः। क
नारीयोअमलातारकानेः। आयोवागराणीपडेगाधकीने
अमकादकालीगणोनीनृआयोः। बिहूबिजकुंविधनारी
वधायोः। नगवीनधेगेपगोबालनेलाः। बडाब्रजक
दिजागेएवेलाः। वागांशलीयांब्रजसेरीविशालेः।
बलेकेरीयोआंगलेनंदबालेः। नउदेहिमिंगपड
नैसंशंकेः। कालीबूटीयांथारकेकाणकीपैः। कालीन
गकालादहेइगकाठीः। कीयोबीदरीगागकाठह
ठीः। महाकालकालीगणोभाएभोउः। जसोदादि
आवीयोपीएजोउः। बगेब्रजरीपुडउकाहबालीः।
कईगंअलूकोब्रह्मकुवालीः। गउदासरेआसरेग
एगायोः। वाशंगानपोहवैवहसेसवायोः। सभ
बालीगणोभतिशरेः। सबैदसदासीनसी

गारेः॥१॥ कलसः॥ गले पुणै समवा दनं दनं दनं अहि
नारीः॥ समंदवार ससार हवो दप होइ ए शरीः॥ अन
ग अनं ग आं दस ई लव ग प स मा वैः॥ न ग ग मु ग
ग नं डार निस न मु ग ग ज न क रा वैः॥ र मी यो मिर ग रा
धार म ए ड डं उ ज न र काली र मी एः॥ त्रि उ व ए उ ए
ए न सु दे व ग ए ग व ए क ज आ वा ग व एः॥॥ इति श्री
ना ग द व ए संपूर्णः॥ समापः॥ पू लो सां इ यो मार ए उ
धिरः॥ संपूर्णः॥ मिती मो द सु दि १५ श्री जी कानेर म ध्येः॥
॥ कवितः॥ ज व किं कर को कर को कर को क र एं कर को क
र ना कर कोः॥ ज ल जो र म हा घ न घोर घ रा व्र ज उ पर को प पु
र र कोः॥ क र पु र को उ ल जो प स वै पु र को ए ज क ल
ना ग र कोः॥ ध र ते ध र को ध र को ध र को न दी को ध र को
ध र कोः॥ ज व ॥ १॥ मू ल उ प दे म क हा ला पर को को ल क हा
उ र न के म ग जा य वे ग म वा इ योः॥ जु क नी वे स म य क हा ल
प र को मू ल क हा वे म्या न मुर ग हा य दे हिन ग म इ योः॥
नि गु लां मु न ह क हा बां दे मुं स ने ह क हा मुं व की म न ने वे मि
कै से के दि रु इ योः॥ क हे क वि मां न मुं ह की को रे गु मां न ए ता
मां हि क हो या र को न प दी पा इ योः॥ २॥

॥ मोति क रा उ ह न क ष ह नौ ब नै न व न र क ल लि ष्य ते ॥
॥ अथ उ हा ॥ या वि धि वि धि यो ति ष को द ह न ग्रा वे पार ॥
अथ क ल बा र ह न व न कौ ब र ए त हे के वि भा र ॥ १ ॥ त नु
न व नै सूर ज करे न र क मू प व कृ त्रे सः ॥ वि न य र हित क
धी स धि स सार वि त्त म वि से सः ॥ २ ॥ वि त्त ह डे र वि ध न उ
लौ गु ह र गु ह म रोगः ॥ म ज न र हित उ र्ज न म धि कृ त्त
ग वि व जि त लो ग ॥ ३ ॥ अ थु दी र य ती जै न व न हो त स
न य ए क्ति त प्र चुर प्र ना व नि रोग ग मि त्र दे व गुरु न कि
॥ ४ ॥ चो यो ध न मु ष ही न न र उ प जा वै उ प ता पः ॥ क त य
न क प टी ब धू वि नि क रे सूर स ता पः ॥ ५ ॥ र वि कृ ष्ट ज
प च म करे क न्या द्री उ त्प ति क ल ही क प टी पा प र त जो श्री
कर क नि र तिः ॥ ६ ॥ र वि ठ गे उ र्ज न ह नै बा धे म कृ त प्र
ता पः ॥ स जे सा म्प्र प र वी न न र मा र हो त नि पा पः ॥ ७ ॥ द
लि क सूर ज म त्र मे हो गी क ला वि ही नः ॥ वि न न सु हा वै
नि कृ प र द ना ल क ली नः ॥ ८ ॥ रोगी मू नि ज अ ष्ट मे
ना रि षी दे षः ॥ वि त्त वि व जि त दि षु व कृ त जं प ति स
र वि से षः ॥ ९ ॥ न व मे न व नै र वि र लो करे पु ष थ म
ही नः ॥ चै च ल मुर ष नी च र त वी ल र हि ग म ति ही नः ॥
॥ १० ॥ क म र लो क य टी करे सूरि ज मुं ल रू पः ॥ नि र द
कां मी क वि न मे न नि शि दि न मे वै न रू पः ॥ ११ ॥ पं डित
वि ष्णु पार मे व कृ त ला न व कृ बि त्तः ॥ राज तृ त्प न र सा ह
श्री नि ज गुरु दे व न ग तः ॥ १२ ॥ रोग करे र वि बा र मे वा

पितृकर्मदेहः। परचक्रतत्त्वविचक्रमा।
नहः। १२॥ इति सूर्यमलः। चंद्रकरतनुचक्रनकोष।
देहिजउत्तरः। कैटरहितनिधनप्रसन्नगनिर्मद
महः। १३॥ धनत्रयेधनकोशमीगुणनगीगुणवैगः।
राजसूयविभारकहिस्त्रीबलनसंपदतः। १४॥ अ
र्ज्येतीजौचंद्रमाविद्याविनयसुहृगः। कुरुदेहीकोम
वक्रतमारमुजसंकेलागः। १५॥ सोनागीविद्याविनय
नीलमुजरासुजधानः। पुत्रसहितकविभारकहिचो
यैचंद्रमुजानः। १६॥ पंचमहासिगुणवैगनरविनैव
गमुनपुत्रः। सोनागीमुजसंनमुषीमाकललानुत्त
१७॥ अर्ज्येचंद्रमांशुतनुयकरमाकललेयः। वातप्र
धिककटिबक्रतुमसारपुत्रिकोजेफः। १८॥ कुरुधर्मसि
वमोचंद्रदेहीनिरोगः। स्त्रीबलनप्रसन्नगहिमुषीमा
सनेनोगः। १९॥ करेरागसहिआगइलेसधनहीनः।
कुरुतनुकराकराकुकरेवियकेनधातः। २०॥ ब
क्रतमित्रसहिधर्मकोप्रियबलनप्रसन्नबुधिः। मुषीमु
अमुजसबक्रतवचनकलाकीसिधिः। २१॥ कष्टगमेद
रामेसत्रीमहमनोहररूपः। सत्यवतन्याइरिधनकेमत्री
कैतृपः। २२॥ लानकरेसहिलानकुलजावतदयाल
सोनागीसंकरहितदीनहीनप्रतिपालः। २३॥ ऊर्ध्व
लाचनपापमतिकेवामेसहिः। ज्वरचितानोजनबक्र
तकिनमैरुषीविरसः। २४॥ इतिचंद्रमलः। नगीमंगल
लगनकोरूपहीननिरलजः। कुरुकवचनपरपरमची
पीआमिप्रकजः। २५॥ धनकोमंगलधनरहितनिदिय

ला। वरुना। मदा कष्ट विता वक्रत वरुन सर्वदा दीन ॥ २१ ॥
 कुंजगी जै उत पति वक्रत होतं दुःख मय जीवः ॥ सो कागी मां
 नेह पति मार मरूप मदीवः ॥ २२ ॥ मात मुने बाल कथक
 जो चौथे कुंज होयः ॥ नृमे नृ मिधन वंत नर सिन परिश
 कुन कोयः ॥ २३ ॥ पंडि मंगल पंचमै नित्य विरत मन मूनः
 करे क पुन रु सुत वक्रत बोलन मके मूनः ॥ २४ ॥ छठे म
 गल शत्रु वक्रत दुष्टि देहिरि तिलोलः ॥ वक्रत र बु सी भावे
 पीवे करे कथा किलोलः ॥ २५ ॥ कोप धणै कुज मत्त मोः
 कासी रुधिर विकारः ॥ नीच मंग निदय पुरुष म रिम रि
 जावे ना रिः ॥ २६ ॥ मंत्री मंगल प्रमे र विक्रकारी जां ए
 जो वै पार के छिद्र वक्र देवा विहीन बर्षान ॥ २७ ॥ द्वारे कुंथ
 मः ॥ धर्म की मंगल पुरुष म गबीः ॥ दुष्ट ताव विनयो
 रहित जो वै नीरथ सर्वः ॥ २८ ॥ काम कर वै कर्म को नृ म
 न मा वै देवाः ॥ ते ज वंत रा जा करे कांन बाधिर ल वले सः ॥
 ॥ २९ ॥ अब मंगल दुष्पार मे कीरति करे विलासः ॥ प्रब
 लला ल मक्र को नृ मे तन नी रोग म हासः ॥ ३० ॥ धर्म उ
 रुष कुंज बार मे निदय ना दित क नावः ॥ उपति चो पी
 मरय वक्र पाप को चाव भा ॥ ३१ ॥ इति मंगल प्रल म माहः ॥
 रूप वंत बुध लगन को मुख मरु पुज म विलासः ॥ वक्रत बु
 धि धन नी वक्रत मरा मुषी मुत चालः ॥ ३२ ॥ धन को मु
 धा वक्र धन करे पी डित म ना री कः ॥ मूरु बुध धी मत्प प
 र मति बल न नि नी कः ॥ ३३ ॥ ती जो बुध क विमान
 कहिलो चन के रहि स दो मः ॥ वक्रता ध व की रं नि परः ॥ न
 मार वित मंगोषः ॥ ३४ ॥ बुध चो ये सुकने य पु म स प ति ति
 त उ वनः ॥ अधिका री को नृ ज को प उ वन रु ए ॥ ३५ ॥

पितृकर्मदेहः। परचक्रतन्त्रविवेकमतिनरपापीनिर्ग
नेहः॥१॥ इति सूर्यप्रल॥ चंद्रकृतनुचवनकोषी ए
देहिजउकूरः। कौमरहिनियतेप्रसन्नगगनिर्मद्व
महर्षः॥१॥ धनत्रेधनकोशसीगुणरागीगुणवैगः॥
राजवृज्यवृत्तिभारकहिस्त्रीबलनसमर्द्धतः॥१॥
येतीजोचंद्रमाविद्याविनयमुद्योगः। कर्मदेहीकौमी
वक्रतभारमुजसकलागः॥१॥ सोलागीविद्याविनय
वीलमुजरासुप्रधानः। पुत्रसहितकविसारकहिचो
येचंद्रमुजोनः॥१॥ पंचमहासिगुणवैगनरविनेर्वय
गसुनपुतः। सोलागीमुप्रसन्नमुषीसाकलामुत्त
॥१॥ चैवचंद्रमांरात्रुजुतनयद्वयकलहयः। वातम
धिककटिबक्रागुमसारपुत्रिकोजेकः॥१॥ करैमुधमिसि
तमोचंद्रदेहीनिरोगः। स्त्रीबलनपिप्रनेरहितमुषीसा
सनेनोगः॥१॥ करैरोगसहिआमोगइलेसधनहीनः।
करीतनुकराकरात्रुवक्रकौत्रियकैराधानः॥१॥ व
कृतमित्रसहिधर्मकोप्रियबलनसुनबुधिः। मुषीमुद्र
व्यमुजसवक्रतवचनकलाकीसिधिः॥१॥ कष्टगमेद
रामैसत्रीमहमनोहररूपः। सत्यवतन्याइसुधनकेमंती
कैचंद्रपः॥१॥ लानकरैरुशिलानकुलजावतदयालः।
सोलागीसंकारहितदीनहीनप्रतिपालः॥१॥ कठिग
लाचनपापमतिकरैवारमैसशिः। ज्वरवितासोजनवक्र
तठिनमैहर्षविरसः॥१॥ इतिचंद्रकलः॥ रागीमंगल
लगनकोरूपहीननिरलजः। कटुकवचनपरपरगची
गीशपिप्रकृतः॥१॥ धनकोमंगलधनरहितनिर्दयक

लाविहीनः। अदा कष्टं चिंता वक्रगदहमसर्वदा दीनः॥११॥
कुंजनी जै उत पति वक्रगदोतं पुन्यपत्नी कः। सो सागी मां
नेन पति सारस रूप सदीवः॥१२॥ मातुने काल कथक
जो बोधे कज होयः। नृमे नृमि धनवंत नर निरप निरा
बुन कोयः॥१३॥ श्री मंगल पंचमै नित्य विरत मन मूनः
करे कउत्र सु सुत वक्रगबोलन सक्रे मूनः॥१४॥ छेमे
गलशत्रु वक्रग पुष्टि देहिरि तिलोलः। वक्रग बुसी पावे
पीवे करे कथा किलोलः॥१५॥ कोप धलो कज सत मोः
कामी रुधिर विकारः। नीच संग निदिय पु रुम म रिम रि
जावे ना निः॥१६॥ मंत्री मंगल प्रमेर विक्रकारी ना ए
जो वे पार के छिद्र वक्र देय विहीन बर्षानः॥१७॥ करे कथ
मि धर्म की मंगल पु रुम म गबीः। दुष्ट नाव विनयो
रहित जो वे नीरथ सर्वः॥१८॥ काम करे वै कर्म को नृ म
न मा वै देवाः। ते जर्वत राजा करे कांन वधिर ल वले सः॥
॥१९॥ प्रब मंगल दुग्गार मे करि ति करे विलासः। प्रब
ल लाले सक को नृ मे तन नी वांगल हासः॥२०॥ धर्म पु
नृ म जवार मे निदिय ना विग न नावः। उपति थो पी
नृ म नृ म पा प नृ म चः॥२१॥ श्री मंगल फल स मा र्गः॥
सू पूर्वत बुध लगन को सुभः। नृ म न विलासः। वक्रग बु
धि धन नी वक्रग म च सुभी सुत बालः॥२२॥ धन को बु
ध वक्र धन करे पी डित जाना रीकः। मूर सु बुधी सत्य प
र सति बल न नि नी कः॥२३॥ ती जो बुध वक्र विमान
का हिलोचन के न हिस दो मः। वक्र लो ध व की
सार पित म गोषः॥२४॥ बुध बोये सु कने क
प्रव चरः। अधिकारी को राज को पर ५००

संततिनैवेपंचमै बुधप्रवृत्तपञ्चाशः बुधनैः
एहीजकस्यो नक्षत्रप्रणामीयायः ॥ २॥ विपुलः
मै बुधप्रवृत्तै केरं विरोधः कामीकोधी कुदि
मतिशोरकवूनही सोधः ॥ ४॥ स्त्रीबलन बुधम
हमेसी लवत सो न गः पंडितबलन विप्रकृ
ललिंगनीनागः ॥ ५॥ मंदमती बुधप्रवृत्तै रतध
तपरनारिः कामावरकातर कुटिलनही सपतिको
॥ ६॥ बुधप्रवृत्तै सी शारकाहिके धरममुषमात
त्रेमधरै वनवाटका वक्रत न गते पितृ मातः ॥ ७॥
कै सुकरमी करमको बुधविनयसमनः ॥ ८॥ नाग्य
तषट् सुजसमुच्चिर सुभी धानधनः ॥ ९॥ नीवे
गी प्रनुता सहित केरलान कोलानः बुधप्रवृत्तै
कविसारकहिको माधिकादिनालः ॥ १०॥
वचनकला बुधप्रवृत्तै निरवयस्य सुबुधः ॥ ११॥
कोइये रा नवना करे दीनचित्तवक्ररिधिः ॥ १२॥
॥ इति बुधप्रलसमाप्तः ॥ नीरागी गुरुलग्नकौ वक्र
धनबोलै साधः सो नत ह्यगयमाय के कही निवीह
साधः ॥ १३॥ धननवनै वृषपतिवृषे स रा सुभी नीरागः
धनधानवक्रवित्तसुमार सुमतिजसजोगः ॥ १४॥ ब्रह्म
सपतिगी जे सुभी पंडितमहासगेजः गुरुमजिते दीकार
कहितीरथकथा सुहेजः ॥ १५॥ मोये गुरुवक्रवक्ररी
प्रपत्तै वै सप्रधानः ॥ १६॥ मवदुंबलन सारिहो मजै
बल डिहंनः ॥ १७॥ रूपवत गुरुपंचमो प्रनुता विनय
समेगः धरमी बल मित्रदुंबलन क्रिया सुहेतः ॥ १८॥

छेसुरगुरु विघनबहु मिरपदिउभमनहोयः॥ नि
तिउदेकमाथामलिनक्रीमीनिर्दयजोयः॥५५॥
कांभीनरगुरुमममोअतिमरूपमोनागः॥ नानावि
धिनथानद्युतशादवित्तकेलागः॥५६॥ नरकुरु
पगुरुमममैकरैसकलमुवैरः॥ सदासरोगीकुटिलम
तिनिदकदुर्वलमैरे॥५७॥ नवमैगुरुमैरकुंकरैनि
रीहः॥ धर्मवैगवलननअधिकः॥ दीरघआवसबीहः॥
॥५८॥ जीवमकरमीकर्मकुंदारमीरीनद्यालः॥ नृप
दुल्यगुणवैगनरमुधीमुजममुविशालः॥५९॥ ह
यगयरथपायवक्रुतममोधीमुविवेकः॥ अकृ
वित्तगुणनीवक्रुतनहोलोलमतिठेकम॥६०॥ रो
गकरैगुरुवारमोविसनीमेवहिनीचः॥ जिमिति
मिपवितागोरहेलजेनूषनेनीच॥६१॥ इतिगुरु
फलः॥
रीलयुतमोनागीनीरोगः॥ वित्तवक्रुतविनय
हिगमारबुधकोजोगः॥६२॥ अक्रुवित्तकोवित्त
वक्रुतबांधवदृज्ममतेजः॥ सदाभक्तगुरुदेवकोः
मारनृपतिमुहेजः॥६३॥ मित्रदेमपशुधनसुतन
आपतीजोशुक्रः॥ नीरोगीमेवहिनृपतिनिजकु
लदीपमवक्रुतः॥६४॥ शुक्रद्वयकीरतिकरैबलिचो
पेनोजनः॥ सबकोऊमानैशुभीगांसनगरपरधान
॥६५॥ पुत्रकरैनृपमंचमोनिर्त्यसातासुषः॥ सदा
वक्रुधैकपदेरहिगवक्रुगदलहकीउषः

संततिनकेवेपंचमे बुधप्रव उपजायः। बुधनोपल
दहीजकस्यो न प्रकृष्टं मीयायः॥ ४२॥ विपुसुवन
मेबुधरुवेधरेकेद्विविरोधः। कामीकोधीकुटिल
मतिमोरकबूनहीओधः॥ ४३॥ स्त्रीबलन बुधम
हमेमीलवत सोनागः॥ पंडितबलन विप्रकथ
ललिंगनीनागः॥ ४४॥ मंदमती बुधप्रव मेरुतधनर
तपरनारिः। कामातुरकातर कुटिलनहीषपतिकोपा
२॥ ४५॥ बुधसुधरमीसारकहिकेधरमसुषमातः।
जेमधरैवनवाटकावकृतनगतपितृमातः॥ ४६॥
केसुकरमीकरमके बुधविनयसमनः। लाग्व
तषट्सुजसमुच्चिरसुधीधानधनः॥ ४७॥ नीरो
गीप्रनुनासहितकेरलानकोलानः। बुधसुध
कविस्मारकहिकोपाधिद्रुद्रिनालः॥ ४८॥
वचनकला बुधवारमे निरदयससमुबुधः॥
कोइपराजवनाकरेदीनचित्तवक्रनिधिः॥ ४९॥
॥ इति बुधप्रलसमाप्तः॥ नीराजीगुरुलग्नकौबक
धनबोलेसाचः॥ सोनतह्यगयपायकेकहीनिर्वाह
साचः॥ ५०॥ धननवनैवसपतिप्रवेसरासुधीनरेणः
धनधानवक्रवित्तसुमारसुमतिजसजोगः॥ ५१॥ बह
सपतिगीजमुधीपंडितमहासजः। पुरुषजितेदीसार
कहितीरथकथासुहेजः॥ ५२॥ मोयेगुरुवक्रवक्ररी
जमनेवैसप्रधानः। सबकुबलनसमरितहिसजै
लजिहानः॥ ५३॥ रूपवतगुरुपंचमोजनुनाविनय
समेगः। धरमीषठलमित्रकुंवरुगक्रियासुहेतः॥ ५४॥

छेसुरगुरु विघनबहु मिरपदिउभमनहोयः॥ वि
तिउदेकमायामलिनकीमीनिदियजोयः॥५५॥
कोमीनरगुरुमप्रमोक्तिमरूपमोनागः॥ नाना
धिधनधानद्युतशारवित्तकोलागः॥५६॥ नरकु
पगुरुअवमैकनैसकलमुवैरः॥ सदासरोगीकुटिल
तिनिंदकदुर्वलमेरे॥५७॥ नवमेगुरुनरकुकरैनि
रीहः॥ धर्मवीरबलनकाधिकः॥ दीरघआवसबीह
॥५८॥ जीवमकरमीकर्मकुंदारमीरीनद्यालः॥ न
दुल्लगुणवीरनरमुधीमुज्जममुविशालः॥५९॥
यगयरथपायद्वबहुतमीतोधीमुविवेकः॥ अक
वित्तगुणनीबहुतनहीलोलमगितेठकः॥६०॥
गकरैगुरुवारमोविमनीमेवहिनीचः॥ जिमि
मिपरितागोरहेलजेनूषनैनीच॥६१॥ इतिगु
फलः॥
रीलयुतमोनागीनीरोगः॥ वित्तबहुतविनय
हिगमारबुधकोजोगः॥६२॥ अकवित्तकोवित्त
बहुतबांधवदृज्यमतेजः॥ सदाभक्तगुरुदेवको
मारनृपतिमुहेजः॥६३॥ मित्रदेमपशुधनसुत
आपतीजोअकः॥ नीरोगीमेवहिनृपतिनिज
लुहीपअबकः॥६४॥ शुक्रद्वयवीरतिद्वैदलि
येराजनः॥ सबकोऊमोनैशुभीगांमनगरपद
॥६५॥ पुत्रकरैनृपवमोनिर्त्तयसातामु
बकयेअपदेरहिगबहुतकुलहकीइमः॥६६॥

शुक्रकरैः षष्ठेऽनयजिनतिनसुविद्येः ॥ अति ॥
 रूपसाक्षात्तदानदीप्यकारेणः ॥ ६७ ॥ त्रिपुण्ड्र
 पन्थेऽसतमेऽदासुषीनीयोगः ॥ गोरधर ए लोचन
 वडेऽसोनागीवक्रयोगः ॥ ६८ ॥ कलहकरेन्दुः प्रमो
 कुमतीनमेविद्वेष्टः ॥ करैः कुनिकलहोयसबसुन्दरा
 हिलवेष्टः ॥ ६९ ॥ सुक्रधर्मकोविनयवैतथमप्रिध
 मप्रिबप्रिधिः ॥ अतिपुत्रप्रतिवातुरीराजकार
 कीरिधिः ॥ ७० ॥ सुक्रमुधर्माकर्मकोऽरिनोगवैनि
 धानः ॥ शीलवतबलनत्रियाः ॥ सिवहिलिराजानः
 ॥ ७१ ॥ लानकरेन्दुगुलानकोऽनोगीसुन्दरे ॥ सत्य
 र्वतकोपद्वक्तधरमीधरमर्षने ॥ ७२ ॥ वक्रवैध
 वन्दुवारमेवचवक्रतधनवतः ॥ नित्रविशधीसु
 जसरासारमदानिर्धतः ॥ ७३ ॥ इति शुक्रफलः ॥ त
 नकोऽशनिरोगीरुर्षणकृतघनकरिक्करीलः ॥
 रूपहीनपापीमहादेहिनयंकरनीलः ॥ ७४ ॥ शानि
 धनकोऽनिधनकोऽवातपित्तकफरोगः ॥ पायककुन
 पीवेककुनहीद्व्यकोऽनोगः ॥ ७५ ॥ शानितीजेऽतिम
 दमतिष्ठकृतधामधनलेतः ॥ गुणरागीपुत्रराजसुष
 दीपकप्रपनेगेतः ॥ ७६ ॥ चाप्यशनिमुमहीनजनव
 धवहरेऽप्रथः ॥ नीचीर्मगतिकुदिलमतिरहेनी
 चकेऽप्रथः ॥ ७७ ॥ पुत्रहीनशनिर्षचमेमूलनाहि
 जसकिन्तः ॥ शोकवक्रतचित्तरहेः कुदितं वि
 तिलमतः ॥ ७८ ॥ षष्ठेऽनवनेशानुकेकरेवानीसा
 तः ॥ नीरोगीधमर्वतनरनिधिर्वतविष्मातः ॥ ७९ ॥
 विमरेशानिमातमेपरलेकुजीवारः ॥ वक्रतरोगेकी
 मरु

ति विन न ही राहु को पार ॥ ८० ॥ सुध्या शनी मरु
व मे न र क रूप ब क ॥ ८१ ॥ कृत घ न ही न क क वि न म
न मि थ्या वा द म नु ष्य ॥ ८२ ॥ रा नि न व म पा पी पु रु ष
च प ल प्र ता प वि ही न ॥ ८३ ॥ स ल द या व र्जित म द रा नु व
कृत ब ल ही न ॥ ८४ ॥ र क्त वि का री क र्म कौ क रै श नी रा
र शो ग ॥ ८५ ॥ चंच ल नि धि न मां न वी न ही नो ग र्म जो ग ॥ ८६ ॥
क रै श नी म र लान को अश्व वृ ष ण ग ज थ द ॥ क ल ब क्त
त रि शार क ह्मि त म दार ज व द ॥ ८७ ॥ वि त ही न न र बा
र मे कृत घ न पुं ज नि ना व ॥ नि ज कु टं ब कुं दु षे द म न मे उ ष
मु ना व ॥ ८८ ॥ इ ति रा नि फ ल ॥ ज म र्म दि र मू के उ र त
र लो मू ति कौ र ह्मि क रै क ल ह्मि आप को कौ न मा ह म
ति ह्मि ह्मि ॥ ८९ ॥ रा क्त वि त्त कौ क वि न म न क रै अर थ को
ना श ॥ क रै क्त पु त्र क र्मा व क्त म्मा मि ध र्म की आ क ॥ ९० ॥
ती जै रं क्त म्मा पु त्र व क्त व ष त व डे मुं न ते ज ॥ आ उ दी र्घ ध न
नी व क्त नित्य चा हे सु ष ते ज ॥ ९१ ॥ नि धि न चो धे रा क्त
न र पी ड क रै श री र ॥ म ल धा री न य चित्त मे न मे नू मि च
उ वी र ॥ ९२ ॥ रा क्त पु त्र त म र्म च मे अ ति का या नी रोग ॥
उ द र वी च क्त म नी व क्त अ ल प्म आ यु म न शो ग ॥ ९३ ॥
रा क्त ठे क रै सु षी ह्मि रा नु व क्त की ॥ ९४ ॥ नी रोगी का म
मु षी का र सा र थ ए वि त्त ॥ ९५ ॥ अ म्म म रा क्त म रै त्रि या मे
वा क रै अ जं ए ॥ ल प ट लो नी ली ल ची न ही कि मी की
कां ए ॥ ९६ ॥ रा ह्मि क रै अ म्म न व न व ष णी न को आ य ॥
जो क द चि जी वे अ धि क ॥ तो अ ति दु षि त ना व ॥ ९७ ॥
ध र्म रा क्त र क रै कौ न वि द्मे का म ॥ कां मी लो नी क र
न म न ध रै अ क ल की आ क ॥ ९८ ॥ रा क्त क र्म को लु धि ब ल
म रै पि ता त न रोग ॥ म र वी र प र ना वि र त म्मा सु म ति कौ जो ग ॥

॥ ८ ॥ रा. कुलानको सुषमुजसमा उवकृतधनप
 महाबली मिरदा बुवलसामरमतिवत ॥ ८ ॥ रा
 कुबामै आपदा होत प्रयको नरा ॥ अलपबु धिस
 कोपमति मायावत उदास ॥ ९ ॥ इति रा. कुफलं समाप्तः

[illegible]

इति वां नां होयः। पंजाब देशः सुरस न देशः सि
 धदेशः वर देशः न देशः मगध देशः पञ्जाब
 देशः चैत्र देशः कर देशः विजवा देशः ईश्वर
 देशः रो नाश क्रयेः। गोमगलेशः मूलः पूर्वोपाठः दे
 वतीः रात निजाः उत्तरा नादपदः। ईशान ह्यनां माह उ
 त्पात नृमकं पादिक होय तो नाद तेरा लक्ष एक कठुः।
 मेहय लं बीज लीगं मिगं मिच मकैः। शीमे थोडाः जोऊं
 मावल थोडाः बीजै नाजरी उत्पति धंणीः माजरी मोउ
 वार मुग चावल तिल मुहगाः। गायं दुध धंणीः फल क
 ल धंणी कल्यां लऊवैः धरती नाह ह्य उपजै। कीटकः
 उदरः गदनः माक उः माक रः दाऊ कवैः। पेऊ पपील ना
 होयः। धान मरव मुहगा मुकाल होयः। मार म मे माह
 त्पात न होयः। नाग पुर देशः वीर देशः शोर देशः मिथु दे
 ना। मोवीर देशः उडैर देशः बाऊ वर देशः इतरा देश नै
 धलो नारः। ईयां देसां नय मिटे महीः। गोमगलेश रोह
 लीः अनुनाथाः सर्वलः धनिष्ठाः उत्तराः अनीय ते म
 ही ६ जां लजै मुक ऊं ठुः। मिन थां नृह्य धलो ऊवैः नोग
 नऊवै धलो आं लं ऊवैः मुकाल ऊवैः राज मां होनां वर
 वैः। वडी गुजर रागः समुद्र देशः मगध देशः मारवाडः।
 कुरुपेत्रः पांणी पंथः ईया देशां नार धंलोः। इति श्री
 मंडल विचार संहिता ॥ समाप्तिः

॥ द्वित्रिस्थितेषु गानीचः आयुः जागते न वेत्तुः ॥ १ ॥
हेतुं गेन वेदशनिधनां तेषु निरुक्तः ॥ २ ॥ पांचमि
नो ह एतन्मिमांसा न वमिपुनर्विष्टु निमचित्रा
येन ह्यत्र वसंतादिगः ॥ सीया लुप्तवर्गनीविण
गः ॥ ३ ॥ उद्देगाः अमृता रोगालानां शुभाचलाक
लाः ॥ सुकौटो मन्त्रवानां एतन्नोपचरिष्विष्टु ॥
॥ ४ ॥ ॥ अश्वत्थादित्रियं धिष्णे आजादिपंचकंत
था ॥ धर्वाषाढादिचत्वारि उत्तरादेवती द्युयं ॥ ५ ॥ एता
निशसि रुहा एतौषा रुहा एतौ सूर्यतः ॥ ६ ॥ चंद्रच
ंद्रगते कायुः सूर्ये सूर्ये न वर्बति ॥ चंद्रसूरी सभा
योगे वर्बते नात्र संशयः ॥ ७ ॥ आजादिदशवनि
ता विशाखादित्रय नृपुंसकाः ॥ मूलादौ चतुर्द
श पुरुषा मरण्यादिचतुस्रः ॥ ८ ॥ मरीचपु
स्रमागमेष्टि ॥ ९ ॥ जीवंतिवः शिवो जीवः स
जीवः केवलः शिवः ॥ पारीवधो न वे जीवः पारीव
क्तो सदा शिवः ॥ १० ॥ आयुर्वर्षिकं नृणां परिमितं
संज्ञेत दंडगता ॥ तस्यार्द्धस्य तद्वर्षमेव परबालत्वेष्टु
त्ययो ॥ शेषं व्याधिवियोगः स्वसहितं सेवादिनिर्ली
यते ॥ जीवेकादितरैर्गुणैश्च लेशे सौख्यं कृतः प्राणि
नां गतः ॥ गतं संकुचितं गतिविगलिता दंतश्च न संगताः ॥
दृष्टिर्निपतिरूपमेव लशने वक्तुं च लालयते ॥ आगते व
करोति बांधवजनो ॥ नायानशुश्रूषते ॥ एकं ह्यंजया
नि नृत्तपुरुषः पुत्रैरवज्ञायते ॥ ११ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ लोकजानमनावेश ॥ अ
श्रीगजनेव देसं च दानं कौशिलवस्त्रं न च हेमरत्नं
छादिकं न्याममदेयतु न्यंजक्ति प्रसादात् स्रु
त्वांकरम् ॥ १ ॥ लोके कीर्तिकुलेष्टिः । न ह्यीष्टह
मागताः ॥ पंचरत्नमया लब्ध्वा त्वं प्रसंगदेमाचलः ॥ ३ ॥

प्रियं ॥ क्रौमोदकोधरं कृष्णं नृवंदेन्नौरवांतकं ॥
॥ नृधनं नृवना नंदं नृगदं नृगनायकं ॥ नृ
वगमं नृजं नृशं तं वंदे नृवनाशनं ॥ १२ ॥ ज
नादि नृजं नृधनं नृगजं नृविनाशनं ॥ जम
दम्यं जितं ज्योतिस्तं वंदे जलकायनं ॥ १३ ॥
मउर्जुजं मिदानं दं या एरादिनष्टनं ॥ म
रामरउरुमैतं वंदे मरुपाणिनं ॥ १४ ॥ श्री
यानिधिं श्रियानाथं श्रीधरं श्रीवरप्रदं ॥ श्री
वत्सलद्वेषं शान्तं वंदे श्रीसुरेश्वरं ॥ १५ ॥ यो
जैयं यशोरशिं यशोदानं दं दायकं
॥ यमुनाजलकलोत्तं वंदे यमुनाय
कं ॥ १६ ॥ कालग्रामसिलासुधं मम मन्त्रोप
शोचिनी ॥ सुरासुरसदस्यं वंदे साधु
बलं ॥ १७ ॥ त्रिविक्रमं त्रयोमूर्तिं त्रिविधा
द्यविनाशनं ॥ त्रिनेत्रं त्रिगणेशं वंदे
द्वैतं ॥ १८ ॥ लीलेनोद्भूतं नृमार्तकं

सत्त्वैकवैदितं॥ लोकेस्यरेशं लक्ष्मीशं
वैदे लक्ष्मी प्रियं॥ १७॥ अनंतं मादिह
यं सत्त्वैकवैदितं॥ लोकेस्यरेशं लक्ष्मीशं
नानं सत्त्वैकवैदितं॥ लोकेस्यरेशं लक्ष्मीशं
रिणाहं सत्त्वैकवैदितं॥ लोकेस्यरेशं लक्ष्मीशं
सत्त्वैकवैदितं॥ लोकेस्यरेशं लक्ष्मीशं
मत्त्वैकवैदितं॥ लोकेस्यरेशं लक्ष्मीशं
नानं सत्त्वैकवैदितं॥ लोकेस्यरेशं लक्ष्मीशं
इति श्रीपरमेश्वरस्य सत्त्वैकवैदितं॥ लोकेस्यरेशं लक्ष्मीशं
उमणिवलिविरमिगेहनिनामं सत्त्वैकवैदितं॥ लोकेस्यरेशं लक्ष्मीशं
श्रीरामायनमः॥ अनंतं मादिह
भक्तद्वेषु जयते सत्त्वैकवैदितं॥ लोकेस्यरेशं लक्ष्मीशं
कामानिदिब्यानिगानिबद्धमिच्छावः॥
॥१॥ श्रीरामायनस्य सत्त्वैकवैदितं॥ लोकेस्यरेशं लक्ष्मीशं
विष्णुनरसिंहं जनादिनां॥ जलिनं पुं
उरीकाहं माधवं सत्त्वैकवैदितं॥ लोकेस्यरेशं लक्ष्मीशं
नानं सत्त्वैकवैदितं॥ लोकेस्यरेशं लक्ष्मीशं

स्तुतुम ममतामूनटेमगनविषैसुषपायः॥१॥
वरमनपरमैतहीनिर्विषतनजवहयः॥मोहघटेममतामि
टेविषेनवढेकोयः॥७॥ज्योसच्छिन्नवकाचढेबूझै
ध्रुवदेवः॥त्योउमनवजलमैपडेविनविवेकधरिनेषा
जहंअमंडितगुणलगेववत्सुधविचारः॥आतमरुचि
नवकाचछेपावकुसुमजलपाशः॥८॥ज्योआकुशमाने
नहीमहामतगजराजः॥त्योमनहस्तामैपडेगिनेनकाज
अकाजः॥९॥ज्योअनरदावउपावकैगाहिलानेगजसा
दिः॥त्योमनवस्यकरनकुंतिर्मलधामसेमाधिः॥१०॥ति
मरोगमनेनज्योलखैआरकीओरः॥त्योतुमसांसेमैपरे
मिथ्यामतिकीदोरः॥११॥ज्योउपधअंजनकीयेतिमररो
गमिदिजायः॥त्योसदगुरुउपदेशसुंमसोवेगि
॥१२॥ज्येसंबजहुजरेधारावतकीआगिः॥त्योमाय
मैलुंमफंदेकहंजाउगेआगिः॥१३॥दीपांयनसुतनैवंचे
जेतपसीनिरगंधः॥तजिमायोइहैकतिपंधः॥१४॥ज्योउ
धातकेफेरसुंघटिवढिकंचनकांतिः॥पापउन्मकरसुंन
येःमूढातमबहुनांतिः॥१५॥कंचननिजगुननहितजे
वानहीनकेहोतः॥धरधरअतरआतमासहजसुजावउदो
तः॥१६॥पोनापीरपकाइयेसुधकनकसुंहोयः॥त्योपरग
टपरमातमाबुनपापलेखीयः॥१७॥पमरारुवोगहन
मोःसूरसोमबबिळीनः॥संगतिपायऊसाधकीःस
जनहायमलीनः॥१८॥निबादिकचैलकरेमलीयाव
लकीवाशः॥हुर्जनतैसजननयेःरहतसाधकपास
॥१९॥हैसैतालसदानयेजलआवैवहुओरः॥तैसैआ
सवदारसोकरमबंधकोजारः॥२०॥ज्योजलआवतम
दीयेरुकेसरवरपांनः॥त्योसंजमसंवरकीयेकर्मनि

[illegible]

[illegible]

॥ सव दीयो ॥ सव जहं परम सव हीन हो मित्र
बग नही होय ॥ आनंद हे न होइ नित्य
नही सव जहं हे भोय ॥ परम मेई सव
गद्वार जद्वार एगो मधिरोय ॥ सव सव
बुद्धि परे हे नो म न उप जहं न हीने

॥ सोर गो ॥ आयो है कलि जुग ॥ सग जुग गयो दिना
जीव है नखग ॥ सोमो मोवां एगे मही ॥
यौ पिच्छ मे सग जुग गयो पिलाय ॥
ये दंपति व म हिय जाय ॥ १२ ॥ श्री गं न न

जल बांधू जल वाई बांधू जल
दीन बांधू दीन बांधू मेरी ना
सुद मदीय दीप मे पाव नूरे
हमारी लक्ष्मण रू श्री रू
बाबर रू म जपठ राज देवे
रू रू रू रू रू रू रू रू रू
रू रू रू रू रू रू रू रू रू

॥ श्रीरामजी ॥ ओं नमो नारायणाय ॥ कोही माओ
॥ कपी लोमाओ ॥ नीलोष्णो माओ ॥ ज्ञां प्लामाओ
॥ हलदी माओ ॥ मिरया माओ ॥
॥ सरसु माओ ॥ अकजो जीया माओ ॥
॥ मेरु ध्यासा देते लमेन ध्याधिरामे ओलता वडे वै कलमा ॥
॥ उहो ॥ जंत्र वीरै रौं ॥ दुय परह दि दुय सत धरि ॥
तीध रौ वषाम ॥ चारु कोरा सुन्यन रि वे को एम
धी ए ॥ १ ॥
॥ गुरु २४ दत्तात्रय जी की या ते रौं श्लोक है ॥ कपोतो
॥ हृष्टि वी वा यु रा कारा मा पौ ठ मि श्रं दू मारु वि ॥ कपोतो
जगत् सिंधु पतंगो मधुकुंज ॥ १ ॥ मधु हा ह नि लोभी नः
पिंगल कुंजो ॥ २ ॥ कुमारी वारु कृत्य पंज एति
लि सुपे रा कृत ॥ ३ ॥ एते मे गुं दे कोरा जं श्रु विंशति रा
श्रिता ॥ शिवा वृत्ति निरंश मन्व शिह निहात्मनः ॥
एकारं च एनेव वदिनियंति पात का पुन प्रवि सतै
नीता मकार एक क पाटवता ॥ १ ॥ हारु मां सतो कु
कोन दि चं वडे गल मां ॥ २ ॥ वल कथा डो ह्य वज्र
मंजु जाह मन्मो ॥ ३ ॥ वल कथा डो ह्य वज्र
नी था वडा कना कतु को मन ॥ ४ ॥ वल कथा डो ह्य वज्र
वता ॥ अरथ कदा कि उध काय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सावीकबीरनेके ॥ ॥ साधकौ श्रीग ॥
॥ कबीरसंगति साधकी वेगिकरी जे जाय ॥ ५ ॥ मति हरि
गमाय सी देसी मुकति वताय ॥ ११ ॥ कः संगति साध
की निकल करे न होय ॥ चंदन हो सी बां वना नी बन क
ह सी कोय ॥ १२ ॥ कः मथुरा जाना वै उबार का लावे जा
जगनाय ॥ साधसंगति हरि न गति विन कहु न आवै
होय ॥ १३ ॥ कः मेरे संगी देय जनई कबै जोई करं मः
जो देता मुकति को ॥ जो मुमिरावे नाम ॥ १४ ॥ कः बन
बन मै फिसा कार निअपनै रां मः ॥ रां मः मनीषे जन
मिले तिन सारे सब कां मः ॥ १५ ॥ कः जोई दिन न ला
जा दिन मंत मिलाय ॥ अंक नरे न रिने टीये पाप मी
रा जाय ॥ १६ ॥ कः चंदन कौ बिजे चढौ आ कपलानः
आप सारी से करली ये जे हो उन पा मः ॥ १७ ॥ कः जोई को
दकी पा नी पावे न कोय ॥ जाय मिले जव गंग मै सवरी
गोद कहोय ॥ १८ ॥ कः जानि हू जिया चहु जे करे
कुं कुं नेह ॥ ताकी संगति रां मजी मुपि नेह मति दे
ह ॥ १९ ॥ कबीरा तास मिलाय ॥ जास दियाली दंड
मै नही तो बेगी ठाय नि लंग जन को सहै ॥ २० ॥ कः के
तो ले हरि मंद की किति उपजे किति जाय ॥ दालि
हरी तादास की उलटी मां हि मां य ॥ २१ ॥ कः प
चबल धीया किर कड़ी उरु उरु उरु जाय ॥ वलिह
री तादास की छवि करे राखे गय ॥ २२ ॥ कः काज ले

रीकोटीतैसौईरुसैसोरः। बलिहारीतादांसकीपैस
जुनिकसनहार॥१३॥ क० काजलहीकीकोटीका
जहीकाकोटी। बलिहारीतादासकीरहेसंमकीजेठ
॥१४॥ ॥ साप्रीनुतकोअंगः॥ कबीरपूछेसंमकुं
सकलनुवनपतिसयः॥ सबहीकरिअलगारहो
सोबिधिहंसहिबतायः॥१५॥ क० जिहिबिरीयासं
ईमिलैतासनजानैओरः॥ सबहुसुखदेसबदकाअ
पनीअपनीगोरः॥१६॥ क० मनकाबाहलाऊंठावहे
असोसः॥ देसतहीदहमेपडेदईकिसाकौदोस॥१७॥
॥ ॥ अविहउकोअंगः॥ ॥ क० साप्रीसोकीयाः
जाकेसुषुषनाहीकोयः॥ हिलिमिलिहोयकरि
मलिसुकदेविबोहनहोयः॥१८॥ क० सिरजनहार
विनमेराहिरनकोयः॥ गुनओगुनबिहउनेहीस्वा
रथबंधीलोयः॥१९॥ आदिमध्यअरअंतलोअवि
हउसदाअंगः॥ कबीरउसकरतारकासेवगतजे
नसंगः॥२०॥ ॥ जीवमृतककोअंगः॥ क० मनमृ
तकनयाकुबलनयासरीरः॥ तबपेडैलार्गहरिफि
रिंकहतकबीरकबीर॥२१॥ क० घरजाकंधरकुबरेघ
रराखुंधरजायः॥ एकअचैनादेधीयाः मडाकालकु
षायः॥२२॥ क० मनमास्याममतामुईअहगईसब
बूटः॥ जोगीयासोरमिगयाआसनरहीबिस्तति
॥२३॥ क० जीवनतैमरिबोनलोः जोमनिजानै

यः॥ मरनां पहली जे मरे तौ कलि अजरां कर होयः॥
॥ करनी बिन कथनी कौ अंगः॥ ॥ क० कथ
न्यो कथा नयाः जे करनी नां वहरायः॥ काल
तके कोट्युदेसत ही ठह जायः॥ १॥ क० जे श्री
मं मुनिक से ते श्री चाले नां हिः॥ मिन घन ही ओ
गंग ति बांध्या ज मपुर जां हिः॥ २॥ क० जे श्री
मं मुनिक से ते श्री चाले चालः॥ पार बल ने डा
है पल मे करे निहालः॥ ३॥ क० पद गाया मन
सुषीयाः सा श्री कल्याण नंदः॥ सो तत नां वन जां नी
गा गलि पडि गय फंदः॥ ४॥ क० करता ही मे श्री रत
न उवा करि करि ठुठुः॥ जा ऐ बुजै कुठ नही यो
ही आंधा रूतः॥ ५॥ ॥ साच कौ अंगः॥ क० बुद्ध
बोना है श्री चडीः मां हि पडे दु कलुणः॥ हे जने टो कान
ऐ गला कटो वे कुणः॥ १॥ क० पापी पूजा बै सिद्ध रि
नां हि मां मर होयः॥ तिन की दिष्वा मुक तिन ही
को दिन र क फल होयः॥ २॥ क० सकल कल कल
न को सकति मिलि जां हिः॥ हरि दास न की अ
तिक रिः केवल जं मपुर जां हिः॥ ३॥ क० लज्जा
लोक की मुनि रे नां ही साचः॥ जां निह जिहं न
त जे का गै पक डे का चः॥ ४॥ क० जिनि जिहं न
नीयां करता केवल सारः॥ सो प्राणी कहे न

ठैजगकीलारः॥५॥क०सबजगजुगद्विबन्धीयाःसा
 चदिनाहीवां वः। सोजुगकमादियेः लेयुजुसाचा
 नांवः॥६॥क०जुगकूजुगमिलेः इणवधेयनेहः॥
 जुवेकूसाचा मिलेः तबहीतूटेनेहः॥७॥ ॥
 ॥कांमीनरकोअंगः॥ ॥क०कामीकदेदविनजैज
 पेनकेसोजापः। रामकलांतेजलिमैकोईप्रबलो
 पापः॥१॥क०रामकहंतां जेजिजैः कोठीकैगलि
 जांयः। सूकरकैकरिअवतरेः नाकबूउतेपांयः॥२॥
 ॥क०कांमीलज्यानांकरैमनमांहेअहलाहः। नीद
 नमांगेसाथरोनूषनमांगेस्वादः॥३॥क०कांमी
 तेकुतौनलैः बोलेएकजुकाठः। रामनांमजानै
 नहीवांबीजेहीबाठः॥४॥क०कहताजीतहं
 चेतैनहीगवारः। बेरागीगिरहीकहाकांमीउ
 वारनपारः॥५॥क०ज्ञानीतौनिजूनयेमांनेने
 हीसंकः। इहीकेरेबसिपगानुतौबिषेनिमंक
 ॥६॥क०ज्ञानीमूलगमाईयाआपननयेकर
 ताः। तिनतेसंझारीनलामनमेरहेउरताः॥७॥
 ॥सबदकोअंगः॥ ॥क०सतगुरसाचासूर
 वांसबदवालाएकः। लागतहीमुंमिलिगयाःप
 झाकलेजैबेकः॥१॥क०हरिसरजेजनबेधीया
 सगुणमिठनिजांहिः। लागीबोटसरीरमेकर
 नननेनेमांदिः॥२॥क०ज्यो ज्योहरिगुणसंज

लोको लोको लोको तीरः ॥ सांटी सांटी सांटी ॥
 सांटी तीरः ॥ १॥ क० ज्यो ज्यो हरि तुलसीदास ॥
 तीरः ॥ लागे तो जागे नही मदिन करे कबरे ॥
 ॥ मन्त्र को अंगः ॥ ॥ क० हृदय विवेक ॥
 निरंतर का ॥ कव लुलु क लुलु न ल न ल ॥
 जिहा मुवा ॥ १॥ क० कंठ कव लुलु न ल ॥
 बास ते होय ॥ मन न न रा जे लुलु धी जे जे न ल ॥
 ॥ २॥ क० पंथ उडा नौ गंग न डी जिउ न ल ॥
 न ॥ जि हि सर मी उल जे दी या मो स ल ॥
 ॥ ३॥ क० सुरति स मानी निरत मै ॥ ज न मां दे ज ॥
 लिष स मानी लेष मै ॥ आ मा मां दे ॥ ॥ ४॥ क० ज
 जरे ज रि जे दी या मन मै नां दी धि ॥ क है क व ने
 मिलै ॥ ज व ल ग दो य सरीरः ॥ ५॥ क० स च य
 प उ प ना अ र दित री या न र दूरः ॥ स क ल च
 द जे ग ये ज व मां ई मि ल्या ह जुरः ॥ ६॥ ॥ स
 म ज न्म को अंगः ॥ क० सु द्म सुर ति की जी व न
 नै चाल ॥ क है क बी रौ दूर क दि आ व न अ दि ह
 ल ॥ १॥ क० प्रा ण वि उ ज्जु न जि च लै सु वा क है
 को यः ॥ जी व तां जा मे मे रे मू वि म ल न न को
 ॥ २॥ ॥ मा या को अंगः ॥ क० मा या पा प नी रं
 वी हा टः ॥ सब ज ग तौ रं दै प त्या ग या क दी ग

॥१॥ क० माया पापनी लाले लाया लोगः ॥ दूरी किन
हीन लोग की ईन का रहे विजोगः ॥ २॥
॥ विस्वास को अंगः ॥ कर्तव्य लिखने रं
म की जिनि विट दीया ज्ञानः ॥ का सीत जि
म गहर चले चित न जया अंगः ॥ १॥ क०
तुं का हे उरे मिर परि हरि के हाथः ॥ हस्ती च
दिक रि डालीये कू कर नु सो जु लाषः ॥ २॥
॥ बीमती को अंगः ॥ ॥ क० विनीयां बीती
बल गु या अरु नु रा क मायाः ॥ हरि जिन का डो
ह जिते दिन ने ड आयाः ॥ १॥ क० ओ सर वी ता
अल पतन पीवर लापर देसः ॥ कलंक उतारो
के सवाना नौ सर म अ देसः ॥ २॥ क० बीर हृद का
के ग या के ती वार क बीरः ॥ मीरां मुष्ट मे काषता
मु प्रां न बोले पीरः ॥ २॥ क० मन मे रा हे तु जु सुं
यु ज ते रा होयः ॥ ताता लो हायुं मिले मे धिल मे
न ही कोयः ॥ ४॥ ॥ माया को अंगः ॥ क० मा
या दी से सत की ली दे ई सा सीसः ॥ विल सी अर ला
तां छडीः सु मि रि सु मि रि ज ग दीसः ॥ २॥ क० र उ बी
र ज की को अली ता परि आ ग्या रूपः ॥ रां म नां म
बिन हू डी येः क न क का मिनी रूपः ॥ ४॥ क० ई
स स सार का ग माया मोहः ॥ जि धर जिता बधा वनाः
ति हिय रि तिता अ दोहः ॥ ५॥

॥ मनको जे... ॥ क... ॥
साकडे छिन्नु... ॥
निनः वै... ॥
हीतो होतान... ॥
बलीतौ कदेन... ॥
नीकां चाव... ॥
लुंभी छेप... ॥
ग... ॥
जेविंदमिले... ॥
क... ॥
जीवां सुं... ॥
॥ सुमि... ॥
लंदीवै... ॥
नरातिः... ॥
एकदिनी... ॥
ताकाकदे... ॥
ताहीक्रे... ॥
वैदुषः... ॥
सूताकाक... ॥
मय... ॥
नडेन...

उपजिमेवेकांमः॥६॥क०ब्रमनचमामाया
यासावः॥मूनांघरकापांऊनांज्योआयायुंजावः॥
क०जिहिद्विजेकाजांनीयांतिनहंतेआलाजः॥
ओसांप्पासनजाऊइजबलगधमेनआनः॥७॥
क०रांमकदहिरांमहिलुनहिःतिनकीमैबलिजां
उः॥रांमळाडिआनहिजुजहितिनकालेउननावः
॥८॥क०रांमपियावाळाडिकरिजमेआनकाजा
पः॥बेरपाकेराष्टतज्योकहेकौनसुबापः॥९॥क०
आपनरांमकदिःओरांरांमकहायः॥१०॥क०जैसैमाया
मनउचरेःतामुषकेरकहायः॥११॥क०जैसैमाया
मनरमेयुंजेरांमरमायः॥तोतारांमउलळाडिक
मिजहंकेओतहंजायः॥१२॥क०लुटिमकेतोल्ह
टीयोरांमनांमकीलूटिः॥पीकेहीपठितऊगेः॥
ऊतनजैहेलूटिः॥१३॥क०लूटिमकेतोल्हटीयो
रांमनांमनजिआरः॥कालकैरुगहेगाधुधेधुं
उवारः॥१४॥क०कठिनाईमरीकुमिरांतहदिनांम
मूलीउपरिनटविद्याःजिउतोनांहीगंमः॥१५॥
॥चितावलिकोअंगः॥क०रांमविसास्योब
वरः॥इचरजकीयाएहः॥धनजोबनचलिजा
यगाःदेहिहोयहेमेहः॥१६॥क०जांमएमरए
विचारिकरिःकुउकांमनिवारिः॥जिनपंध
उऊचलणः॥सोईपंधसंवारिगरः॥क०आ

कंकालिकपंचदिनः जंगलिहोयगावासः । उ
परि उपरि किरेगेष्टोत्तरं ते घासः ॥ १४ ॥ क० मरहि
गेमरिजाहिगेः नां वनलेगाकोथः । उज्जुजायव
साहिगेः छोटिवसंतीलोयः ॥ १५ ॥ क० भेतत्रिंसां ए
काः भृगुनिष्ठायाश्च हि । भेतत्रिंसां राक्याकरे
जोषसमनकः ईवा रिः ॥ १६ ॥ क० बिनरषवाली
बाहिराचिरीयाषाया भेतः । आधपरधा उव
रैचेति स कैतौ चेतिः ॥ १७ ॥ क० मेरा जरेलकरी
जरे जरे जरां वनहारः । कोतिकहारे नीजरेः
कास निकसं पुकारं ॥ १८ ॥ क० देवल हाउका
माटीतं न्यबनां नः । १९ ॥ उ न हां पाया नही देव
नकासहनं एः ॥ २० ॥ क० देवल ले ले ले हि
ग्याईटि नई सेवारुः । करिचे जारसुं जीत
गिजुं ठहेन दुजीवारः ॥ २१ ॥ क० जे धंधो तो
हलि विनिधंधे धूले नही । ते नर विनवा मूलि
पांधंधा मे धोयो नही ॥ २२ ॥ क० सुपने रे लिंकेः उ
रि आये नै एः । जीवप आबळ लूटि मे ज गितो
नैन नैन ॥ २३ ॥ क० सुपने रे लिंके पारस जीव मे
बेकः । जे सो उतो दो वजनः जे जागूं तो एक ॥ २४ ॥

॥ क० ॥ हे चिता वनी जिन सँकारी जायः ॥ १॥
ली मुषनी गया जिन का गुड ले मायः ॥ १॥
॥ काल को रँगः ॥ ॥ क० ॥ उची दी से रावदी नी
ची दी से पौलिः ॥ रां म बिनां सब बहिगये पर
जुजम की रौलिः ॥ ॥ क० ॥ उचा मंदिर से लहर
मेडी चितरी पौलिः ॥ एक रां म के नां म बिन जम
पौडे गा रौलिः ॥ ॥ क० ॥ कांय चु एं वे माली काः
चूनां माटी लायः ॥ मी च सु हेली पापनी उदा
रेली आयः ॥ ॥ क० ॥ कुं बुधी म बली जी कर की
मिन्नः ॥ नरीया सर कर ठा डिक रि बली लर लाया
चितः ॥ ॥ क० ॥ म बली कुं वां न बुटी बोः जी कर मेरा
कालः ॥ जि हि जि हि उावर कुं कि उ ति हि ति हि म डे
आ लिः ॥ ॥ क० ॥ जंत्र न बा ज ई दु रि गये सब
तारः ॥ जंत्र बि चारा का करेः नही ब जां व ए ह
रः ॥ ॥ क० ॥ बरीयां बी ती ब ल
गयो ते बु रा क मायाः ॥ ॥ क० ॥ ग फिल का फिरे को
दिन न ज आयाः ॥ ॥ क० ॥ ग फिल का फिरे को
वे के हान चीतः ॥ एव उ मां हि ते ले च ल्या अ ज्पा प
क डि म टी कः ॥ ॥ क० ॥ बे थ जा या क्य न था कह
ब जां वे थालः ॥ ॥ क० ॥ अ व न जां नां के र ह्य जुं की री का
ना लः ॥ ॥ क० ॥ जिन हं म जाये ते मु ये हं म नी च ल ए

॥ जेह मक्कं आगे मिले तिन नी बंध्या तारः ॥
॥ ॥ सजीवन कौ अंगः ॥ कबीर कहत पुनः
पुनरी मसजीवन मूरः ॥ जा रुं है अथो न पनका
कहत है हरः ॥ ११ ॥ ॥ चित्त वली कौ अंगः ॥
क० मनिषा जन मरु लं न है ल है न बारो बारः ॥
परतै ॥ कल ऊप डै बरु दिन लागे बारः ॥
॥ ॥ क० हरिकी न गतिक रित जि माया बिष चो
॥ ॥ बार बार नही पाइये ॥ मिन सजन मकी मोजः ॥
॥ ॥ क० पांणी जूरत लाव कौ दह दि सिग यो बि
लायः ॥ इरु सब असे जाय गा सवै तो मलु ला
यः ॥ ॥ क० ईरु तै न जात है ॥ सके तुले रु बहो
डि ॥ ॥ श्रीति बडा वरु रां मसु ज मसु तिनु का तो
डि ॥ ॥ क० कांची का री जिन क को दिन दि
न बधे बिया धिः ॥ राम कबी रै सचि न ई
वाही जोष ध सा धिः ॥ ॥ ॥ क० अपने जीवने ऐ
उय बाते धोयः ॥ लोन मिग ईकार ऐ अछ ता
मूल न सोयः ॥ ॥ ॥ क० दोला एक गय द उयः
नमु करि बंध सिवारिः ॥ मान करे पी उन हीः ॥
पी उते मो न निवारिः ॥ ॥ ॥ क० डुनी या ना
॥ ॥ ॥ क० नरी मुहा मुहि नुसः ॥ ॥ ॥ दया अल हाराम

की: क्युं रहे ऊनी कृषः जाक. डनीया के रे
 कृष नही मेरे डनी अक्यातः। सा दिव रदे
 पुं प्रजा सब डनीयो ते जग जातः॥१०॥ क. जिहि
 जेव डी जग बंधीया: तं जिन बंधे कबीर: जा
 सी आटा लूं एजु सो नां सवा सरिरः॥११॥
 क. कहत सुनत जग जात है: बिषे न सऊँ का
 लः। कबीर प्याले पे मकै न रि न रि पाँवर सालः
 ॥११॥ क. हृद के जीव सुहित क रि मुषान बोलि
 जेला जे वेद सुंति न सुंति त र बोल ॥१२॥ क.
 साषत की सनातं मति आवै जाय एकै वाडे को
 वडै नो जग दह जाय ॥१३॥ क. केवल रां मक
 तूं जिन बाडे उठ:। घण अहर ए बिचिलो हउं
 बली सहे मिदि चो ॥१४॥ क. नाका का ती नि
 त दे महिगे मोल विकायः। गहकरा जारां महे
 और न ने रा आयः॥१५॥ क. ज्यो को ली बेजो वणे
 वणता आवै उरः। ज्यो ला सी चका कहुयो
 डस के तो दे ॥१६॥ क. मे मे वडी बला य है
 स के त नि क सी ना गिः। कौ लों ना हं दे स सी रु
 ईल पे टी आ गिः॥१७॥ क. मे मे मेरी जिन करे
 ते न सः। मेरी पग को पंखुरो: मेरी ग

१ की पासः ॥ १ ॥ ॥ विरकताई को अंगः ॥ ॥
 क० मोती के वत बिगरीया मानु पाथर आई रायः ॥
 ३ नसेरी नी कल्पा जा नि बटा उ जायः ॥ १ ॥ क० सा
 ३ गा ठिको पीन की साधन मानै अंकः ॥ रां मं अ म ल म
 तार है गि नै ई ई कौ रंकः ॥ २ ॥ क० को ई कि अ ही का न ही
 मुष देष की का निः ॥ जे को बिल ग न तान ही जे अं
 धित म हि चा निः ॥ ३ ॥ ॥ संगति को अंगः ॥ क० दे
 षा देषी फा क डै जाय अ पर चै क टिः ॥ विरलै को ई ग
 लै अत गुर मा न्ही मू गिः ॥ १ ॥ क० संगति है क दे न च
 ड ई रंगः ॥ बिमति पञ्चा यौ क्ता उ सी ज्यो का च ली सु
 यंगः ॥ २ ॥ क० करी यै तौ क रि जा णी यै मारी बां दु मंग
 ली र ली र लो ई थ ई तौ ई नि बा आ रंगः ॥ ३ ॥ क० ब्रुत
 गरी जै ता मरुं मरुं मे व ग न ल होयः ॥ सिर उ पर आ
 रां म है त उ न ह जा सोयः ॥ ४ ॥ क० मा ह न रां क न तो
 ली यै हा उ न का जै ने ह ॥ माया रा ता मां न वी ति न मुं
 कि सा स ने ह ॥ ५ ॥ क० जा कुं प्री ति क रि जे निर
 वा है उ रिः ॥ व नि ता वि वि धि न रा ची यै दे ष न ला
 जे मो रिः ॥ ६ ॥ क० न न पं भी न या जं म न त हा उ डे जा
 यः ॥ जे जे सी संग ति करै सो ते से फ ल प्रायः ॥ ७ ॥
 ॥ ॥ विरह को अंगः ॥ क० रू त पि यारे पि ता को

मोह निलागा जायः॥ लो नमिगई हा थिदे आप
 निगया जु लायः॥ क० उरी कां उपठ कि क
 रिः अंत रिरी सो उ पायः॥ रोवत रोवत मिलिग
 व्या पिता पिता रे जायः॥ क० सोई सोई बलि
 जई मांस नही या देहः॥ जब लग सोई सेव सु
 इ ऊत न के है बहः॥ १॥ क० नैन हं मारि मिलिग
 य छिन छिन लोई तु ऊः॥ नांत मिले न मे सु घी
 त्रि सी वेद नि मु कः॥ ॥ सत गुरु को अंगः॥
 ॥ क० सत गुरु की महि मां अनंतः अनंत की उप
 गाः॥ लोचन अनंत उ घारी याः अनंत दि मां व
 नहारः॥ १॥ क० जा का गुरु है अंधलाः चेला घर
 निरंधः॥ अंधे अंधा ठैली याः दुनु रूप परंतः॥ २॥
 ॥ क० नि सि अंधी यारी कार लोः चौरा सी चंदः॥
 अति आतुर उ दे नई इ छिन ही आवे मंदः॥ ३॥
 ॥ मांस अहारी को अंगः॥ क० पा पी इ जा बे सि करिः
 ल मे मांस मद दोयः॥ तिन देखा मु कति न ही को दिन र
 क फल होयः॥ १॥ क० सकल वर ए एकत्र कैः सकति
 रूजि मिलि मां हिः॥ हरि दास नि को जां तिक रिः के व
 ल जं म पुर जां हिः॥ २॥ क० ल ज्वा लोक की सु मि रे ना
 ही साचः॥ जां नि बु कि कं च न त जै का ठो प के डे
 का च॥ ३॥ क० जिन जिन जां नी यां करता के बल सा

रा। सो प्राणी काहे चले। पूरा जग की लारः॥१॥ क० सब
 जग पूरा बिंधीया सा चहि नांही वां। सो पुग करि
 मारीये। लेय जु सा चानां व॥५॥ क० पुग कुं पुग मिलैः
 पुनां बंधै सनेहः। पुगै कुं सा चामिलैः तब ही तू दै नेह॥६॥
 ॥ नंदा को अंगः॥ ॥ क० पढि बौही न लो। पढि बा
 ते न लो जोगः। रां मज नां सुप्राति करिः न लं न ल नीदो
 लोगः॥१॥ क० पढि बौ पुनिक रि पुस्तक देय वहायः॥
 कावन अक्षर सो अधिक रि ररे म मे चित लायः॥२॥ क०
 पढि बा पुन करि आधि पड्यां ही सारः। श्री उ न उपजी
 प्रीति सुतौ क्युं करि क रे पुकारः॥३॥ क० पंडित सब
 मुये पढि पढि वेद पुरां नः। न गति न जां नी रां म की
 बाजिर हानी सां नः॥४॥ क० पोछां पढि पढि जे मु
 वा पंडित न या न कोयः। एको अक्षर पे म को पंडित
 होयः॥५॥ ॥ विषया विरक्त को अंगः॥ क० नि
 रवेरी नि की मता साई सेती नेह। विषया सुं सारा
 रहे। संत न कामत एहः॥१॥ क० कां म मिला वेरां
 सुकुं। जे कोई जां ने रा विः। कबीर विचारा क्युं किरे
 जाकी मुसदेन बोले साधिः॥२॥ ॥ सुनिरण
 को अंगः॥ क० कहती जात कुं। सुनता है सब कोय
 रां म कहै ल होय गान ही तर न लान होयः॥१॥
 क० कहि कहि किं किं गिया कथि गया ब्रह्म म
 है सः। रां म नां मत त सार है। सब का ऊ उपदेसः॥२॥

॥ क० नगतिनजनहरिनां वहै दुजा दुषअपाः ॥
मनसावाचाकरमणांकबीर सुमिरण सारः ॥ ३ ॥
॥ परचाको अंगः ॥ क० हदुवाडी विदुगवा ॥
कीया सुम्य अमनां नः ॥ मुनिजन महलन पावई ॥
तहां कीया विश्रामः ॥ १ ॥ ॥ विरहको अंगः ॥
॥ क० सबरंगतंतिरबावतन विरहवजवे नितः ॥
औरन कोई सुनि सके के सोंई के चितः ॥ १ ॥ क० ६६
तन जालुम सिकरूं धूवां जाय सरजिः ॥ बाज गुपत
दिंजे नये मुये सिलजि सिलजिः ॥ २ ॥ ॥ निहकरी
पतिव्रतको अंगः ॥ क० श्रीतडीतौ तुजुं मेरे बरु गुण
या लेकतः ॥ जेह सिबालु और सुतौ नील रंग उदंत
॥ १ ॥ क० नैनां नीतरि आवतुं जेह नैनं पाउः ॥
नांई देषु और कुं तौ तुजुं देषन पाउ ॥ २ ॥ क० मे
रा मुज मेक बुनही जे कुठहे तेरा ॥ तेरा तुजुं सुं
पतां कपाल गे मेरा ॥ ३ ॥ क० रेस संहर की काजल
दीया वनायः ॥ नै नौरं मईयार मिरहाइ जा कहं
समायः ॥ ४ ॥ क० सीप समद की रटे पिया सपिया
अः ॥ समदतिन करि करि गिने स्वाति बुंद की आ
अः ॥ ५ ॥ क० सुषकूं जायथाः आगे आय दुषः ॥
जाह सुषय रि आपने हंम जां नै अर दुषः ॥ ६ ॥ क०
निजग तो हंम आंगयाः अब उरनां ही मुजः ॥ नि
॥ निज मेरे की ही ये बाज पिया रे तुजः ॥ ७ ॥ क०

तौ एकही ज्ञानीयां तौ जान्यां सब जान ॥ जे को
 कन जानीयां तौ सबही जान अनजान ॥ ७ ॥
 शिख कौ अंग ॥ क० पाजे सीसुंदरी तिल
 लुखुं मुषकी हां लि ॥ पंडित नखे मुखा व
 मां पीवे छं लि ॥ १॥ क० व्यास कथा कहै
 तरि नेया नां हि ॥ और कुं पर मोधतां गया मु
 रिका मां हि ॥ २॥ क० तीरथ करि करि जग मु
 ऊं डे पां एी काय ॥ सोमं हि दां मज पंत ज का
 य सी द्या जाय ॥ ३॥ क० सी कां वै धर करै पीवे
 ग नीर ॥ मु कति नही हरि नां व विन हं कहे
 प्रक वीर ॥ ४॥ क० मोर तोर की जे व डी ब लि बं
 पो सां सार ॥ कां ह सि कुं डु बो मु त क लि त दा
 नि वारं वार ॥ ५॥ क० जे सी पी छे संचरै ये
 पी प हली हो य ॥ का ज न वि न सै रे न रा बु धि
 प ले री हो य ॥ ६॥ क० हं पि का नां व सुं बु धि र हे
 कि तार ॥ तौ मुष ते मो ती ऊं डे ही रा अनंत ग पार
 ॥ ७॥ क० को ई क रा भै सा व धा न चै त न प ह रै जा
 गि ॥ ब स्त वां स एं सुं वि सै चो न स कै ल
 ॥ ८॥ प ति व्र ते कौ अंग ॥ ८॥
 त ब ल ग नि फ ल से वा ॥ क०

॥ क० नगतिनजनहरिनां वहै दुजा दुषअपाः ।
मनसावाचाकरमणंकबीर सुमिरण सारः ॥ २ ॥

॥ परचाकोअंगः ॥ क० हदुवाडीविहगया
कीया मुष्यअसनां नः । मुनिजंन महलन पावई
तहां कीया विप्रामः ॥ १ ॥ ॥ विरहकोअंगः ॥

॥ क० सबरंगतंतिरबावतन विरहवजावे नितः ।
औरनकोई सुनिशुद्धे कैसाई कैचित्तः ॥ १ ॥ क० इह
तनजालुमसिकरं धूवां जाय सरगिः । बाजगुपत

हिंजे नये मुये मिलजि मिलजिः ॥ २ ॥ ॥ निहकरी
पातिव्रतकोअंगः ॥ क० श्रीतडीतौठुसुः मेरेबहुगुण
यालेकतः । जेह सिबोलु और सुतौ नीलरंग उदंत

॥ १ ॥ क० नैनां नीतरिआवतुं जौडुं नेन कं पाउः ॥
नां डुं देषुं और कुं तौठु कदेषन पाउः ॥ २ ॥ क० मे

राभुऊमैकबुनहीजेकुठहेतेराः । तेरातुऊकुं सुं
पतां कपालगे मेराः ॥ २ ॥ क० रेखसंहरकीकाजल
दीयावनाथः । नै नौरं मईयार मिरहाइ जाकहां

समायः ॥ १ ॥ क० सीपसमदकीरटे पियासपिया
सः । समदतिन करिकरि जिने स्वातिबुंदकीआ
सः ॥ ५ ॥ क० सुषकुं जायथाः आगे आया दुषः ॥

जाह सुषध रिआपने हंमजां ने सर दुषः ॥ ३ ॥ क०
दोजग तौ हंम आंगयाः सब डरना ही मुऊः । नि
स्तिन मेरे चाही ये बाज पियारे तुऊः ॥ १ ॥ कबी

जोतौ एकही जूनीयां तौ जां न्यां सब जां न॥ जेवो
 एकन जां नीयां तौ सबही जां न अजां न॥ ॥ ॥
 चां एिक कौ अंग॥ क० पाजे सी सुंदु मी एो तिल
 तिल सुंदु सुषकी हां एि॥ पंडित नखे सुरा व
 गी पां एी पीवे ठां एि॥ ॥ ॥ क० व्यास कथा कहै
 नीतरि नैया नां हि॥ ओरां कुं पर मोथतां गया सु
 हरिका मां हि॥ ॥ ॥ क० तीरथ करि करि जग सु
 वा ऊं डे पां एी काय॥ मां मं हिं मां मज पंत ज का
 लय सी द्या जाय॥ ॥ ॥ कां सी कां वै धर करै पी वे
 गी ग नीर॥ सुकति नही हरि नां व विन वृ कहे
 रास कबीर॥ ॥ ॥ क० मोरतार की जेव डी बलि बं
 धो सां सार॥ कां ह सि कुंडु बो सुत कलित दा
 ऊ निवारं वार॥ ॥ ॥ क० जे सी पी के संचरे जे
 सी प हली हो य॥ काज न विन सौ रे न रा बु धि
 घले री हो य॥ ॥ ॥ क० हरिका नां व सुं बु धिर है
 ईकतार॥ तौ सुष ते मी ती ऊं डे ही रा अनंत ग पार
 ॥ ॥ क० को ईक राषे सावधान चेत न प हरे जा
 गि बस्त वां स एं सुं वि सौ चोर न स कै लाग ॥ ॥
 ॥ ॥ पति व्रत कौ अंग॥ क० जबें जगति स कामता
 त बलग नि फी ल सेव॥ कहै कबी वैकुं मिलै निकां
 हीर

मी निज देवः ॥ १ ॥ क० सिध सा पावने कीये माधो
कीये नमिः ॥ चले ये हरि मिल एह विवही अर
क्या चित्तः ॥ २ ॥ क० कलि जुग आय के रिकीये व
कृते रमिः ॥ जिन दिल बांधी एक मुं ते सुख सोने
न चिंतः ॥ ३ ॥ क० ठुवो लो करे तो बाहुं ॥ उरि उरि
करे तो जां उः ॥ जुं हरि राखे लुरं ॥ जो वे सुभां कः ॥
॥ ४ ॥ क० मन परतीति न प्रेम रस नाई सत न मै ठंगः ॥
क्या जानूं उर पीव सुके सरह सीरंगः ॥ ५ ॥ क० उ
स सं मरथ कादा अरु क दे न होय अ काजः ॥ पति व
रता नागी किरेः ॥ उर ही पिक्कुं लाजः ॥ ६ ॥ क० धरि
परम सु र पाऊं सुन सुन न ही रासः ॥ मर स जो
जन न गति करि ज्यो पलक न बाउयासः ॥ ७ ॥
॥ जीवत मृत ग को अंगः ॥ क० बुरा बुरा सब को कहे
बुरा नदी से कोयः ॥ जो दिल जो जु आप ली तो मुज ते बु
रान कोयः ॥ ८ ॥ क० चेरा संत का र सन का पर दामि
क बीरा अ सा करे ला जु पाव नित लिधासः ॥ ९ ॥
क० रोठा होय र ऊवा र का न जि पा षं उ अ नि मांनः ॥
हरि जन असा चाही ये ता हि मिले न गवानः ॥ १० ॥
क० रोठा नया तो क्या नया पंथी कूं उष देहः ॥
रि जन असा चाही ये जि सी जमी की घहः ॥ ११ ॥
क० सेह न ई तो क्या नया उडि उडि लागे अंगः ॥

हरिजनसैसाचाहये पांनीकैसैदंगः॥५॥ क. पा
नीनयातोंका नया ताता सीला होयः॥ हरिजन
सैसाचाहये जैसा हरिही होयः॥६॥ ॥७॥

॥गीतः॥ वीकांकांधला वीरं व ए वीरं मु ए ज्यो ज तां सा
चीः॥ वीका वीरं ए वीरं ने ता विषे न क रौ का ई का चीः॥
न लां न लां र ज र त नु जालां ल छि ए कु ल म तां ला वौः॥ ज
म ले वा त रा म ज्यो ज डी आ डी म गां आ वौः॥ ग ड ई ता नि
क ल ज्यो ग टा सा हि ब सा च सु हा वैः॥ र ह ज्यो सां म ध र मी रा
गो णं गु र्प ए नां व न जा वैः॥ रा जा मुं र त र म तां रा यो लो ह ल डे
ज स ती ज्योः॥ द ल प ति वा र म तां दे षा लो क र ए वा र सी वी
ज्योः॥ ई स र क र्क म क वी स्वर आ षेः॥ दुरो काल विला सीः॥
म र कौ म तां मे ल्ही यों थां एं ई ला धां रै ध र आ सीः॥ मि ली
या ति वे मा ज नै मि ल सी आ ए मि ली यां ज म सी सीः॥ सु
लो हो सां म ध र मी रा गे डां जु गं वा त र हि जा सीः॥१॥

॥गीतः॥ वां ए र सी प टि वा कि मुं व सी जै आ र न की जै कि
सां न ने कः॥ दो य अ क रं मां हि दे षी जै वे दां च्छा रां रौ अ
र्य वि वे कः॥ प टि गु ए कि मुं लि मां वां यो थी आ ग म
नि ग म आ र थ उ धे डः॥ र रे म भै मै आ यो र ह सी न व व्या
क र णं त लो नि वे डः॥५॥ ज ट म ग ला जि के रां म न
जां लो जां लो रां म ति के स्र ब जां एः॥ ए कै अ क र जो
पा र उ त र लै यै तौ प टि यै कि सा अ ग रे ड रां एः॥ कां
नी यो क ह रं म मु ष क ह तां अ व र वि दे सु वी स री यः॥
उ मै अ क र लि ष अं त र ग ति अ हि नि मि ज पे सौ

क व री था॥२॥

हमारे सौं ॥ ११ ॥ दयकासा
॥ १॥ सुख निवाहण कसरि पग सरि पिये पिये
॥ ॥ गङ्गा आ गंगे र है कोई दिदमा से र ॥ ॥ गण
पति वाहण कसरि पग सरि पको असवार
कोई मोगे बाकला और गेल की धर ॥ २ ॥ बेगप

॥ नउली राइहा ॥ पोही अमावस मूल सुखाया ॥ १ ॥
पापः निहचल बाधी मोल डी जल हरै रे ॥ १ ॥
माही छवि नग जीयो मुह गीथ ईके पासः ॥ माही सुनि
मली जल हर के ही ॥ २ ॥ माह विसीयो जे ॥ सीसा
व ए पुरवावा लिः ॥ उंक कहै है नउली ममोज पंधो का
लिः ॥ ३ ॥ गाजन वीजन वदली हरै वत वा ॥ कोई स
उव कुलान रासी मगवे सीपावः ॥ ४ ॥ जस्व निगलो न
रली गलौ गलौ जे गमल ॥ माव एणं सुकु जे गलौ मदी
वहे जल वर ॥ ५ ॥ दली यावा सीरहे दीही एक कदो
यः ॥ उंक कहै है नउली जल हर ॥ आयो जेयः ॥ ६ ॥ मके उ
मुह कए कए निज हर उये मतः ॥ तौ समजं ली नउली म
ही यर घणं वर मतः ॥ ७ ॥ वाजे वाव सवदली दीह एक क
दोयः ॥ उंक कहै है नउली जल हर ॥ आयो जेयः ॥ ८ ॥ तीतर पं
मो नउली पछि मदि मिचलैतः ॥ दिवस चवथे पंचमे
मही यर घणं वर मतः ॥ ९ ॥

॥॥ राम कहें दुन याग पावै
 पांड कहैं सुषमीम ॥ १ ॥ कानर की संगत सुवारां
 कहैं ॥ ३ ॥ अचुप्रतवन ही पावै ॥ ४ ॥ जब कहैं जोती सन
 जै ॥ ६ ॥ ईकवार लख गवन मे के लकीन ॥ १ ॥

॥ श्री लक्ष्मी नारायण जी सदा कारा ह्वै जै
 नगत मारै रां मह मारै ॥ १ ॥ जो जन कहें जो श्री की स
 मे लकीने ॥ ७ ॥

॥ चोवी सरि ४ ॥ रु द न त्रै य र ॥	॥ प्रदू क मी ३ ॥
५ त ह्य ५ न म न्न	१ ज न्म १ म र ए
१ चुर ज १ मी म	१ रु ष १ को ष
१ म सु ज १ इ ज ग र	१ दु धा १ पि पा क
१ क पा ग १ पि ग ल	
१ क ल १ बाल क	
१ कु मारी १ इ षु क र	
१ अ र प १ म क री उ ल	
१ रु म्ती १ म धु	

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ ब्रह्मसूत्रोक्तं ॥ ॥ वेदो
दानं दसूपाय सर्वधीवृत्तिसाक्षणे ॥ नमो वेदे नमो वेदाय नमः
सूत्रेण तन्मूर्त्यये ॥ ॥ ब्रह्मसूत्रप्रवृत्ताभिप्रायस्तान्ते
दानं ॥ इषणं ज्ञानहीनानां नृषां ज्ञानतत्त्वसुभा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
द्वित्रियवैश्यशूद्राश्चत्वारो व एति स्तेषां ब्राह्मणस्य ब्रह्मणः
एतानां ब्राह्मणेण्युदरितिवेदवचनाभिस्तुतिता ॥ ॥ ॥ ॥
निस्रत्रतत्रचोद्यमस्ति ॥ को ब्राह्मणेनाम ॥ किं जीवतीति
जातिः ॥ किं वर्णः ॥ किं पांडित्यं ॥ किं धर्मः ॥ किं भागिनः ॥ किं
कर्मतिः ॥ अष्टौ विकल्पाः ॥ अथ मंजीवो ब्राह्मणं ॥ इति चेत्तद्वि
सर्वस्यापि जनस्य जीवस्यैकस्य लान् समो जीवो ब्राह्मण
न न वक्तव्येव ॥ अन्यच्च देहो ब्राह्मण इति चेत्तद्विधिपांडित्यं
व्यं तानां मनुष्याणां देहस्य पंचभूतात्मकस्य लान्
जरा मरणं दिधर्मदर्शनात् सा देहो ब्राह्मणं न वक्तव्यं
अन्यच्च देहो ब्राह्मण इति चेत्तद्विधिपांडित्यं
सुत्राणां ब्रह्महत्यादिदोषसंज्ञात् सा ब्राह्मणं न वक्तव्यं
सैवा तर्हि वर्णो ब्राह्मण इति चेत्तद्विधिपांडित्यं
त्रियोक्तवर्णः वैश्यः पीतवर्णः शूद्रः श्वेतवर्णः ॥
तसर्वेषां ब्राह्मणदर्शनात् सा ब्राह्मणं न वक्तव्यं
त्येव ॥ अन्यच्च कर्म ब्राह्मण इति चेत्तद्विधिपांडित्यं
र्षिर्जीवति ॥ द्वित्रियशूद्राश्च वैश्यस्य दृष्टमिति नि
यमानावात् ॥ तस्मै स्नात्कर्म ब्राह्मणं न वक्तव्यं ॥ अथ
अ ॥ जातिर्ब्राह्मण इति चेत्तद्विधिपांडित्यं
हर्षयो वहवः संतीति ॥ कृषिपशुना नृपैकैश्चिद्वि

शीस्त ए॥ गोतमः शशिष्ठे॥ वाल्मीकीवस्त्रिक्यां॥ चं
 उलीगन्तेत्यन्मो महा मुनिर्मातंगी पुत्रोः मांडव्यो मांडुः
 दुरोत्पन्नः॥ व्यासः कैवर्त्तक्यां॥ वशिष्ठो वेश्यायां॥ वि
 श्वामित्रः॥ द्रत्रियायां॥ अगस्त्यः कलशा जात इति श्रूय
 ते॥ तेषां जात्या विनापि सम्यक् कृतानां विशेषाद्वा ह्यप्य
 मुत्तमं श्रूयते॥ तस्माज्जातिर्ब्राह्मणो न न वत्सेव॥ अन्य
 च॥ पांडित्यं ब्राह्मण इति चेत्तर्हि हि द्वित्रियवैश्यशूद्राद
 योऽपि पदार्थवाक्यप्रमाणे वेत्ता नैव हवः संति॥ तस्मा
 द्वाडित्यं ब्राह्मणो न न वत्सेव॥ अन्यच्च धर्मो ब्राह्मण इ
 ति चेत्तर्हि हि द्वित्रियवैश्यशूद्रादय इष्टा धर्मादिधर्मका
 रिणो व हवः संति॥ तस्मा धर्मो ब्राह्मणो न न वत्सेव॥ अन्य
 च॥ धार्मिको ब्राह्मण इति चेत्तर्हि हि द्वित्रियवैश्यशूद्राद
 योऽपि॥ कन्यादानं गजदानं हिरण्यदानं महर्षीदानं॥ दा
 तारो व हवः संति॥ तस्मा धार्मिको ब्राह्मणो न न वत्सेव किं
 तु करतलमलकमिव पश्यत्यरोक्षेणैव हेतुर्था॥ तथा का
 मरागद्वेषादिरहितः॥ शमदमादिसंतोषमानमत्सर्यह
 र्मासं मोहादिदृष्टार्थनिवृत्तः स एव ब्राह्मण उच्यते॥ तथा
 हि॥ जन्मना जायते शूद्रो ब्रूतवंधाद्विजोत्तम॥ वेदान्मा
 सी न वेद्विप्रो॥ ब्रह्मज्ञानाति ब्राह्मणः॥१॥ इति श्रुत
 एव॥ ब्रह्मदेव ब्राह्मणो नान्य इति निश्चय इति कर्मयोगी
 च विद्वांसः॥ अंतरालं सुरालयः॥ सत्यवैकुण्ठकैलासेंदी
 पक्षिं नैरवं तथा॥१॥ विश्वरूपं च चैतन्यं॥ एतन्मायास्त
 रूपकं॥ माया परं न वेद्ब्रह्म॥ तत्परं ब्रह्म केवलं॥२॥ यो

गीदेहा निमानेव जोगीकर्मणितत्परः॥ ज्ञानी मोहात्ति
 मान्येवा तत्त्वज्ञेयानिमानिता॥३॥ किंकरो मिक्क गच्छा
 मि किं गृह्णामिति जामिकं॥ आत्मनाश्रितं सर्वं महाक
 लांबुना यथा॥४॥ केचिद्वदन्ति सावयव एव वस्तु इ
 नं मोहाः॥ केचिद्वदन्ति निरवयव गुणातीतं वस्तु ज्ञानं मो
 हाः॥ केचिद्वदन्ति साकारस्य विनाशो निराकारस्य सूक्ष्म
 तो नय पद्विद्वद्वदन्ति वस्तु ज्ञानं मोहाः॥ केचिदेकदेशि
 क सिद्धांत कथित नक्ति विधानं मोहाः॥ केचिदेकदेशि
 क व्यापक स्वाचार नाना चरण विवर्जितो मोहाः॥ केचि
 न्नोवाक्य विकल्प विच्छेद लक्षणो मोहाः॥ केचिदमनः
 पवन ध्येय ध्यान धारणो मोहाः॥ केचिद्व्याख्या ज्ञानं नय
 ज्ञानात्तवो मोहाः॥ केचिन्महावाक्य विचारणो मोहाः॥
 केचिन्मद्यं मांसास्वादु सुख रत कीडा बिभ्रमानं दमयो
 मोहाः॥ केचिदस्ति नास्तीत्युच्यते ज्ञान विच्छेदो मोहाः॥
 केचिसोदं नावसमरसत्वं मोहाः॥ केचिदात्मानं दबोध
 मयो मोहाः॥ केचिच्छंटा स्थापन न स्मो हूल ललनांगी
 कारा देव मोहाः॥ केचित्तानातीर्थयात्रा जपे हवन दान व्रत
 रव मोहाः॥ केचित्प्रावरजंगम जात्य हिंसा कैशो त्याग
 नाश्यासा देव मोहाः॥ एतेषां संकल्प विकल्पा नुसार
 दर निनेहा वद्वसंति । तर्हि न नवति मोहाः॥ पदं सर्वेषां
 मिति किं उच्यते वाक्य विवरणे नोक्ते समष्टि व्यष्टि दूषे
 यं प्रपंचात् तच्छब्द सकल वाच्यं परित्यज्य शुद्ध लक्ष्मणे
 गीतस्य जीव परमेश्वर योरेकं स एव मोहाः॥ सकथं य
 था महदाकाशे धटमिवोपाधि विद्यते॥ तस्य प्रधं सो महदा

काशंसिद्धं तथा जीव परमेश्वरयोरेक्यं स एव मोक्षः ॥
 सिद्धं । तथा हि वेदांतावक्तृक कर्कशमतिग्रस्ताः ॥
 परमायया नृणां कर्मकुलाहतधियोद्धेतेति । वैशेषि
 काः अन्येनेदं तां विवादकलहास्तेतत्त्वतो बंचिताः ॥
 स्मृत्या त्पिद्धमतं स्वनासकमयधीरः परं संश्रयेत् ॥
 ॥ १ ॥ नानास्वीयवित्तं उवाच पटवो मायाधकारावृताः ॥
 सार्वभौमैश्च वैदिका विधिपराः संन्यासिनः स्मार्त्त-
 काः । सौरा नीलपदाः प्रपञ्चनिरता बोद्धा जिनाः श्राव-
 काः । एते कष्टरताः क्रियापथगतास्तेतत्त्वतो बंचिताः ॥
 ॥ २ ॥ तस्मात्पिद्धमतं स्वनासकमयधीरं परं संश्रये-
 त् । शैवाः पाशुपता महाब्रतधराः कालीमुखजगमा-
 गां शैवाः सकलेष्टदंगणपतिध्यायंति चित्ते निशंशा-
 स्तां कौलकुलात्मकार्चनरताः कापालिकाः सान्जवा ॥
 एते न्यहचमंत्रतंत्रनिरतास्तेतत्त्वतो बंचिताः ॥ ३ ॥ आचा-
 र्यविजुदीक्षिता हवरतानगकृता तपसा । नानातीर्थ-
 निषेवका जपपरा मौनस्थितानित्यशः । नित्यं चानश-
 नादिनात्मदमने दत्तावधानाः परे ॥ एते वैखल्यदुःख-
 नारनिरतास्तेतत्त्वतो बंचिताः ॥ ४ ॥ आचार्यकाश्चतुराः
 स्वतर्कनिष्ठान् देहात्मवादेवताः । सर्वेषां मतिरस्ति दुः-
 सह पराद्धेते परं संश्रिताः । कर्तारं प्रजं जितिये च यवनाः
 प्रापेरता निर्दया ॥ स्तेवामादिककल्पमेव विफलनेका-
 स्ति मोक्षः परं ॥ ५ ॥ इदानीं महावाक्यार्थमुख्येन बोधक-
 म्प्यते ॥ यस्य नियमादिसाधनसंपन्नामधिकारणम-
 नुग्रहाया अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यमग्निग्रहं ॥ एते

पंचयमाः शौचसंघः स्वाध्यायस्तपः॥१॥ इश्वरप्रणिधा-
 नानि नियमाः॥ तत्र महावाक्यं तत्पदं त्वंपदं चेति पदद्वयं
 मस्ति॥ तत्पदं त्वंपदं स्पष्टं च वाच्यं मर्थं लक्ष्मि मर्थं च क-
 थयामि तत्पदं स्पष्टं च वाच्यार्थः॥ मायोपाधिः सकलजगदु-
 त्यगि स्थिति लयकारणं रूपत्वात्सर्वेश्वरत्वात्सर्वशक्ति-
 मान्॥ सर्वकामदश्च परोक्षेण॥ सर्वस्वरत्वात्सर्वशक्ति-
 मान्ननवति॥ सर्वकामप्रदानवति॥ परोक्षेण सदवती
 मानोपिननवति॥ किं तु केवलं सत्यज्ञानानां दाहिती-
 यस्वरूपं चेत्तन्मिति तत्पदं लक्ष्यार्थः॥ अथा त्वंपद-
 स्पष्टं वाच्यार्थः कथ्यते॥ श्रोत्रं त्वक्चक्षुर्हृदि काष्ठाणं पंच-
 बुद्धिर्द्विष सहितः॥ ग्राणोपानयानोदानसमाननाग-
 हर्मकृकरदेवदत्तधनं जय॥ दश वायु सहितः॥ मनो बु-
 ध्महंकारचित्तं संज्ञां तत्करणं चतुष्टयं सहितः॥ राक्षस्य-
 रीरूपरसगंधवचनादानगमनविसर्गानंदसंकल्पनि-
 श्रया निमानानुसंधानात्मकं श्रुतं देशविषयं सहितः॥
 अन्तमयग्राणमयमनोमयविज्ञानमय आनंदमयाः॥
 एतैः पंचकोशैः सहितः॥ आधिभौतिकः॥ आधिदैवकः॥
 आध्यात्मादिकं तापत्रयं सहितः॥ सत्वरजस्तमोगुणत्रयं
 सहितः॥ सत्वरजस्तमोगुणत्रयं सहितः॥ पुत्रैषणदारे-
 षणधनैषणत्रयं सहितः॥ नूतनविषमूर्तमानकाल-
 त्रयं सहितः॥ असनापिपासाशोकमोहजरा मरणषड्-
 मि सहितः॥ नूतनविषमूर्तमानकालत्रयं सहितः॥ जाय-
 ते अस्ति ब्रूते विपणं मते अपह्नीयते॥ विनश्यति॥ एते

प्रज्ञाविकारैः सहितः इति त्वं पदस्य वाच्यार्थः ॥ अथ त्वं
 पदस्य लक्ष्यार्थः कथ्यते ॥ सर्वज्ञा एह दयः स्थितम
 द्वियं चैतन्यं पदलक्ष्यार्थः ॥ एतत्प्रत्यक्षैतन्यमेव सत्यं
 सत्यज्ञानानंतानंदद्वितीयं चैतन्यं ॥ अतः तदेवाहः ॥
 सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्मेति पृच्छति सत्यमित्येकं ॥ ब्रह्म
 नमित्येकं ॥ ब्रह्म आनंदमित्येकं ब्रह्म ॥ किमेताव
 ति ब्रह्मा एतत्प्रमेकमत्रेति स्वप्रकाराः सङ्कुराहः ॥
 सत्यशब्देन विज्ञानशब्देन ज्ञप्तिस्वरूपमुच्यते ॥ अ
 नंतशब्देन अखंडमुच्यते ॥ ब्रह्मशब्देन परिपूर्णमुच्यते ॥
 एवमेवाद्वितीयं चैतन्यं ब्रह्मतत्त्वमसि ब्रह्माहमस्मि ॥
 अहं ब्रह्मास्मि ॥ इति ज्ञात्वा प्रबुद्धः स नृकृतकत्वो
 न वेत् ॥ तथैव सति ब्रह्माप्येति विमुक्तश्च विमुच्यते ॥
 इत्यादि श्रुतिजिरेवं स निश्चयात्प्रबुद्धः स जीवन्मु
 क्तः ॥ प्रारब्धकर्मजनितफलावधिलोकानामनुय
 हं ऊर्ध्वं नेवावतिष्ठते ॥ निर्मुच्यापित्वं च स पथिथा
 सर्वस्वरूपवत् ॥ विधस्ताखिलमोहोपिमोहका
 तथात्मवित् ॥ १ ॥ इति श्रीबजरसूत्रोपनिषत्सं
 हिते ॥ श्रीरक्तः ॥ ॥ अन्नं न वत् ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥

॥ रामोऽं नीव सा बली नी बिगाम

१ राजा श्रीधुंधमार	२१ रायगंजकु	४२ राजा श्रीकु
२ राजा श्रीकृतेजी	२२ रायवण्ड	४३ राजा श्रीकु
३ राजा हरबल्लेजी	२३ रायसेगरां	४४ राजा श्रीकु
४ राजा श्रीमंथजजी	२४ रायसीरोजी	४५ राजा श्रीकु
५ राजा वल्लराज	२५ रायकामधान	४६ राजा श्रीकु
६ राजा मुदेवण	२६ रायघुडीको	४७ राजा श्रीकु
७ राजा जेमल	२७ रायराईपाल	४८ राजा श्रीकु
८ राजा महपाल	२८ रायब्रान्डडे	४९ राजा श्रीकु
९ राजा विजेवै	२९ रायजालराव	५० राजा श्रीकु
१० राजा जेवै	३० रावकाडोजी	
११ राजा जमवै	३१ रावनीडोजी	
१२ राजा वेदपाल	३२ रावमल्लभोजी	
१३ राजा कामपाल	३३ राववीरभर्ज	
१४ राजा महजपाल	३४ रावयौडोजी	
१५ राजा नीगराज	३५ रावरिणमल	
१६ राजा मुलरां	३६ रावजोधोजी	
१७ राजा मुवै	३७ राववीडोजी	
१८ रावमोभट	३८ रावलुणायजी	
१९ रावहलौ	३९ रावजैगमीजी	
२० राववालपसी	४० रावललाणमल	
	४१ राजा	
	संघ	

॥ क । वतः ॥ जब ज । व सो वे त व स मु जे सु प न स त उो ही मू
ठ लगे जागे नीद सोय कैः । जा गि कहै कि इ हमे नौ त न इ ह
मेरी सौ ज ता रुजू व मान त मरण धिति जोय कैः । जानै निज
मरण मरण त व सू जे सू सू जे ओर अवतार रूप और होय कै
उ वा रु अवतार की दशा मे कि रि इ है पे च या ही नां ति कू मे
जग देखो हमे योय कैः ॥ १ ॥ देहि उष पावै कि धु इं डी उष पावे
कि धुं जां ए उष पावै जब ल है न अ हार कोः । मनु उष पावै कि
धु बु धि उष पावै कि धु चित उष पावै कि धु उष अ हं का
र कोः । गु ए उष पावै कि धु सू त्र उष पावै के प्र कृ ति उष पावै
कि धु पु रु ष अ धार कोः । सुंदर कहत क तु जां नी न पर त
ता ते को न उष पावै गु रु क हो या विचार को ॥ २ ॥ देह को तो
उष नां ही देह पंच भू त न की ॥ इं डी को तो उष नां हि उष नां ही
जान कोः । मन को तो उष नां हि बु धि रु कूं उष नां हि चित
रु कूं उष नां हि नां ही अ नि मां न कोः । गु ए रु कूं उष नां हि
सू त्र रु कूं प्र कृ ति रु कूं उष नां हि नां ही उष मां न कूं । सुं
द विचार जै सै सिद्ध ओं कहत गु रु उष एक देखियत वी
च के अ ग्ग न कूं ॥ ३ ॥ चा कर ल करी कूं जाय चेरी पी स
ले मेषाय आप षाय गेई जोय जौ उरी च बात है । पर की क
बाय सु तो धरी है र गाय उ वा तो उगी है गि धाय को ऊ ठि
गि ही न जात है । एस आ रि ना ई नां हि जा ति मे व ग ई नां
हि कहत मनोर राय ओ तो व जौ ही ऊ जात है । र ज बट की नी
तिया मे एक क न देखी यत ऐ सी गु क ना वि नां गां फ डी

॥ ईश्वरसद्वर्मां एं गेरी विगत

सं० २ अजमेरपुरवारअजमेरपालगठकनाको

सं० १० रावलपूरकोऊको

सं० ११ देशवरदेकोटरीनीवदिनाई

सं० १२ नटनेरदेकोटरीनीवदिनाई

सं० १३ श्रीहीलकालोपटणवांरनाजसीवैजैव

सायो

सं० १४ रावसीहोजीकनवजमुआयालाअैवालार

नुमासीयोकातीछदिरमुकरवारदेदिन

सं० १५ श्रीगेउगठमिगरंगेमेरुकरायो

सं० १६ राजाजोजउजीएनगनीऊकोअरसेरउ

राजातोऊपुवारनोबेरोवीरनाराईएडुन

वालोऊकरायो

सं० १७ नागोरकेवाभदाइवैकरायो

सं० १८ रावनाहडभंडोवरवमाई

सं० १९ नागोरदेकोटरीनीवदिनाई

सं० २० श्रीपारसनाधजीरोदिहुरौफलोपीकरायो

सं० २१ विमलवंसीमसगपालगेजपालकरायो

सं० २२ मा.मसगपालगेजपालकाइहुरौकरायो

सं० २३ वसगपालगेजपालमाहंआबुमैकैतंरंनो

सं० २४ रावलजेमलजादीजेमलमेरवमायो

सं० २५ जगडपोसाहकनो

सि १३१२ काण्डे देमोगे जाले रंग ठकराये
सि १३३१ राववीरमहे जीमहे वोवसाये

सि १३३० आबैरसहर कठवाहे यसाये
सि १४२२ देवडे सहस्रमल सीरोही वसाई

सि १४११ रावमवेडे देवी श्रीमावंडा जीरो देहरो कसाये
सि १४२६ नाणा पुनरे देहरे सीपापनाइ राई

सि १५१४ राव जोधे जी जोधे डुव वसाये
सि १५४५ राव वीकें जी वीकने मयसाये वैसाय सुदि
सं नीसर पारो हणी नह नमै

सि १५१२ साहजगड मंडा वसाई कवा
सि १६१६ आगरो सहस्र वसीयो मान साहस्र मुखर
वसाये

सि १६६२ किमन मीध उदे सीधोत किमन गठ वसाये
सि १६३४ श्रीगोडगठ पालदीयो

सि १६४५ श्रीवीकाने रो नवो कोट करायो
सि १६४५ सांगानेर कठवाइ सांगै मुवै पढै सांगै रो

सि सांगोडी सांगै रो नावै वसायो
सि १७४७ सांवरा सुदि १२ अनो पगाठ महाना जाओ

अनो पमि चकी डरायो

॥ श्रीवत्स २ वैशाख सुदि ११ सुकरवार उत्तराफालगुनी
मेहुं वर २२ गणपति राजदिलीमांडी को तेरी पीढी दि
लीहुं वरांरी ऊई तेरी बिगत छे

- १ रांणो राजवत्स १८ मास ६ दिन १८ राजकीयो
- २ रांणो वाज्जवत्स २१ मास ८ दिन २८ राजकीयो
- ३ रांणो राजवत्स २२ मास ८ दिन १८ राजकीयो
- ४ रांणो माकुवत्स २० मास ७ दिन ८ राजकीयो
- ५ रांणो बालवत्स २५ मास ८ दिन ८ राजकीयो
- ६ रांणो जीहवावत्स २६ मास ७ दिन ११ राजकीयो
- ७ रांणो धातुवत्स २१ मास ८ दिन १८ राजकीयो
- ८ रांणो विम्ववत्स २२ मास १ दिन ८ राजकीयो
- ९ रांणो विहंगपालवत्स २५ मास ८ दिन १५ राजकीयो
- १० रांणो तिलणपालवत्स २० मास ८ दिन १८ राजकीयो
- ११ रांणो गोपालवत्स २८ मास ७ दिन १५ राजकीयो
- १२ रांणो मल्लपालवत्स २५ मास ८ दिन १८ राजकीयो
- १३ रांणो जसपालवत्स २६ मास ८ दिन ८ राजकीयो
- १४ रांणो कवरपालवत्स २५ मास ८ दिन १० राजकीयो
- १५ रांणो अकंगपालवत्स २८ मास ८ दिन १८ राजकीयो
- १६ रांणो गेजपालवत्स २८ मास १ दिन ८ राजकीयो
- १७ रांणो मदनपालवत्स २५ मास ८ दिन ११ राजकीयो
- १८ रांणो उकनपालवत्स २१ मास ८ दिन १५ राजकीयो
- १९ रांणो अथीराजवत्स २१ मास ८ दिन १८ राजकीयो

१८ उगाणीलपीठीतुं वरां राजकीयो पळे तुं वरां सुराज्य
लटीयो मी १२०८ येत सुदिन रविवार पळे मऊं काणं राजली
वो सुयऊवां णं रै राजरी विगगलिषी जें वे मी १२०८ पळे

१ राजावीसलदेवरस ७ मास १ दिन १४ राजकीयो

२ राजाक्रमरगंगे वरस १ मास रेदि १४ राजकीयो

३ राजापीयलवरस १ मास रेदि १४ राजकीयो

४ राजासोमेमवरस ६ मास ४ दिन २ राजकीयो

५ राजाबाहववरस ४ मास ८ दिन ८ राजकीयो

६ राजानागदेववरस २ मास १ दिन ५ राजकीयो

७ राजाप्रचीराजवरस २ मास २ दि १४ राजकीयो

८ पीठीसातमऊं वां णं रीऊं मी १२४८ नेते सुदि १२४

अरवारमऊं वां णं केने राज सुरतां एसाह वदी मुगल

लीयो सुमुगलां रीपीठीरी विगगलिष्यते

१ सुरतां नसाह वदी वरस १४ मास दि ११ राजकीयो

२ सुरतां एसाह वदी गोरीयो वरस रेमा २ दि १४ वीयो

३ सु. पुग वदी नवरस १२ मास ६ दिन २ राजकीयो

४ सु. पीरोसाह वरस रेमा २ दि ११ राजकीयो

५ सु. ईनां मगवां नवरस १ मास १ दिन १० राजकीयो

६ सु. गालावदी नवरस ६ मास ६ दि ११ राजकीयो

७ सु. नासरवरस ६ दिन २ वरस ६ मास १ दि १५ वीयो

८ सु. गपामदी नवरस २१ मास १ दि १५ राजकीयो

९ सु. ममदी नवरस २१ मास १ दि १ राजकीयो

१० सुमलालदीनवरसुदिमासदुदिनदुकी

११ सुउप्रीणदीनवरसुदिमासदिरराजकीयो

१२ सुमलालदीनवरसुदिमासदिरराजकीयो

१३ सुनौतुपवरसुदिमासदिरराजकीयो

१४ सुकुगवदीनगौरीवरसुदिमासदिरराजकीयो

१५ सुगुपानदीनवरसुदिमासदिरराजकीयो

१६ सुमहमसाहवरसुदिमासदिरराजकीयो

१७ सुपेरोसाहवरसुदिमासदिरराजकीयो

१८ सुगुलकसाहवरसुदिमासदिरराजकीयो

१९ सुसुवदसाहवरसुदिमासदिरराजकीयो

२० सुदोलगषानवरसुदिमासदिरराजकीयो

२१ सुमालषानवरसुदिमासदिरराजकीयो

२२ सुबिदरषानवरसुदिमासदिरराजकीयो

२३ सुममारषानवरसुदिमासदिरराजकीयो

२४ सुमहमसाहवरसुदिमासदिरराजकीयो

२५ सुमलालदीनवरसुदिमासदिरराजकीयो

२६ सुमलालदीनवरसुदिमासदिरराजकीयो

२७ सुमलालदीनवरसुदिमासदिरराजकीयो

२८ सुमलालदीनवरसुदिमासदिरराजकीयो

२८ सु. मिर्च दस साहवर स हत्मा प दिन १४ राज कीयो
 २९ सु. ज्ञां ह्म साहवर स १० मा ४ दिन २७ राज कीयो
 ३० सु. गलति मर लींग स द्र गोवर स मा दि
 ३१ पात साव स र साहवर स ४ मि डु दि २७ राज कीयो
 ३२ पात साह ह्मां उ साहवर स मा दिन

३३ ह्मा क्कटा पात साह र साह लडा इ क्र र ला यो
 सीम १५८ पु जे ठ सु दि २२ ह्मां मां जे प ठा पात साही ला

१ पठां ए के व साहवर स पि मा १ दिन ५ राज कीयो
 २ पठां ए स ले म साहवर स रि मा ५ दि १ राज कीयो
 ३ पठां ए पे रो साहवर स मि मा ६ दि १ राज कीयो
 ४ पठां ए म ह्म र साहवर स मि मा ५ दि १ राज कीयो
 ५ पठां ए म ले दी यो दिन ५ पर हो प ठे पात साह ग म

६ वर ज लाल दी म क्क गो व डो पात साह क्क वो मु प ठे
 वर स ५१ मा ३७ दि ११ राज कीयो

७ पात साह ज्ञां ह्मी र वर स रि मा दि की यो

८ पात साह ज्ञां ह्मी र वर स रि मा ५ दि १ प ठे जी
 व ठे साह ज्ञां ह्मा साह सा ४ डु वारा ह्म जो साह नें
 रंग साह मु रा ह्म क्क मा गा ह्म डु वारा साह मु ना
 व क्क म नु नोर ग साह मानी या मर सु जो साह र ब दि
 सी ला जो वेटां सु धां क्क धी व वर न्नी र ल ज ३४ नें
 रंग साह श्री वी ल डा ३१ पु जे ए रे सो वे मा हा राजा श्री
 न क्क व ग म थ जी मो ३६ ३० थो का गो डु जी ल डा ३ जो थ डु
 गी जी ल डा ३ म ज मे र क्क ३ जो थो ल डा ३ वर स रि मा ३६ राजा
 का नी नो र साह ली वर स पि १ मा

